CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

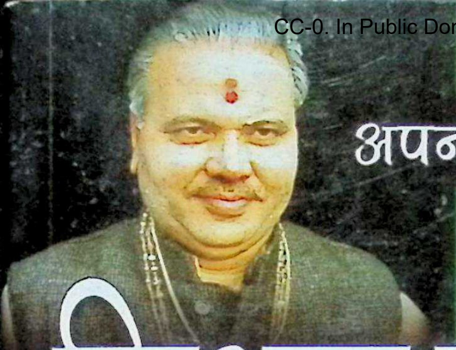

अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़ें

मिथुन लग्नफल
सम्पूर्ण परिचय

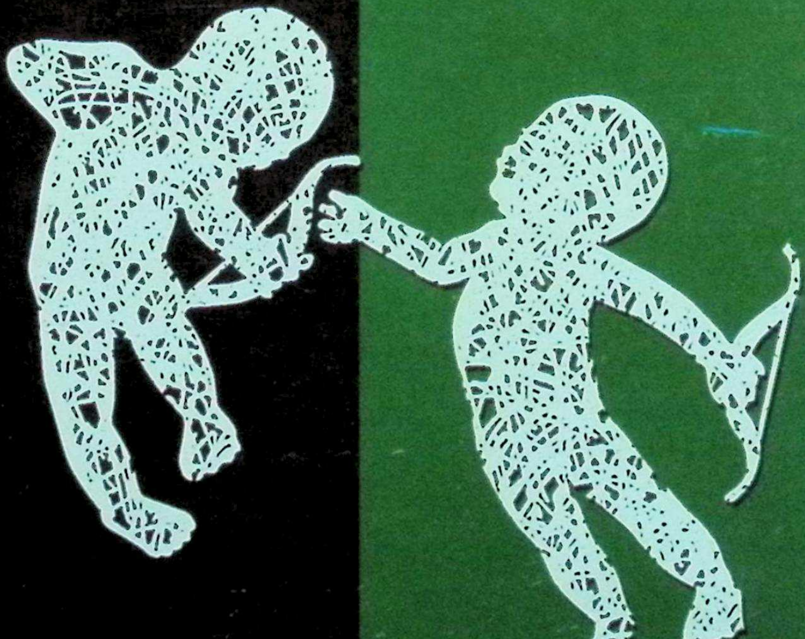

डॉ. भोजराज द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'बीज' कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डायमंड पाकेट बुक्स में

ज्योतिष, तंत्र मंत्र यंत्र, वास्तु, फेंग-शुई की अनुपम पुस्तकें

डॉ. भोजराज द्विवेदी

रत्नों का रहस्यमय संसार (रंगीन) 150.00
फेंग सुई : चीनी वास्तुशास्त्र 150.00
पिरामिड एवं मन्दिर वास्तु 150.00
हिन्दू मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार 60.00
वास्तु जिज्ञासाएं एवं समाधान 100.00
अंकों का अद्‌भुत संसार 100.00
रेखाओं का रहस्यमय संसार (हस्त रेखाओं पर विश्व की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पृष्ठ 500) 150.00
भूकम्प के ज्योतिषीय विश्लेषण पर सारगर्भित अध्ययन 40.00
अनुभूत यंत्र मंत्र तंत्र और टोटके 120.00
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र 100.00
रेमेडियल वास्तु (बिना तोड़-फोड़ के वास्तु) 150.00
कमर्शियल वास्तु 120.00
पर्यावरण वास्तु 120.00
मंत्र शक्ति और साधना 50.00
तंत्र शक्ति और साधना 60.00
यंत्र शक्ति और साधना 50.00
हिप्नोटिज्म 50.00
कालसर्प योग शांति और घट विवाह 100.00
ज्योतिष और धनयोग 40.00
ज्योतिष और राजयोग 40.00
ज्योतिष और विवाह योग 40.00
ज्योतिष और संतान योग 40.00
ज्योतिष में भवन, वाहन और कीर्ति योग 50.00
ज्योतिष और आयुष्य रोग 40.00
ज्योतिष और रोग विचार 40.00
यज्ञ कुण्ड मण्डप सिद्धि 100.00
महालक्ष्मी पूजन व दीपोत्सव 30.00
पांव तले भविष्य 100.00
नाम बदलिये भाग्य बदलिये 100.00
अंत्येष्टि कर्म पद्धति 60.00
षटपंचाशिका (प्रश्न विज्ञान) 100.00
सस्वर रुद्राभिषेक प्रयोग 50.00
अपनी जन्म पत्रिका आप बनाएं 40.00
ज्योतिष प्रश्नोत्तरी 30.00
वक्री ग्रह 40.00
हिन्दू विवाह एवं यज्ञोपवीत संस्कार 100.00

कीरो

कीरो नक्षत्र विज्ञान 40.00
कीरो अंक विज्ञान 40.00
कीरो हस्त रेखाएं 50.00

आचार्य सत्यानन्द

व्यावहारिक वास्तु शास्त्र 100.00
सूर्य चिकित्सा 40.00

पं. गोपाल शर्मा

सुगम वास्तु शास्त्र 75.00
लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो 75.00

उर्मिला शर्मा

ज्योतिष और पति-पत्नी का चुनाव 20.00

नितीश के. शर्मा

मुखाकृति विज्ञान 40.00

महेशदत्त शर्मा

दिव्य आभामण्डल (AURA) 40.00

शशिकांत ओक (विंग कमांडर)

नाड़ी भविष्य (चौंका देने वाला चमत्कार) 30.00

पारसमल

वास्तु दोष और निवारण 99.00

कौलाचार्य जगदीशानन्द तीर्थ

हस्ताक्षर विज्ञान 75.00
अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़ें 60.00
पहचान आपकी. 95.00

राधाकृष्ण श्रीमाली

हनुमान तंत्र साधना 60.00
ज्योतिष सीखिये 100.00
लाल किताब 100.00
दस महाविद्या 100.00
लक्ष्मी तंत्र साधना 60.00
गणेश उपासना और साधना 50.00
वृहद हस्त रेखा 50.00
ज्योतिष और रत्न 40.00
अंक ज्योतिष 40.00
भृगु संहिता 60.00
नक्षत्र विज्ञान 40.00
प्रश्न ज्योतिष 40.00
तंत्र रहस्य 40.00
तंत्र शक्ति साधना और सैक्स 40.00
स्वप्न ज्योतिष 40.00
मंत्र शक्ति से रोग निवारण 30.00
दशाफल दर्पण 40.00
मंत्र शक्ति द्वारा कामना सिद्धि 40.00
ग्रहगोचर (ग्रह और फलादेश) 40.00
शरीर सर्वांग लक्षण 30.00
रमल विज्ञान 40.00
यंत्र सिद्धि 30.00
स्तोत्र शक्ति 30.00
ज्योतिष और लाटरी 30.00

डायमंड पाकेट बुक्स

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020
पुस्तकें V.P.P. से मंगवाएं, तीन पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री। डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/-
फोन : 011-6386289, 8611861, फैक्स : 011-8611866.
E-mail : mverma@nde.vsnl.net.in Website : www.diamondpocketbooks.com

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़ें

मिथुन लग्न : सम्पूर्ण परिचय

लेखक :

डॉ. भोजराज द्विवेदी

एम. ए.ए पीएच. डी. (ज्योतिष), डी. लिट् काठमांडो (नेपाल)

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित, स्वर्ण पदक प्राप्त

जोधपुर

सह सम्पादक :

पं. रमेश द्विवेदी

डायमंड बुक्स

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I.S.B.N. : 81-288-0561-4
© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक	: **डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.** X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज–II, नई दिल्ली–110 020
फोन	: 011-51611861-65
फैक्स	: 011-51611866, 26386124
ई–मेल	: sales@diamondpublication.com
वेबसाइट	: www.diamondpublication.com
संस्करण	: 2004
मूल्य	: रु. 95/-
लेजर टाइपसेटिंग	: टैक्ट कम्प्यूटर ग्राफिक्स, कृष्णा नगर, दिल्ली–51
प्रिंटर	: आदर्श प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32

Apni Janmpatri Swayam Padhiye : Mithun Lagan Phal
By Dr. Bhojraj Dwibedi Rs. 95/-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुक्रमणिका

1.	पुस्तक परिचय	7
2.	लेखक परिचय	10
3.	ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व	11
4.	लग्न प्रशंसा	18
5.	लग्न का महत्त्व	19
6.	जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं	20
7.	लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व	22
8.	लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मिथुनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण	27
9.	मिथुनलग्न एक परिचय	31
10.	मिथुनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में	33
11.	बुध का खगोलीय स्वरूप	35
12.	मिथुनलग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप	37
13.	मिथुनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं	44
14.	नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी	53
15.	नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबल	57
16.	नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी	59
17.	मिथुनलग्न पर अंशात्मक फलादेश	65
18.	मिथुनलग्न में आयुष्य योग	85
19.	मिथुनलग्न और रोग	88
20.	मिथुनलग्न में विवाहयोग	91
21.	मिथुनलग्न में धनयोग	93
22.	मिथुनलग्न में संतानयोग	98
23.	मिथुनलग्न में राजयोग	101
24.	मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति	104

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

25. मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति 122
26. मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति 139
27. मिथुनलग्न में बुध की स्थिति 153
28. मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति 167
29. मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति 182
30. मिथुनलग्न में शनि की स्थिति 194
31. मिथुनलग्न में राहु की स्थिति 208
32. मिथुनलग्न में केतु की स्थिति 219
33. प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव 229
34. अनिष्ट निवारण के विविध उपाय 232
35. बुधवार की कथा 235
36. बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र 238
37. **रत्न चिकित्सा**–मिथुनलग्न में रत्न धारण के वैज्ञानिक विवेचन 243
38. दृष्टांत कुण्डलियां 245

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'वीर्य' एवं बीज कहा है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए पुस्तके पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पस्तुकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। लग्न बारह है, ग्रह नौ है, फलत 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनी। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थियिां बनी। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्ख्य ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज दिन तक नहीं हुआ वह है– **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि में है? किस लग्न में है? और कहां किसी भाव (घर) में है? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाय तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि ग्रह स्थितियां बनेगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्विग्रह युतियां बनेगी। **ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनियां में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनियां में ये पुस्तक मील का पत्थर साबित होगी। यही कारण है। इन किताबों पर जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मीयोग'** का ले सकते हैं। क्या गुरु+चन्द्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देगी!!! गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? गजकेसरी योग की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेली गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होगे। गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, 'मकर' या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में गजकेसरी योग छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चन्द्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अत: यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सर्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एव **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी है। जिसका ज्योतिष की दुनियां में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'मिथुनलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मिथुनलग्न में जार्ज वाशिंगटन, जुल्फीकार अली भुट्टो, चार्ल्स शोभराज, पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, प्रियंका गांधी, मुख्यमंत्री जयललिता, डॉ. जाकिर हुसैन, विजयराजे सिन्धिया, अभिनेता राजेश खन्ना, पी. चिदम्बरम्, प्रमोद महाजन जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मिथुनलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र निकलेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशत्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व मे पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखे। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

4.12.2003

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कसीवीं शताब्दी, तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालवित, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप-स्कन्ध त्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्चते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
मुर्हूत चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) 'गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।

यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोशं हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4] ·

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्वा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥—पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and VeoaQnga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar WaoaQ, POONA CITY, page-3

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं** OB l OB ;Kk[1]~ `

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्राकौं यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की श्रृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी श्रृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पुलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुनि देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएंगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रूपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्गमय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय(काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निवीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
   तथा वेदावधीतोऽफिज्योतिशास्त्रंत बिना द्विजा:।।-वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है।।5।।

इन्दुः सर्वत्र बीजानम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न का महत्त्व

यथा तनूत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनमत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

'ज्योतिर्विवरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

□□□

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न**।
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

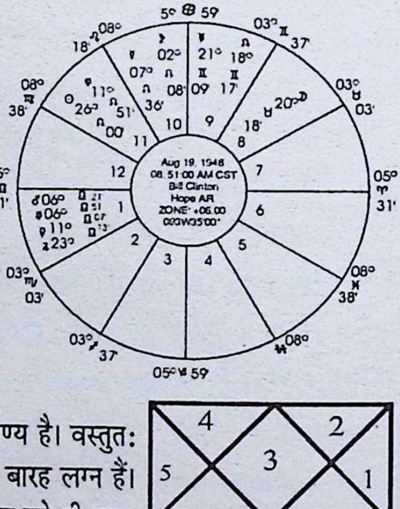

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह

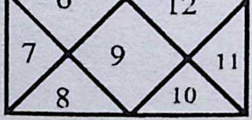

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

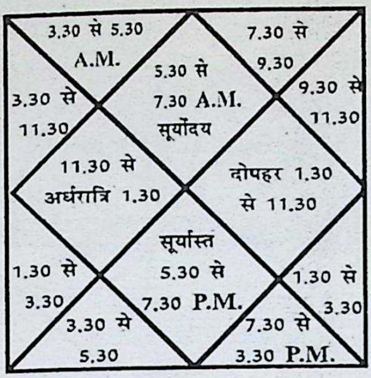

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

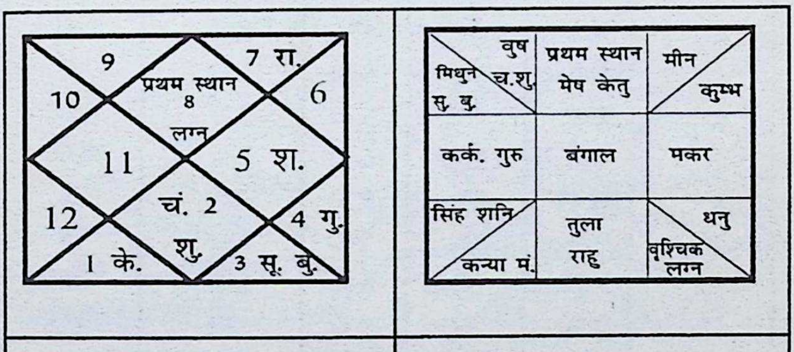

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

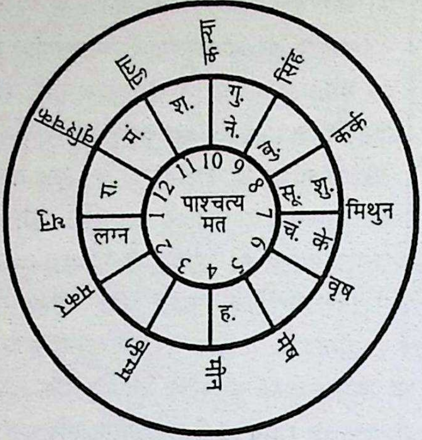

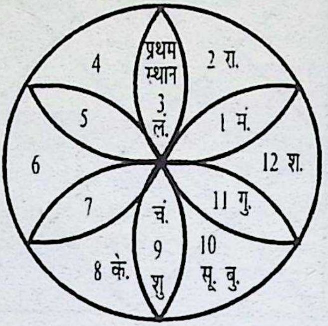

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**''लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्''**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

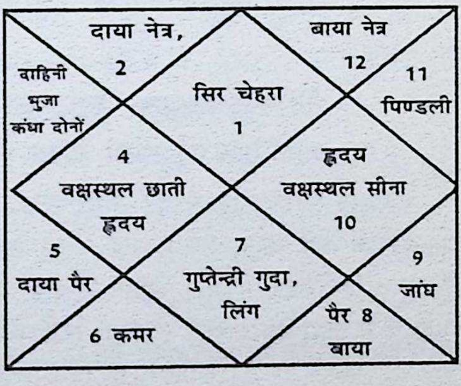

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

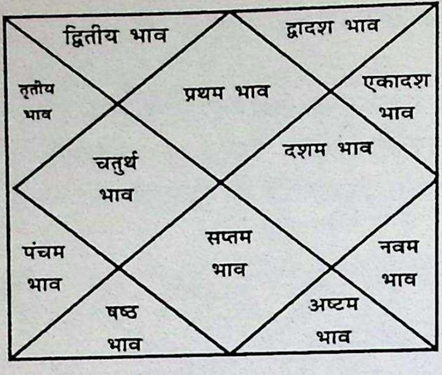

है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

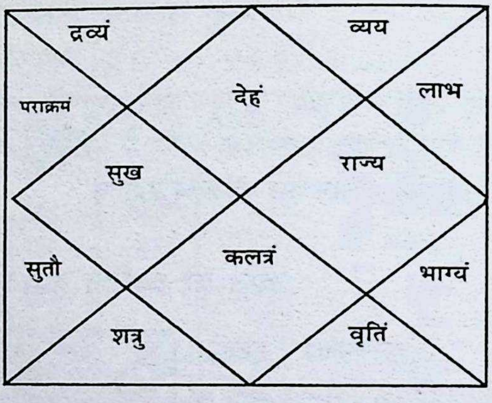

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्यया लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मिथुनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

भौमजीवारुणा: पापा एक एव कवि: शुभ:।
शर्नेश्चरेण जीवस्य योगमेषभवो यथा।।6।।
नायं शशी निहंता स्यादुमिषत्पाप निष्फलम्।
ज्ञातव्यानि दिनेशस्य फलान्येतानि सूरिभि:।।7।।

दूसरा पाठ

कुजभान्विन्दव: पापा एक एव कवि: शुभ:।
राजयोगकरौ शुक्रसोमपुत्रो शुभान्वितौ।।8।।
शनिजीवसमायोगात् फलं मेषभुवो यथा।
शनि: साक्षान्न हन्ता स्यान्-मारकत्वेन लक्षित:।।9।।
भौमादयो निहन्तारो भवेयु: पापिनो ग्रहा:।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञेयानि युगजन्मन:।।10।।

मिथुन लग्न के लिए मंगल, गुरु और रवि अशुभ होते हैं। इसका कारण मंगल षष्ठ स्थान का और एकादश स्थान का स्वामी है। गुरु सप्तम (मारक) स्थान का और दशम स्थान का स्वामी है और वह मारक (सप्तम) स्थान का स्वामी होने से मारकेश है और अशुभ फल करने वाला है। रवि तृतीय स्थान का स्वामी होने से अशुभ है। गुरु का पाप फल उत्पन्न करने का कारण श्लोक 10 में दिया हुआ है। शनि और गुरु का योग मारक होता है। कारण शनि अष्टम स्थान का स्वामी होकर गुरु मारकाधीश है। इसलिए इनका योग अनिष्ट फल उत्पन्न करने वाला है। शुक्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभ फल उत्पन्न करने वाला है। कारण वह पंचम स्थान (त्रिकोण स्थान) का अधिपति है। व्ययेश और द्वितीयेश साहचर्यानुसार फल देने वाले होते हैं। इसलिये चन्द्रमा पाप ग्रहों से संयुक्त नहीं हो तो वह मारक नहीं बनता कारण चन्द्र और सूर्य इनको मारक का दोष नहीं लगता। बुध और शुक्र का संयोग हो तो इसे राजयोग समझना चाहिए। शुक्र लग्न स्वामी बुध का मित्र है इसलिए शुक्र सर्वस्वी शुभ फल देता है। मिथुन लग्न हो तो अकेला शुक्र किसी भी शुभ स्थान में हो तो अति श्रेष्ठ प्रकार के फल देता है। बुध लग्न का और चतुर्थ केन्द्र का स्वामी है और उसका पंचमेश शुक्र के (त्रिकोणेश के) साथ योग श्रेष्ठ फल करने वाला होता है। इस कुंडली में मंगल और शनि मारक होते हैं।

(मतान्तर से) मंगल, रवि और चन्द्र ये अशुभफल देते हैं। अकेला शुक्र मात्र शुभ फल देता है। शुक्र, बुध इनका शुभयोग हो तो राजयोग होता है। शनि और गुरु इनका योग मेष लग्न के समान ही फल करता है। मारक लक्षणों से युक्त होने पर भी शनि प्रत्यक्ष मारक नहीं बनता। मंगल इत्यादि जो अशुभ ग्रह कहे गए हैं वे मारक होते हैं। इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण

दूसरे पाठ में गुरु की जगह चन्द्रमा लिया गया है। चन्द्रमा धनेश है। इसलिये वह मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है। इसलिए चन्द्रमा की गणना अशुभ ग्रहों में की गई है। इसके सिवाय चन्द्रमा लग्नेश बुध का शत्रु है। पहले पाठ के अनुसार शुक्र अकेला राजयोग करता है और उसकी लग्नेश बुध के साथ मित्रता है इसलिए बुध, शुक्र का योग राजयोग करता है ऐसा कहा हुआ है। कुछ ग्रंथकारों का मत है कि गुरु दशम और सप्तम इन दो कन्द्रों का स्वामी होने से शुभ होता है। शुभ ग्रह केन्द्र स्थान में अशुभ होता है। ऐसा जो भी एक ठोस नियम है तो भी केन्द्र का स्वामी होने के कारण उसने कुछ तो भी शुभ देना ही चाहिए यह उचित है। इस कारण से गुरु को दूसरे पाठ में से निकाल दिया जाता है।

कुछ प्रतियों में इस प्रकार का श्लोक दिया हुआ है।

"रविचन्द्रकुजाः पापा एक एव शनिः शुभः।
चन्द्रात्मजेन संयुक्तों विशेषफलदायकाः॥"

मिथुन लग्न के लिए रवि, मंगल और चन्द्रमा पाप फल देने वाले होते हैं। शनि शुभ फल देता है। यदि इस शनि से बुध का संयोग होता हो तो विशेष फलदायक होगा अथवा राजयोग करेगा।

इस श्लोक में शनि शुभ फल देने वाला है ऐसा कहा हुआ है परन्तु शनि अष्टमेश और भाग्येश होता है यानि भाग्य स्थान का अर्थात् बलवान त्रिकोण स्थान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का अधिपति मानकर अष्टम स्थान का अधिपति जो भी हो तो भी अष्टम स्थान की त्रिषडाय स्थानों में गणना नहीं की गयी होने से इसलिए इसे योगकारी माना गया होना चाहिए।

मिथुनलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–चन्द्रमा द्वितीय स्थान का अधिपति होकर उसे श्लोक 11 के अनुसार मारकत्व का दोष नहीं होने से वह अशुभ फल नहीं देता लेकिन शुभ फल देता है (मध्यम-फल)।
2. **शुभ योग**–शुक्र द्वादश स्थान का अधिपति होकर बुध से स्थान साहचर्य के कारण और अन्य ग्रहों के साहचर्य के अलावा वह पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**–बुध चतुर्थ स्थान (केन्द्र स्थान) का अधिपति होकर उसे श्लोक 11 के अनुसार अल्पदोष लगता है और शुक्र का स्थान साहचर्य प्राप्त होने पर राजयोग कारक होता है और इतने पर भी वह यदि इन स्थानों में हो तो निश्चयपूर्वक राजयोग करके शुभ फल देने वाला होता है।

मिथुनलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–मंगल पाप ग्रह होकर श्लोक 6 के अनसार षष्ठ और एकादश स्थानों का स्वामी होने से विशेष अशुभ है विशेष अशुभ फलदायक होता है।
2. **अशुभ योग**–गुरु सप्तम स्थान का अधिपति होने से मारक होकर सप्तम और दशम स्थानों का (केन्द्रों का) स्वामी होता है। श्लोक 7 के अनुसार और केन्द्राधिपत्य दोष श्लोक 10 के अनुसार ये दोष बलवत्तर हैं और शनि के सह-स्थानाधिपत्य के दोष के कारण से भी वह अशुभ माना गया है। यह मारक होकर अशुभफल देता है।
3. **अशुभ योग**–सूर्य पाप ग्रह होकर तृतीय स्थान का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न के लिए निष्फल योग

1. गुरु+शुक्र, (दोनों ही दूषित होते हैं), 2. गुरु-शनि, 3. बुध-शनि (शनि अष्टम स्थान का स्वामी हाने से) 4. तीसरा योग श्लोक 22 के अनुसार निष्फल होता है।

मिथुनलग्न के लिए सफल योग

बुध+शुक्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न एक परिचय

1.	धनेश	–	चन्द्रमा
2.	पराक्रमेश	–	सूर्य
3.	लग्नेश, सुखेश	–	बुध
4.	पंचमेश, खर्चेश	–	शुक्र
5.	षष्ठेश, लाभेश	–	मंगल
6.	सप्तमेश, राज्येश	–	गुरु
7.	अष्टमेश, भाग्येश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-शुक्र, 9-शनि,
9.	दुःस्थान के स्वामी	–	6-मंगल, 8-शनि, 12-शुक्र
10.	केन्द्राधिपति	–	1, 4-बुध, 7, 10-गुरु
11.	पणफर के स्वामी	–	2-चन्द्र, 5-शुक्र, 8-शनि, 11-मंगल
12.	आपोक्लिम	–	3-सूर्य, 6-मंगल, 9-शनि, 12-शुक्र
13	त्रिकेश	–	6-मंगल, 8-शनि, 12-शुक्र
14.	उपचय के स्वामी	–	3-सूर्य, 6-मंगल, 10-गुरु, 11-मंगल
15.	शुभ योग	–	1. चन्द्र (मध्यम फल), 2. शुक्र, 3. बुध
16.	अशुभ योग	–	1. मंगल, 2. गुरु, 3. सूर्य
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. बुध+शनि
18.	सफल योग	–	बुध+शुक्र
19.	राजयोग कारक	–	बुध, शुक्र, चंद्र
20.	मारकेश	–	चन्द्र मुख्य मारक, सहायक मारक-गुरु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

21.	**पापफलद**	–	सूर्य, मंगल, शनि (पापी), परमपापी-सूर्य, मंगल
22.	**शुभ युति**	–	बुध+शुक्र
23.	**अशुभ युति**	–	1. बुध+मंगल

विशेष-मिथुनलग्न में गुरु को 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। शनि नवमेश (योगकारक) होकर भी पूर्णफलदायक नहीं है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– मिथुन
2.	लग्न चिह्न	– स्त्री पुरुष का जोड़ा, गदा व वीणा हाथ में
3.	लग्न स्वामी	– बुध
4.	लग्न तत्त्व	– वायु तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	– द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	– पश्चिम
7.	लग्न लिंग व गुण	– पुरुष (कुमार)
8.	लग्न जाति	– शूद्र
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
10.	लग्न का अंग	– कन्धा
11.	जीवन रत्न	– पन्ना
12.	अनुकूल रंग	– हरा
13.	शुभ दिवस	– बुधवार
14.	अनुकूल देवता	– गणपति
15.	व्रत, उपवास	– बुधवार
16.	अनुकूल अंक	– पांच
17.	अनुकूल तारीखें	– 5/14/23
18.	मित्र लग्न	– मेष, तुला, कुम्भ, सिंह, कन्या
19.	शत्रु लग्न	– कर्क
20.	व्यक्तित्व	– चतुर, निडर, बुद्धिमान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

21.	**सकारात्मक तथ्य**	–	कुशल व्यापारी-व्यवसायी, वाकपटु
22.	**नकारात्मक तथ्य**	–	निर्मोही, आत्मकेन्द्रित, निष्ठुर।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध का खगोलीय स्वरूप

बुध सूर्य के सबसे निकट का ग्रह है। इसी कारण इस पर भयंकर उष्णता है। बुध सूर्य से 5,80,00,000 किमी. की दूरी पर है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 88 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। बुध सदैव अपना एक भाग सूर्य के सम्मुख रखकर सूर्य की परिक्रमा करता है। यह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। इसका व्यास केवल 5160 किमी. है। और इसका गुरुत्व भी हमारी पृथ्वी से एक चौथाई है। पृथ्वी पर छः फुट कूदने वाला व्यक्ति बुध पर चौबीस फुट ऊंचा कूद सकेगा। सूर्य के निकटतम होने के कारण इसे देखा जाना भी कठिन है। यह सूर्य के साहचर्य में न होने पर, सूर्योदय के कुछ मिनट पहले पूर्वी क्षितिज पर अथवा सूर्यास्त के कुछ ही मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज पर, प्रथम कक्षा के तारे के समान चमकता हुआ दिखाई देता है। बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के बत्तीस दिन बाद वक्री होता है। वक्री के चार दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। अस्त होने के सोलह दिन बाद पूर्व में उदय, उदय के चार दिन बाद मार्गी, मार्गी के बत्तीस दिन बाद पूर्व में पुनः अस्त हो जाता है।

बुध को क्षैतिज, सौम्य, बोधन, शान्त, कुमार हेम्न, उतारूद, आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

बुध की गति–बुध अपनी धुरी पर 24 घण्टा 5 मिनट में पूरी तरह घूम लेता है तथा 87 दिन 23 घण्टा 15 मिनट और 16 सैकेण्ड में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। जिस समय यह सूर्य के निकट होता है तब प्रति सैकेण्ड 35 मील, दूर रहने पर प्रति सैकेण्ड 23 मील और मध्यम गति 29 मील प्रति सैकेण्ड की गति से परिभ्रमण करता है। यह एक घण्टे में एक लाख नौ हजार मील की गति से चलता है। स्थूल मान से बुध एक राशि पर 25 दिन व एक नक्षत्र पर 8 1/2 दिन रहता है।

सूर्य से 27 डिग्री अंश की दूरी से आगे होने पर यह वक्री हो जाता है। जिस राशि पर यह वक्री होता है, उस पर 25 दिन ही रह पाता है। सूर्य की गति से भी तीव्र गति वाला होने के कारण यह पूर्व में अस्त और पश्चिम में उदय होता है और

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब वक्री होता है तब पश्चिम में अस्त व पूर्व में उदय होता है। वक्री होने की स्थिति में सूर्य से 12 डिग्री अंश की दूरी पर तथा मार्गी होने पर 13 डिग्री अंश पर अस्त हो जाता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर जाने से वक्री और बारहवीं पर शीघ्रगामी होता है। यह 92 दिन मार्गी और 23 दिन वक्री रहता है। मार्गी होने पर 37 दिन उदय और 36 दिन अस्त हो जाता है। वक्री होने पर 33 दिन उदय और 16 दिन अस्त रहता है। जब बुध की गति 113/32 घटी पल की होती है तब यह परम शीघ्रगामी या अतिचारी हो जाता है। और इस स्थिति में 20 दिन रहता है। यह एक वर्ष में तीन बार वक्री होता है। बुध वक्री होने पर एक दिन आगे या पीछे स्थिर सा प्रतिभासित भी होता है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बुध पीले रंग की पुष्प माला और पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके शरीर की कान्ति कनेर के पुष्प जैसी है। वे अपने चारों हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, गदा और वरमुद्रा धारण किये रहते हैं। वे अपने सिर पर सोने का मुकुट तथा गले में सुन्दर माला धारण करते हैं। उनका वाहन सिंह है।

बुध की उत्पत्ति

अत्रि ऋषि के पुत्र चन्द्र हुए उन्होंने एक बार देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण कर लिया। इससे देवासुर संग्राम हो गया। अन्त में ब्रह्मा जी ने बीच में पड़ कर तारा को बृहस्पति को वापिस दिला दिया। गुरु ने तारा को गर्भवती पाया। उन्हें अपने क्षेत्र में दूसरे का बीज देखकर तारा को गर्भस्राव करने की आज्ञा दी। तारा ने एक सुनहले अणु को गर्भ से बाहर निकाला। उस अण्डे से बालक का जन्म हुआ। वह अति सुन्दर था। उसे देखकर चंद्र और गुरु दोनों ही मोहित हो गये। यह किसका पुत्र है? तारा लज्जावश जब कुछ न कह सकी तो जन्मजात बालक ने मां की झूठी लज्जा से क्रोधित होकर उसे सत्य बोलने पर विवश किया। इस बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी ने उसका नाम बुध रख दिया। यह बुद्धिदाता रहेगा, यह वरदान दिया। बालक को चंद्रमा को सौंप दिया गया। तब से बुध चंद्र पुत्र कहलाये। उनके जन्म के बाद उनकी प्रेरणा से भौतिक ज्ञान का उजागर करने वाली वेद विद्या अर्थववेद के रूप में प्रसिद्ध हुई। अर्थशास्त्र, गणित व विज्ञान कंला कौशल व्यापार के सूत्र उसमें रहे। अतः बुध का सम्बन्ध व्यापार से बन गया।

अतः बुध सौम्य ग्रह कहलाया व शुभ ग्रह माना गया है। यह गुरु, चंद्र व तारा तीनों के मिश्रण का स्वरूप है। गुरु का रंग पीला, चंद्र का सफेद व तारा का लाल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था। अतः इनके मिश्रण से इस ग्रह का रंग दूर्वादल श्याम हरा रंग बना। असल में वात पित्त और कफ का मिश्रण बुध है। यह कल्पना इसमें रूपात्मकता से दी गई है। गुरु का क्षेत्र और चंद्र का वीर्य होने से यह दोनों से शत्रुता रखने वाला ग्रह बना। साथ ही अन्य क्षेत्र में उत्पन्न होने से यह वर्ण संकर अर्थात् नपुसंक ग्रह कहलाया गीता में कहा गया है।

अथर्ववेद के अनुसार बुध के पिता का नाम चन्द्रमा और माता का नाम तारा है। ब्रह्माजी ने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्भागवत के अनुसार ये सभी शास्त्रों में पारंगत तथा चन्द्रमा के समान ही कान्तिमान हैं। (मत्स्य पुराण 24/1/2) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्मा जी ने इन्हें भूतल का स्वामी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारत की एक कथा के अनुसार इनकी विद्या-बुद्धि से प्रभावित होकर महाराज मनु ने अपनी गुणवती कन्या इला का इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुध के संयोग से महाराज पुरुरवा की उत्पत्ति हुई। इस तरह चंद्रवंश का विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्भागवत (4/22/13) के अनुसार बुध ग्रह की स्थिति शुक्र से दो लाख योजन ऊपर है। बुध प्रायः मंगल ही करते हैं। किन्तु जब यह सूर्य की गति का उल्लंघन करते हैं, तब आंधी-पानी और सूखे का भय प्राप्त होता है।

मत्स्य पुराण के अनुसार बुध ग्रह का वर्ण कनेर के पुष्प की तरह पीला है। बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है। इसमें वायु के समान वेग वाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम—श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है। इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए प्रत्येक अमावस्या को व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को हाथी दांत, हरा, वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस, भोजन तथा घृत का दान करना चाहिए। नवग्रह मण्डल में इनकी पूजा ईशान कोण में की जाती है। इनका प्रतीक वाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र–'**ओइम उद्बुध्यास्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ्सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥**', पौराणिक मंत्र '**प्रियकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥**' बीज मंत्र '**ओइम ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**। सामान्य मंत्र **ओइम बुं बुधाय नमः**। इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप की कुल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संख्या 9000 तथा समय 5 घड़ी दिन है। विशेष परिस्थितियों में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

व्यापारी

नाना प्रकार के रसों का संग्रह करने वाला व्यापारी होता है। यह भोजन के सभी रसों को बनाकर उनको स्नायुओं में संचालित करता है। अत: यह स्नायु मंडल का अधिकारी है। सुन्दर रस परिपाचक से त्वचा सुन्दर बनती है। अत: यह त्वचा पर पूर्ण अधिकार रखता है। इसकी मूलत: दो राशियां हैं। नकारात्मक राशि मिथुन और सकारात्मक राशि कन्या है।

राशि स्वरूप मिथुन में स्त्री पुरुष का जोड़ा बताया गया है और कन्या में सुन्दर कन्या हाथ में ज्वाला लिए दिखाई गई है। मिथुन वायु तत्त्व प्रधान राशि है और कन्या पृथ्वी तत्त्व प्रधान है। अत: वायु और पृथ्वी का मिश्रण बुध है।

बुध का अधिकार क्षेत्र

वायु तत्त्व प्रधान बुध का प्रभाव स्कंध, फेफड़ा, ऊपरी पसली, कन्धे, हाथ, बाजू, स्वर अंग, श्वास नली व कोशिकाओं पर पड़ेगा। पृथ्वी तत्त्व से नाभिचक्र अग्नाशय, कमर मेरवला और आंतों पर होगा। बलवान बुध इनमें विकार नहीं आने देगा और बिगड़ा हुआ इनमें से भावानुसार कोई रोग देगा।

बुध के अधिकारियों में स्नायुतंत्र, जीभ, आंत, वाणी, नाक, कान, गला, फेफड़े आते हैं। नैसर्गिक कुण्डली में यह तीसरे और षष्ठ भाव का प्रतिनिधित्व करता है। बुध के बिगड़ने पर, उसकी विशोंतरी दशा में मस्तिष्क विकार, याददाश्त कमजोर होना, पक्षाघात, हकलाहट, दौरे पड़ना, सूंघने, सुनने और बोलने की शक्ति का ह्रास होता है।

खेलकूद, हंसी-मजाक इसके क्षेत्र हैं। रेडियो, तार, टेलीफोन इसके अधिकार में हैं। इसकी मुख्य धातु पारा है। इसका रत्न पन्ना है यह सदा कुमार ही रहता है। बाल्यावस्था पर इसका अधिकार है। यह सबसे छोटा ग्रह होने से इसे क्षुद्र ग्रह भी कहते हैं।

बुध का स्वरूप

मिथुन राशि में स्त्री पुरुषों का मिथुन चित्र है। यह दूर्वादल श्याम रंग का है अत: इसका गेहुआं रंग होता है। कन्या राशि में अग्नि का अस्त्र भांण्ड हाथ में लिए नाव में बैठी कन्या का चित्र है। यह रूपवान है। कुछ गौर वर्ण की है। मिथुन में

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कद लम्बा होगी क्योंकि यह पुरुष राशि है और कन्या में मझौला कद होगा। सामान्यत: चेहरा भरा हुआ, नेत्र काले और बालों में कुछ घुंघरालापन होगा। नाक, ऊंची, हाथ पैर लम्बे, और दुबले दोनों राशियों में ऊष्मा की कमी रहेगी। नेत्र आकर्षक, सुन्दर व मतवाले होंगे। आकर्षक घनी केश राशि होगी।

कन्या राशि या लग्न वालों में स्त्री स्वभाव की झलक पाई जाती है। दोनों दो विरोधी पक्षों से मेल रखने में माहिर होंगे। मीठा बोलकर अपना काम बनायेंगे। दोनों मनोरंजन के शौकीन, विलासी, प्रसन्न रहने वाले, कुछ मजाक करने वाले व चचंल मस्तिष्क वाले होंगे। बुध प्रधान व्यक्ति शीघ्र सिखावट में आने वाले व सोहबत का असर भी इन पर शीघ्र होगा। ऐसे व्यक्ति दूसरों की भूलों को सूक्ष्मता से निकालने मे होशियार होंगे व सामने वाले की मंशा शीघ्र समझ जायेंगे।

मिथुन जातक का व्यक्तित्व विद्रोही होगा। कठोर परिश्रमी होगें, साहस होगा। जोखिम उठा सकेगा। इनका विचारने का तरीका तर्कसंगत व वैज्ञानिक होगा। जातक चतुर, चालाक, वाचाल व कुशल व्यापारीपन रहेगा। इनकी पठन-पाठन में रुचि भी रहेगी। मैकेनिकल कार्य में भी रुचि रहेगी।

कन्या में पराया धन, भवन, वाहन का लाभ पाएगा। कुशाग्र बुद्धि होगा। पढ़ने में होशियार होगा। विद्वता रहेगी। राजनीति में सफलता, मेडिकल लाईन व सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। यह ज्यादा भावुक होंगे। बिना सोचे समझे कार्य कर लेंगे। कोमल प्रकृति होगी। संकट में शीघ्र घबराने वाला। प्रेम के क्षेत्र में असफल रहेंगे। पत्नी पक्ष से परेशान होंगे व पुत्र संतान कम होगी। बुध प्रधान व्यक्ति दो विरोधियों पार्टियों से मेल रखने में माहिर होंगे।

बुध की बलवत्ता

कन्या मिथुन राशि में, कन्या मूल त्रिकोणी, बुधवार को द्रेष्कोण तथा नवांश में स्वगृह में धनु राशि में (रवि के साथ न हो तो) रात को तथा दिन को विसुव के उत्तर में, तथा शनि के मध्य भाग में, लग्न में अकेला हो तो बली होता है। बली होने पर यश और बल की वृद्धि करता है। लग्न में दिग्बली होता है। हर्ष बली होता है। यह चतुर्थ व दशम भाव का कारक ग्रह है। मीन में नीच का होता है। सूर्य से 13 अंशों के भीतर अस्त भी होता है। प्राय: सूर्य बुध साथ ही देखे जाते हैं। अत: अस्त, वक्री और मार्गी बनता रहता है। इसकी राशि बदलने की अवधि 1 मास है। सूर्य, राहु, शुक्र इसके मित्र हैं। गुरु, मंगल, शनि सम हैं। चंद्र से इनकी शत्रुता है। कन्या के 15 अंश तक मूल त्रिकोण में होने से ज्यादा बलवान रहता है तथा परमोच्च का कहलता है। मीन के 15 अंशों तक परम नीच रहता है। नीच होकर यदि यह वक्री हो तो शुभ फल देता है। प्रात: सूर्योदय के 2 घंटे तक बलवान रहता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेचन

यह राहु के दोष को दूर करता है। "राहुदोष बुधो हन्यात्" प्रसद्धि है। यह चौथे स्थान में विफल होता है। अतः चौथे भवन में बैठकर निर्बल हो जाता है। शुक्र से बुध की पराजय होती है। इसकी दृष्टि तिरछी है। वैसे सातवें तो देखता है ही पर अपनी एक राशि को देखते ही दूसरी राशि को भी देख लेता है। इसकी विशेष दृष्टि नहीं है। इसकी दिशा उत्तर मानी गई है।

ईशान कोण इसका निवास माना गया है। इसका घर बाण आकार का है। जन्मभूमि मगध देश है। इसके देवता विष्णु हैं। इसे प्रसन्न करने हेतु "विष्णु सहस्र नाम" का पाठ श्रेष्ठ रहता है। यज्ञ और ज्ञान का यह अधिष्ठाता है। यह रजोगुणी, ब्राह्मण है क्योंकि अण्ड और जन्म दोनों यह अणुज द्विज है। "द्वाभ्यां जन्म संस्कारत् जायते इति द्विज" यह प्रसिद्ध है। यह यों तो सर्वदा बली माना गया है। यह शीघ्र फलदाता है। यह 32वें वर्ष में भाग्योदय करता है। मेष, सिंह, धनु इसकी शुभ राशियां हैं। वृष, कन्या, मकर साधारण तथा मिथुन, तुला, कुम्भ उत्तम, कर्क, वृश्चिक, मीन अशुभ राशियां हैं। बुध को दी हुई वस्तु शीघ्र नहीं आती है। बुध के दिन विद्या प्रारम्भ का निषेध है व किसी वस्तु को देना भी मना है। व्यापार प्रारम्भ की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

बुध के अचूक फल

- ❑ बुध अकेला किसी भाव में कम ही पाया जाता है। अतः इसके अकेले के फल के वर्णन मिलने कठिन हैं। क्योंकि बुध सूर्य या शुक्र प्रायः साथ में या आगे पीछे रहते हैं। अतः इनके परिप्रेक्ष्य में फल मिलते रहते हैं।
- ❑ लग्न में अकेला बुध शुभ फल करेगा, शुभ दृष्टि हो तो व्यापार से धनी बनायेगा (लग्न+कन्या+मिथुन)।
- ❑ सातवें भाव में अकेला बुध हो तो प्रायः नपुसंकता ही देगा चाहे शुभ दृष्टि ही क्यों न हो (लग्न कन्या, बुध) विवाह शीघ्र होगा।
- ❑ तीसरे भाव में बुध व्यक्ति को ज्योतिषी, डॉक्टर, लेखक और न्यायाधीश बनाता है। (लग्न कर्क, कन्या, धनु)
- ❑ यदि धन स्थान में बुध तीसरे शुक्र हो, तो जातक ज्योतिषी, सुन्दर हस्ताक्षर वाला, तीव्र स्मरणशक्ति वाला होगा। 24, 30, 36वें वर्ष में जातक का भाग्योदय होगा।
- ❑ चौथे बुध, गु+शु+श के साथ ही उत्तम व्यापार व वाहन योग बनेगा। यदि राहु साथ हो तो जमीन योग निर्बल रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

- मिथुन लग्न में पाप प्रभावी बुध चर्म रोग देता है। सू+चं. के साथ हो तो।
- द्वितीयेश बुध का पाप प्रभाव घर से भागने की प्रवृत्ति करेगा।
- तृतीयेश बुध (लग्न, मेष, कर्क) हो तो पाप पीड़ित व अकाल मृत्यु के संकेत हैं।
- अष्टमेश बुध (लग्न वृश्चिक, कुम्भ) सट्टे से धन दिलाने वाला हो तो निर्बल धन नाश होगा।
- मिथुन राशि में बुध तृतीय व भावेश पाप प्रभावी हो तो सांस की नली, दमा खांसी के रोग होंगे।
- कन्या राशि में बुध षष्ठ भाव भावेश पीड़ित हो तो कब्ज, टायफाईड, हर्निया, आंत्रशोथ होंगे।
- तृतीयेश बुध के साथ हो कण्ठ रोग की संभावना रहेगी।
- षष्ठेश और बुध लग्न में हो तो जातक गूंगा होता है।
- चंद्र+मंगल+बुध तीनों ग्रह राहु व शनि से पीड़ित हो तो कुष्ठ रोग होगा।
- चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन के संकेत हैं।
- शनि की राशियों में बुध या मंगल हो तो जातक हंसी दिल्लगी वाला होगा।
- बुध का गुरु से संबंध हो तो जातक हंसोड़ होगा।
- बुध के साथ चंद्र भी पीड़ित हो, चौथा भाव भी पीड़ित हो तो त्वचा रोग होगा।
- यदि धनेश वक्री हो बुध स्थान में दरिद्र योग बनेगा।
- केन्द्र में स्वगृही या उच्च का बुध हो तो भद्रयोग बनेगा। व्यक्ति धनी बनेगा।
- सातवें नीच का बुध हो तो विवाह देर से होगा।
- 5वें बुध (लग्न कर्क, वृश्चिक, मीन) प्रथम पुत्री हो बाद में पुत्र होगा (कुम्भ में संतान की कमी)
- बुध यदि मेष, सिंह, धनु राशि में हो तो व्यक्ति ज्योतिषी, गणितज्ञ, तत्त्वज्ञानी, इंजीनियर, वृष, कन्या मकर में हो तो पदार्थ, विज्ञान, हस्तरेखा मिथुन, तुला, कुम्भ चिकित्सक व्याकरणी व्यापारी होगा। कर्क, वृश्चिक, मीन में टाइपिंग अंगूठे का विशेषज्ञ।
- बुधादित्य योग के कारण जातक सरकारी नौकरी, शिक्षक या डॉक्टर, वकील बनेगा। क्लर्क, बैंक में नौकरी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

- दशम भाव में बुध राशि 1, 5, 9 का इंजीनियर, गणितज्ञ, क्लर्क शिक्षक। 2, 6, 10 व्यापारी, कमीशन एजेन्ट, ठेकेदार। 3, 7, 12 समाचार सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक।
- 11वें भाव में बुध राशि 1, 5, 9 में हो तो 1 या 2 पुत्र होंगे। 2, 6, 10 में जातक चित्रकार, टाईपिस्ट, कम्पाउण्डर होगा। 3, 7, 11 में हो तो शिक्षा डिमोस्टेटर। 4, 8, 12, में हो तो स्वतंत्र व्यापार की संभावना है।
- 12वें भाव में बुध होने से व्यक्ति खर्चीला, ज्ञानी व विद्वान होगा एवं समाज में अग्रणी होगा।

उपाय

निर्बल बुध को बलवान करने तथा बुध दोष दूर करने हेतु।

1. विष्णु पूजन, यज्ञ व विष्णु सहस्र नाम का पाठ करें।
2. बुध रत्न पन्ना 7 से 8 रत्ती तक का, विषम संख्या लीलड़ी या हरा कांच भी पहन सकते हैं। हरी चड्डी या बनियान पहनें।
3. बुधवार को यम की पूजा करें और ब्राह्मण से जप कराएं।
4. बुधवार को गणपति दर्शन कर भोग लगाएं। गणपति को दूध चढ़ाएं।
5. गाय को हरी घास दें। हरी सब्जी, अन्न क्षेत्र में दें हरी वस्तु मंदिर में चढ़ाएं।
6. हाथी को नारियल दें।
7. सत्यनारायाण व्रत करें व कथा करें।
8. कांसे के पात्र में सुवर्णतुष डालकर छायादान करें।
9. हर बुधवार गौ को मूंग की दाल, गुड़, रोटी दें।
10. तोते को हरी मिर्च दें, तोता पालें।
11. वैष्णव संत के घर, हर बुधवार सीधा सामान दें।
12. एकादशी का व्रत करें व साधुओं को हरे फल दें।
13. बुधवार को व्रत करना भी श्रेष्ठ होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मिथुनलग्न का स्वरूप

पार्वतीय कन्याख्या राशिर्दिनबलान्दिता।
शीर्षदया च मध्याङ्गा द्विपाधाभ्यचरा च सा ॥13॥
सा सस्यदहना वैश्य चित्रवर्णा प्रभुंजिनी।
कुमारी तमसा युक्त बालाभावा बुधाधिपा॥14॥

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 9

शीर्षोदय, गदा और वीणा सहित पुरुष स्त्री की जोड़ी, पश्चिम दिशावासी, वायु तत्त्व, द्विपद, रात्रिबली, ग्रामचारी, वात प्रकृति, समदेह, हस्ति वर्ण है, इसका स्वामी बुध है॥9॥

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलः श्यामेक्षणः शास्त्रविद्,
दूतः कुंचितमूर्धजः पटुमतिर्हास्येङ्गितद्यूतवित्।
चार्वङ्गः प्रियवाकप्रभक्षणरुचिर्गीतप्रियो नृत्तवित्,
क्लीवैर्याति रतिं समुन्नतनसश्चन्द्र तृतीयर्क्षगे॥13॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 7

मिथुनस्थ चन्द्रमा से मनुष्य स्त्रियों के विषय में विशेष आकर्षण अनुभव करने वाला, शास्त्रोक्त विधि से सम्भोग करने वाला अर्थात् विभिन्न मुद्राओं व विधियों से स्त्री को संतुष्ट व तत्पर करने में कुशल, काले नेत्रों वाला, शास्त्र तत्त्व को जानने वाला, द्यूतकर्म अर्थात् सन्देश वचन में निपुण, कुछ मुड़े बालों वाला, चतुर बुद्धि अर्थात् प्राज्ञ, हास्य एवं दूसरे के भावों को ताड़ लेने वाला, द्यूतक्रीड़ा के रहस्यों को समझने वाला, सुन्दर शरीर वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, सदैव खाने के लिए तत्पर, गीत प्रिय, नाटक व उसके अंगों को समझने वाला गुणदोषज्ञ, नपुंसकों से प्रेम रखने वाला, एवं ऊंची नासिका वाला होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीयलग्ने तु नरोऽभिजातो विज्ञानविद्यागमशास्त्रलुब्धः।
स्वपक्षपूज्यः परपक्षहन्ता जितेन्द्रियः स्याद्बहुवित्तयुक्तः।3॥

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.3/ पृ.287

यदि मिथुनलग्न में जन्म हो तो मनुष्य कुलीन, विशेष ज्ञान से युक्त, विद्या से युक्त, विद्या व शास्त्र का रसिक, अपने पक्ष में पूज्यत्व पाने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला, अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला, अत्यधिक धन सम्पन्न होता है।

भोगी बन्धुरतो दयालुरधिकः श्रीमान् गुणी तत्वविद्
योगात्मा सुतनप्रियोऽतिसुभगो रोगी च युग्मोदये।

–जातक पारिजात श्लो. 3/ पृ. 678

भोगी अपने बन्धुओं को प्रेम करने वाला, विशेष मात्रा में दयालु, धनी, गुणी, तत्त्ववेता योगात्मा(योगासक्त जिसकी आत्मा हो अर्थात् आत्मिक उन्नतिशील, सज्जनों का प्रिय) (या सज्जन प्रिय हों), अत्यन्त सुन्दर स्वरुप, रोगी।

मिथुनादिमे दृगाणे पृथूत्तमाङ्गे धनान्वितः प्रांशुः।
कितवो गुणी विलासी नृपाप्तमानो वचस्वी स्यात्॥

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में मिथुन राशि तथा मिथुन राशि का महिला द्रेष्काण हो तो जातक मोटे मस्तक वाला, धनी, ऊंचा, धूर्त, गुणी, विलासी, राजा से सम्मान प्राप्त करने वाला और अच्छा वक्ता होता है।

मिथुनोदयसन्जातो मानी स्वजनवल्लभः।
त्यागीभोगी धनीकामी दीर्घसूत्रोऽरिमर्दकः॥

–मानसागरी अ. 1/ श्लो3

मिथुनलग्न वाले जीव मानी, बन्धुजनों का प्रेमी, दानी, भोगी, शांत गति से क्रियाशील, शत्रु हन्ता तथा वाहन सुख-मित्र युक्त, उज्ज जीवों के समीप, सहवासशील, नीतिमान चतुर होता है।

भोजसंहिता

मिथुनलग्न का स्वामी बुध सूर्य का सबसे निकटतम ग्रह है। यह प्राय: उदीयमान होते हुए सूर्य के साथ व अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य के साथ देखा गया है। इस राशि वाले व्यक्ति प्राय: पीत वर्णीय देखे गए हैं। बुध जिस ग्रह के साथ बैठता है अथवा जिस ग्रह का इस पर प्रभाव होता है यह तत् वत् हो जाता है उसी के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुसार व्यक्ति का रंग व चरित्र हो जाता है। मिथुन राशि वाले व्यक्ति पर संगत का असर बहुत ज्यादा होता है ऐसा देखा गया है। बुरी संगत इनको बुरा बना देती है तथा अच्छी संगत से ये अच्छे बन जाते हैं। ये शीघ्र ही दूसरे लोगों के प्रभाव व आकर्षण केन्द्र में आ जाते हैं। यह इस लग्न वालों की सबसे बड़ी कमजोरी है।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

का की कु	घ ड़ छ	के हो हा
मृगशिरा-2	आर्द्रा-4	पुनर्वसु-3

मृगशिरोर्धम् आर्द्रा पुनर्वसु पाद त्रयं मिथुनः

मृगशिरा नक्षत्र

यदि आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र में हुआ है तो आपकी राशि का प्राकृतिक स्वभाव विद्याध्ययनी और शिल्पी है। इस राशि वाले बालक बहुत ही चतुर व सुंदर होते हैं। प्राय: ये मध्यम कद एवं छरहरे बदन के होते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक आर्थिक दृष्टिकोण से मितव्ययी एवं सोच विचार कर खर्च करने वाले होते हैं। इनकी प्रगति में निरन्तर बाधाएं आती रहती हैं तथा इनका जीवन परिवर्तनमय रहता है। Change is Charm of Life के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले ये व्यक्ति प्राय: एक धन्धे को छोड़कर दूसरे धंधे में हाथ डालते हुए देखे गये हैं।

चरण	अंश से तक	चरण के नवांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
तृतीय	1.0.0 से 3.20.0 तक.	शु. शु.	मं. बु.	बु. के.	1.00.00 से 1.53.20 1.53.20 से 2.40.00
चतुर्थ	3.21.0 से 6.40.0 तक	मं. मं. मं.	बु. बु. बु.	शु. सू. चं.	2.40.00 से 4.53.20 4.53.20 से 5.33.20 5.33.20 से 6.40.0

यह द्विस्वभाव लग्न है। अत:एव इस लग्न वाले व्यक्ति प्रत्येक वस्तु के दोनों पहलुओं पर बहुत अच्छी तरह सोच विचार कर फिर निर्णायात्मक कदम उठाते हैं, यह लग्न मध्यम संतति और शिथिल शरीर का प्रतिनिधित्व करता है। इसको क्रोध कम आता है प्राय: यह शान्त व गम्भीर स्वभाव के होते हैं। यदि ये क्रोधित हो जाएं तो क्रोध शान्त होने पर फिर पश्चाताप प्रकट करते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस राशि का चिह्न ''गदा व वीणा सहित'' पुरुष-स्त्री की जोड़ी है। अतःएव व्यक्ति गायन-वाद्य आदि कलाओं में रुचि रखते हैं।

आर्द्रा नक्षत्र

यदि आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र में हुआ है तो अध्ययनशीलता के साथ इनमें व्यापारिक बुद्धि होती है, इनकी बुद्धि अन्तर्मुखी होती है। आप सभी की सुनते हैं परन्तु करते वही हैं जो दिल कहता है, आप रहस्यवादी व्यक्ति हैं, आपके मन की थाह पा लेना बहुत कठिन है इसके विपरीत आप दूसरों के मन की बात को तुरन्त भांप लेते हैं। इस राशि वाले जातक व्यापारिक संस्थाओं में अधिकतर Salesman, or जनसम्पर्क के लिये नियुक्त किये जाते हैं, ऐसे व्यक्ति सरकारी क्षेत्र में भी Public Dealing कार्यों में देखे गये हैं। रौबीले व सख्त अनुशासनात्मक कार्य कलाप इनके बस का खेल नहीं है। ये शारीरिक प्रेम की अपेक्षा मानसिक श्रम पर ज्यादा जोर देते हैं, क्योंकि यह राशि वायु तत्त्व प्रधान है।

आर्द्रा के चारों चरणों के फल-

रौद्रर्क्ष प्रभवो बालो भवेत्पाद चतुष्टये
व्यथी दरिद्री स्वल्पायु तस्करस्तु यथा क्रमम्॥

प्रथम चरण में–नवांशेश, गुरु और उप नक्षत्र स्वामी राहु का प्रभाव चंद्र पर या लग्न पर पड़ेगा। अत: जातक धनकारक गुरु का राहु प्रभाव से खर्च करेगा। अत: बहुत खर्चीला होगा।

द्वितीय चरण में–नवांशेश शनि का राहु व उपनक्षत्र स्वामी शनि से संबंध बनेगा। अत: मिथुन राशि का चंद्र यदि आर्द्रा के द्वितीय पाद में आ गया तो निर्धन बना देगा या धन की कमी करेगा।

तृतीय चरण में–इसमें भी नवांशेश शनि का चंद्र+बुध+शुक्र+सूर्यादि से संबंध बनेगा। अत: यह आयु पर प्रभाव करके शारीरिक कष्ट या अल्प आयु देगा।

चतुर्थ चरण में–नवांशेश गुरु का चंद्र से योग तो बनता है परन्तु राहु+चंद्र योग भी है। उपनक्षत्रों में मंगल प्रभाव पड़े तो व्यक्ति तस्कर बनता है। अत: छुपाने की या चोरी करने की आदत जातक में होगी।

मिथुनलग्न में उत्पन्न जातक विनम्र, उदार एवं हास्य प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा बुद्धिमत्ता का भाव उनके चेहरे से परिलक्षित होता है। इनमें स्वाभिमान का भाव विद्यमान रहता है तथा यह भौतिक सुख साधनों एवं धनैश्वर्य से सम्पन्न रहते हैं। वे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यों को अत्यंत ही सोच समझ कर सम्पन्न करते हैं तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से उनका सम्पर्क बना रहता है। संगीत एवं कला के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा नवीन सिद्धान्तों या मूल्यों का प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त गणित लेखन या संपादन के क्षेत्र में इनको सफलता प्राप्त होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक संतुष्टि भी बनी रहेगी। अपने समस्त सांसारिक महत्त्व के कार्यों को आप बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही जीवन में स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा आप धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा आप सरकारी कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा वाणी में भी मधुरता रहेगी साथ ही शांति विनम्र एवं हास्य प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में समर्थ रहेंगे। कला एवं संगीत के प्रति आप रुचिशील रहेंगे तथा प्रयत्न से आपको इस क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है। लेखन, गणित, सम्पादन या व्यापार संबंधी कार्यों में आप उन्नति प्राप्त करके समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ रहेंगे।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में सफल होंगे तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे। फलतः अपनी विद्वत्ता से समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव होगा तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। आप अवसरानुकूल सामाजिक जनों के मध्य उदारता तथा दानशीलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलतः आपके सामाजिक प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में सतत् वृद्धि होती रहेगी। आप धर्म के ज्ञाता होंगे तथा गूढ़-से-गूढ़ विषय को हृदयंगम करने में समर्थ होंगे।

व्यापार के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी तथा इसके द्वारा आप धनवान एवं विख्यात होंगे। संगीत एवं कला में भी आप समयानुसार अपनी रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप सांसारिक ऐश्वर्य से युक्त होंगे। तथा सामान्यतया आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता से युक्त रहेगा। इस प्रकार आप शांत, उदार, हास्य प्रवृत्ति युक्त एवं विद्धान पुरुष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनर्वसु नक्षत्र

यदि आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ है तो आप सबसे प्रेम करते हैं परन्तु बहुत कम व्यक्ति स्नेह पूर्ण व्यवहार को समझ पाते हैं, प्राय: इनके प्रेम का संबंध लोग कायरता से जोड़ देते हैं। इनके कई गुप्त शत्रु होते हैं। इनके कई संतान होती हैं परन्तु उनमें आपस में या माता पिता के प्रति विद्वेष की भावना हो जायेगी। सहयोगी, पड़ौसी व ससुराल पक्ष में ऐसे जातक के प्रति षडयंत्रकारी वातावरण बनते रहते हैं, आपको निकटतम मित्र से विश्वासघात की आशंका बनी रहती है, आप सतर्क रहें।

चरण	अंश	नवांशेश	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	23.20.0	मंगल	गुरु शनि बुध	20.0.0 से 21.46.40 21.46.40 से 23.53.20 23.53.20 से 25.46.40
द्वितीय	26.40.0	शुक्र	केतु शुक्र	25.46.40 से 26.33.20 26.33.20 से 28.46.40
तृतीय	30.0.0	बुध	सूर्य चंद्र	28.46.40 से 29.26.40 29.26.40 से 30.0.0

यह नक्षत्र मिथुन राशि के 20 अंश से कर्क राशि के 3.20 अंश तक रहता है। अत: गुरु इसका स्वामी है। इसमें 3 चरण तक तो मिथुन राशि ही है। अत: चंद्र+बुध+गुरु का प्रभाव रहेगा। आगे चौथे चरण में चंद्र+गुरु+चंद्र का प्रभाव बनेगा। अत: जातक मूर्ख, धनबल का अभिमानी पर प्रसिद्ध कवि और कामातुर बनता है। यह संपूर्ण नक्षत्र फल है।

"मूढ़ात्मा च पुनर्वसौ धनबलस्यात्: कविः कामुक:"

पुनर्वसु नक्षत्र में चरणगत चंद्र के फल

प्रथम चरण में—गुरु+चंद्र और नवांश में मंगल का संयोग है तीनों ही परस्पर मित्र होने से जातक खूब सुखी रहेगा।

द्वितीय चरण में—इसमें गुरु+चंद्र+शुक्र संयोग होने से जातक विदुषी होगा।

तृतीय चरण में—इसमें गुरु+चंद्र+बुध संयोग होने से बुध की चंद्र व गुरु से शत्रुता के कारण जन्म लेने वाली जातिका रोगिणी होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संपूर्ण फल

इस तरह मिथुन राशि का फल सूक्ष्मतर बनता है। अतः इस राशि में जन्म लेने वाली स्त्री कफ, वात और पित्त प्रकृति वाली बनेगी, कुछ अल्प बुद्धि वाली और छोटे लेकिन पुष्ट शरीर वाली एवं प्रायः गौरवर्ण वाली होगी। यह अपने धर्म में विशेष श्रद्धा रखेगी और प्रायः मीठा वचन बोलकर अपना काम निकालेगी। उसका स्वास्थ्य भी साधारण होगा। 1 व 7 वर्ष की उम्र में जल भय, 24वें वर्ष में बीमारी का योग है। यानि 3-5-8-11-20-28 व 45 वर्ष की आयु में भी कष्ट रहेंगे। अगर लम्बी आयु बनती हो तो 76 वर्ष तक जा सकती है। आयु भवन के संयोग लग्नगत स्वभाव से सही नहीं बैठते हैं पर रोगों से बचें तो ऐसा संभव है। अंत में त्रिदोष से या जल से या विष से मृत्यु संभावित है। इस लग्न में मंगल व गुरु मारक बनते हैं।

इस लग्न में या चंद्र लग्न में शुक्र प्रधान ग्रह है। शुभ ग्रह शुक्र ही बनता है। मंगल, गुरु, सूर्य व शनि पापी बनते हैं। केन्द्राधिपत्य दोष बुध व गुरु को लगता है। मिश्रफलकर्त्ता चंद्र (सम) है। बुध भी मिश्रफल कर्ता है। राजभंग योग करने वाला शनि और सप्तमेश गुरु बाधक ग्रह बनता है।

राजयोग भंग संबंध गुरु+मंगल दशमेश लाभेश संबंध से होगा। चंद्र भी मारक बनता है पर सम है। यदि शुक्र+गुरु+मंगल संयोग हो तो राजयोग भंग नहीं होगा।

रोग

मिथुन राशि में बुध प्रभावी हो और साथ में तीसरे भाव तृतीयेश पर भी पाप प्रभाव हो तो काल पुरुष की तीसरी राशि का अंग सांस की नली के रोग, दमा व खांसी बनते रहेंगे वायु तत्त्व का नुकसान होगा।

खराब दशा

यहां पर षष्ठेश एकादशेश बनकर मंगल ज्यादा पापी है। गुरु के बाधक ग्रह होने से इन दोनों की दशाएं खराब ही जायेंगी।

शुभ योग

बुध+सूर्य युति से शुभ योग बनेंगे चाहे स्थान परिवर्तन हो या तीसरे भाव में भी बैठ जायें बुध+शुक्र भी शूल योग बनायेंगे।

पागलपन

बुध+चंद्र पाप प्रभावी हो व शुक्र भी पाप दृष्ट हो तो पागलपन बनेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरण	अंश	नवांशेश	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	10.0.0	गुरु	राहु	6.40.0 से 8.40.0
	10.0.0	गुरु	गुरु	8.40.0 से 10.26.40
द्वितीय	13.20.0	शनि	शुक्र	10.26.40 से 12.33.20
			बुध	12.33.20 से 14.13.20
			केतु	14.26.40 से 15.13.20
तृतीय	16.40.0	शनि	शुक्र	15.13.20 से 17.26.40
			सूर्य	17.26.40 से 18.6.20
चतुर्थ	20.0.0	गुरु	चंद्र	18.6.20 से 19.13.20
			मंगल	19.13.20 से 20.0.0

लग्न में, पाप ग्रह में यदि मंगल हो तो कुण्डली प्रबल मांगलिक होगी।

लग्नेश धन में धनेश लग्न में हो श्रेष्ठ योग होगा परन्तु कुण्डली मांगलिक होने के कारण जातिका शीघ्र विधवा तो होगी पर विश्व प्रसिद्ध महिला बनेगी। चंद्र+मंगल की युति से कीर्ति योग बनेगा। कुण्डली में मंगल से मांगलिक शनि से भी है। बाधक ग्रह गुरु षष्ठ में है स्वगृही सूर्य भी श्रेष्ठ श्रम करने वाला रहा। अत: विश्व प्रसिद्ध होने पर भी मिथुन लग्न में उत्पन्न नारी अति कठोर हो सकती है, पर व्यंग करने में चतुर होती है। ऐसी स्त्री कार्य करने में असंतुष्ट रहती है। भोग विलास का सुख खूब प्राप्त करती है व शौकीन भी होती है। परिवार वालों से बैर शीघ्र मोल ले लेती है। वही पहले वाला श्लोक इसमें भी काम करेगा। ''मूर्ती करोति विधवा दिनकर जश्य'' सूर्य और मंगल में से लग्न में कोई भी हो वैधव्य देंगे ही। अन्य पाप ग्रह राहु, शनि भी दुष्ट फल करेंगे। लग्नेश बुध पष्ठ में राहु अधिष्ठित राशि का होगा तो त्वचा रोग भी देगा।

उपाय

ऐसे व्यक्ति को बुध रत्न पहनकर अर्थात् पन्ना पहनकर स्वास्थ्य व धन को कमाना चाहिए। बुध के साथ-साथ शुक्र का रत्न भी धारण करना चाहिए।

स्वभाव

मुख्यत: इसका स्वभाव दो विरोधी पक्षों से मेल रखकर चलने का होगा। जातक की तबीयत रंगीन रहेगी तथा चौथे घर में नीच का ही सही शुक्र जातक को

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालीन स्वभाव बनाता है अन्य शुभ ग्रह हो तो शालीन स्वभाव रहेगा। लग्न मिथुन या कन्या का नवांश आये तो स्वभाव सुन्दर रहेगा। चेहरे पर प्रसन्नता झलकती रहेगी।

अन्य बातें

- मिथुन राशि या लग्न वाली जातिका का व्यक्तित्व विद्रोही होता है। वह कठोर परिश्रमी भी होती है। इतना सब कुछ होने पर भी वह सब कुछ प्राप्त नहीं कर सकती है। जिसकी वह अधिकारिणी होती है, परन्तु जातिका अत्यधिक साहसी होती है।
- जातिका आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामिनी होती है। वह बाधाओं का सामना आसानी से कर सकती है।
- जातिका की पढ़ने लिखने में रुचि होती है। पुस्तक व्यवसाय या मैकेनिकल कार्य में उसकी रुचि होती है। जातिका जोखिम उठाने को तत्पर रहती है।
- जातिका का विचार करने का तरीका वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत होता है।
- व्यक्ति चतुर व चालाक, वाचाल एवं कुशल व्यापारी होता है।
- संगत का असर शीघ्र होता है।
- जातिका दूसरे की मंशा शीघ्र समझने वाली व बुद्धिशाली होती है व तर्क पर सबको कसेगी।
- जातिका नाच-गान, मनोरंजन व विलास की शौकीन होगी।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,लू	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ड,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरू	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरू	16

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेष	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरू	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरू	16

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरू	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरू	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ. वा.	भे	धनु	गुरू	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. वा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,चो,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरू	16

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरू	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरू	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरू	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19,
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरू	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानंने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विन	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
कर्क	8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेष	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
धनु	19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	25.	पूर्वा भा.	अजेकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
	26.	उ. भा.	अहिर् बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि

1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि

3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	चू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/10/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ड़	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	मं.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हू	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु.
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंह राशि

10. मघा (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	चं.

11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	मं.

12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी.	5/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

13. हस्त (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	मं.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	चं.

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पे	5/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
–	–	–	–

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मिथुनलग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–2/3/20 से 2/3/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–का
11. **वर्ग**–बिलाड
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्य प्रिय एवं भोगी होता है।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रूका हुआ रहेगा। बुध व मंगल की दशा अशुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–3

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **नक्षत्र अंश**–2/30/20 से 2/3/20 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–का
11. **वर्ग**–बिलाड
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्य प्रिय एवं भोगी होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक लग्नबली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–2/30/20 से 2/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–का
11. **वर्ग**–बिलाड
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्यप्रिय एवं भोगी होता है।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/30/20 से 2/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–की
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व
18. **प्रधान विशेषता**–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अत: इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलत: जातक धनधान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश बुध की दशा अच्छा फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/3/20 से 2/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–की
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम
18. प्रधान विशेषता–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अत: इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलत: जातक धन धान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/3/20 से 2/6/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–की
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम
18. प्रधान विशेषता–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अत: इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलत: जातक धन धान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति की युति से चाण्डाल योग बनता है। अत: इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–2/6/40 से 2/10/0 तक

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–श्वान

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आदि

9. नक्षत्र देवता–शिव

10. वर्णाक्षर–कु

11. वर्ग–बिलाव

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा भाग्योदय करायेगी। आवक के जरिए खुलेंगे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अत: इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा भाग्योदय करायेगी। नौकरी मिलेगी।

मिथुनलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–घ
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–दरिद्री

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अत: दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि व बृहस्पति की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आदि
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–घ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अत: दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि व बृहस्पति की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–घ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अत: दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोतर उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–घ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अत: दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–2/13/20 से 2/16/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–ड
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र से जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र मत है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। राहु भी शुभ फल देगा। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–2/13/20 से 2/16/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–ड
11. **वर्ग**–बिलाव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। राहु की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र—आर्द्रा
2. नक्षत्र पद—3
3. नक्षत्र अंश—2/13/20 से 2/16/40 तक
4. वर्ण—शूद्र
5. वश्य—द्विपद (नर)
6. योनि—श्वान
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—शिव
10. वर्णाक्षर—ड
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी है तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्णबली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–ड
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/16/40 से 2/20/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–छ
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तस्करतु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/16/40 से 2/20/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–छ
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्करतु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/20/0 तक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–छ
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्कस्तु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/20/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–छ
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्कस्तु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा

मिथुनलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–2/20/0 से 2/23/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–के
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न बाईस से तैईस अंशों में अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा में गृहस्थ व नौकरी क़ा सुख मिलेगा।

मिथुनलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–2/20/0 से 2/23/0 तक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–मार्जार

7. गण–देव

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–शिव

10. वर्णाक्षर–के

11. वर्ग–बिलाव

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता शिव तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न तेइस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा में गृहस्थ व नौकरी का सुख मिलेगा।

मिथुनलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–2/23/0 से 2/26/40 तक

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद (नर)

6. योनि–मार्जार

7. गण–देव

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–अदिति

10. वर्णाक्षर–के

11. वर्ग–बिलाव

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। मंगल मिश्रित फल देगा पर बुध की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/23/0 से 2/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–मार्जार
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अदिति
10. **वर्णाक्षर**–के
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। मंगल मिश्रित फल देगा। गुरु की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–2/23/0 से 2/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–मार्जार
7. **गण**–देव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—अदिति
10. वर्णाक्षर—को
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—विद्वान

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। बृहस्पति देवताओं के आचार्य हैं तथा शुक्र दैत्यों के आचार्य हैं। अतः दोनों आचार्यों से संबंध रखने वाला जातक विद्वान् होगा।

यहां लग्न छब्बीस से सताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र—पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद—2
3. नक्षत्र अंश—2/20/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण—शूद्र
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—मार्जार
7. गण—देव
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—अदिति
10. वर्णाक्षर—को
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—विद्वान

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। बृहस्पति देवताओं के आचार्य हैं तथा शुक्र दैत्यों के आचार्य हैं। अतः दोनों आचार्यों से संबंध रखने वाला जातक विद्वान् होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहां लग्न सत्ताईस से अठ्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/26/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–ह
11. वर्ग–मीढा
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–रोगान्वित्

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के तृतीय चरण का स्वामी बुध है जो बृहस्पति का शत्रु है। अतः ऐसा जातक रोगी होगा कोई न कोई बीमारी उसे लगी रहेगी।

यहां लग्न 28 से 29 अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीनबली' है। उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। नक्षत्र स्वामी बृहस्पति एवं नक्षत्र चरणस्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। फलतः बृहस्पति एवं बुध दोनों की दशाएं नेष्टफल देंगी।

मिथुनलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/26/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. वर्णाक्षर–ह

11. वर्ग–मीढा

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–रोगान्वित्

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के तृतीय चरण का स्वामी बुध है जो बृहस्पति का शत्रु है। अतः ऐसा जातक रोगी होगा तथा कोई न कोई बीमारी उसे लगी रहेगी।

यहां लग्न 29 से 30 अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था (Combust) में है। निस्तेज है। नक्षत्र स्वामी बृहस्पति एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। फलतः बृहस्पति एवं बुध दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न और आयुष्य योग

1. मिथुनलग्न के लिये चन्द्रमा मारकेश होते हुए भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मंगल, गुरु अशुभ है। सूर्य परमपापी है। आयुष्य प्रदाता ग्रह बुध है।
2. मिथुनलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु जल से, अधिक रक्त बह जाने से, वाहन से, भयानक दुर्घटना से अथवा हृदय रोग से सम्भव है।
3. मिथुनलग्न वालों की औसत आयु 75 वर्ष की मानी गई है। इनके जन्म के उपरान्त 3 माह, 6 माह, 1, 3, 6, 10, 11, 18, 20, 24, 26, 33, 40, 46, 53, 58, 62 और 63 वर्ष में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु का भय रहता है।
4. मिथुनलग्न में मंगल लग्न से पूर्वार्द्ध (2 से 7 तक) में हो, तथा उत्तरार्द्ध दूसरे भाग (7 से 12) में बृहस्पति हो, केन्द्र स्थानों में शुक्र एवं बुध उच्च का हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
5. मिथुनलग्न में शनि आठवें हो तो जातक दीर्घायु को भोगता है।
6. मिथुनलग्न में शनि उच्च का पंचम भाव में जातक को दीर्घायु देता है।
7. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि लग्न में, गुरु एवं शुक्र के द्वारा दृष्ट हो तो जातक 100 वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
8. मिथुनलग्न में चन्द्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुम्भ राशि में हो तथा अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियों में हों तो जातक 90 वर्ष की उत्तम आयु को भोगता है।
9. मिथुनलग्न में चन्द्रमा छठे वृश्चिक का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
10. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
11. मिथुनलग्न में शनि मेष का, मंगल तुला का पांचवें एवं सूर्य सातवें हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. शनि लग्न में, कन्या का चन्द्र चौथे, मंगल सातवें और सूर्य दसवें, किसी भी शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
13. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चन्द्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
14. मिथुनलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चन्द्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
15. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
16. मिथुनलग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
17. मिथुनलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
18. मिथुनलग्न में शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।
19. मिथुनलग्न के चौथे स्थान में राहु एवं छठे स्थान में चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
20. मिथुनलग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51वें वर्ष में फांसी के द्वारा होती है।
21. मिथुनलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।
22. मिथुनलग्न में सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

23. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+मंगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो बालारिष्ट योग बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही गुजर जाता है।
24. मिथुनलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, गुरु पंचम या अष्टम में हो, अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।
25. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+राहु+बृहस्पति+मंगल हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसके शरीर में शारीरिक रूग्णता बनी रहती है।
26. मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृ घातक होता है।
27. मिथुनलग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।
28. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।
29. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
30. मिथुनलग्न में चन्द्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो, शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
31. मिथुनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा और शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न और रोग

1. मिथुनलग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जल स्राव से अंधा होता है।
2. मिथुनलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश बुध पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. मिथुनलग्न में चतुर्थेश बुध यदि अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मिथुनलग्न में चतुर्थेश बुध कर्क या मीन राशि में हो एवं अस्त हो तो जातक को तीव्र हृदय रोग होता है।
5. मिथुनलग्न में शनि चौथे कन्या का, षष्टेश मंगल एवं सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग है।
6. मिथुनलग्न में चतुर्थ एवं पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. मिथुनलग्न में कन्या का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य नवमें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
8. मिथुनलग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. मिथुनलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हार्ट-अटैक होता है।
10. मिथुनलग्न में बुध+शनि+मंगल की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से जातक की मृत्यु होती है।
11. मिथुनलग्न में पाप ग्रह हो, लग्न का स्वामी बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. मिथुनलग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
13. अष्टमेश शनि लग्न में एवं लग्नेश बुध अष्टम में हो लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।
14. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध चौथे या द्वादश भाव में शनि+मंगल के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।
15. मिथुनलग्न में शनि+चंद्रमा से युत होकर बृहस्पति छठे भाव में स्थित हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।
16. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. मिथुनलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
19. मिथुन लग्न में शनि+ मंगल हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त होता है।
20. मिथुनलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
21. मिथुंनलग्न में शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।
22. मिथुनलग्न के चौथे स्थान में राहु एवं छठे स्थान में चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
23. मिथुनलग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चंद्रमा पाप ग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51वें वर्ष में फांसी के द्वारा होती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

24. मिथुनलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

25. मिथुनलग्न में सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

26. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+मंगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही गुजर जाता है।

27. मिथुनलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हों, गुरु पंचम या अष्टम में हो, अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

28. मिथुनलग्न के आठवें स्थान मे सूर्य+राहु+बृहस्पति+मंगल हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसके शरीर में शारीरिक रुग्णता बनी रहती है।

29. मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक 'मातृ घातक' होता है।

30. मिथुनलग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

31. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

32. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. मिथुनलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो, शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. मिथुनलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

□□□

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न और विवाह योग

1. लग्न से सप्तम भाव के मध्य सूर्य, मंगल, शनि हों तो जातक की स्त्री को वैधव्य भोगना पड़ता है।
2. स्त्री की कुण्डली में मंगल सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री पुरुष रक्त, कुकर्म तत्पर व सौभाग्यहीन होता है।
3. मिथुनलग्न में कर्क का चंद्रमा एवं धनु का बृहस्पति सप्तम में हो तो वह स्त्री विश्व सुन्दरी का मुकुट धारण करती है।
4. बुध सातवें स्थान में शनि युक्त हो तो पति नपुंसक होता है।
5. सप्तमेश अपने मूल त्रिकोण में हो तथा धनेश के साथ हो और लग्नेश अपनी उच्च राशि में हो तो जातक का विवाह उच्च कुल में होता है तथा जातक का 18वें वर्ष में भाग्योदय होता है।
6. सप्तम में सूर्य, मंगल, चंद्र या शनि हो तो जातक अन्य जाति की लड़की से विवाह होता है।
7. मंगल, शनि सप्तम में हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा किसी राशि में पुरुष ग्रह व स्त्री ग्रह दोनों एक साथ बैठे हों तो वृद्धावस्था में अधिक उम्र की स्त्री प्राप्त होती है।
8. क्रूर ग्रह अष्टम में वैधव्य करता है, वह वैधव्य किस वय में होगा इसका निर्णय अष्टम स्थान का स्वामी जिस नवाशं में हो उस नवाशं स्वामी ग्रह की अवस्था में वैधव्य योग होता है।
9. मिथुनलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
10. मिथुनलग्न में शनि द्वादशस्थ या अष्टमस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. मिथुनलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश गुरु बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
12. मिथुनलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र की युति कहीं भी हो, सप्तमेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
13. मिथुनलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चन्द्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो जातक का विवाह नहीं होता।
14. मिथुन लग्न में राहु हो तथा शुक्र मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वन्ध्या) राशिगत हो तो विवाह विलम्ब से होता है तथा जीवन साथी से तृप्ति नहीं मिलती।
15. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।
16. मिथुनलग्न में द्वितीयेश चन्द्रमा अस्त हो, द्वितीय भाव में वक्री ग्रह स्थित हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।
17. मिथुनलग्न में सप्तमेश बृहस्पति वक्र हो, सप्तम भाव में कोई भी ग्रह वक्री हो या किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।
18. मिथुनलग्न में बृहस्पति यदि स्वराशिगत, उच्चराशिगत या उच्चाभिलाषी हो तो जातक एक पत्नीव्रत व भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। 34 वर्ष की आयु में जातक को विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ससुराल से प्रचुर धन व मान मिलता है।
19. मिथुनलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहनकर परपुरुषों का संग करती है एवं कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।
20. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल लग्न में बुध के साथ हो तो ऐसा जातक स्त्री सहवास योग्य नहीं रहता अर्थात् नपुंसक होता है।
21. मिथुनलग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की महिला होती है।
22. मिथुनलग्न में सूर्य, मंगल, गुरु, चन्द्र. बुध व शुक्र तथा शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।
23. मिथुनलग्न में बुध स्वगृही लग्न में हो साथ में अष्टमेश शनि भी हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

□□□

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न और धन योग

मिथुनलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिये धन प्रदाता ग्रह चन्द्रमा है धनेश चन्द्र की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, चन्द्रमा एवं धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश बुध, पंचमेश शुक्र, भाग्येश शनि एवं लग्नेश मंगल की अनुकूल स्थितियां मिथुनलग्न वालों के लिए धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में पूर्णरूप से होती है।

वैसे मिथुनलग्न के लिए मंगल, गुरु और सूर्य अशुभ हैं। अकेला शुक्र शुभ है। चन्द्रमा मारकेश होते हुए भी मारक का काम नहीं करेगा। रवि निष्फल है। मंगल षष्टेश और लाभेश होने से अशुभ और राजयोग भंग करने वाला बन गया है। मिथुनलग्न में गुरु को केन्द्राधिपत्य दोष लगने से वह शुभ फल नहीं दे पाता। शनि अष्टमेश व नवमेश होने से पूर्ण योग फलदायक नहीं है। सूर्य व मंगल परम पापी हैं।

सफल योग– 1. बुध+शुक्र

निष्फल योग– 1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. बुध+शनि,

अशुभ योग– 1. बुध+मंगल 2. बुध+गुरु 3. बुध+सूर्य

राजयोग कारक–बुध, शुक्र, चन्द्र।

लक्ष्मी योग–मंगल नवम में, शुक्र सप्तम में, चन्द्रमा केन्द्र-त्रिकोण में।

विशेष योगायोग

1. मिथुनलग्न में चन्द्रमा कर्क या वृष राशि में हो तो जातक धनवान होता है।
2. मिथुनलग्न में चन्द्रमा शनि के घर कुम्भ राशि में हो एवं शनि चन्द्रमा के घर कर्क राशि में हो तो जातक अपने भाग्य के बल पर खूब रुपया कमाता है तथा लक्ष्मीपति होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. मिथुनलग्न में पंचम स्थान में शुक्र हो, लाभ स्थान में मंगल हो तो, व्यक्ति बहुत सारी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता हुआ प्रतिष्ठित धनवान होता है।
4. मिथुनलग्न में बुध हो, बुध के साथ शुक्र या शनि हो अथवा शुक्र, शनि लग्न को देखते हों तो व्यक्ति शहर का प्रतिष्ठित धनवान होता है तथा अपने स्वयं के पुरुषार्थ से आगे बढ़ता है।
5. मिथुनलग्न में शनि कुम्भ का तुला राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली कहलाता है।
6. मिथुनलग्न में चन्द्रमा मेष राशि में तथा मंगल कर्क राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठे हों तो ऐसा जातक महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।
7. मिथुनलग्न में बृहस्पति यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा चन्द्रमा स्वगृही होकर धन स्थान में मंगल के साथ हो या मंगल चन्द्रमा के सामने भाग्य स्थान (कुम्भ राशि) में हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी व्यक्ति 28 वर्ष की आयु के बाद भारी धन-सम्पत्ति का स्वामी हो जाता है।
8. मिथुनलग्न में लग्नस्थ बुध, गुरु या शनि से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है।
9. मिथुनलग्न हो, स्वराशि का शुक्र पंचम भाव में हो, शनि लाभ स्थान में हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।
10. मिथुनलग्न में बुध मेष राशि में हो तथा मंगल लग्न में हो तो जातक 53वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धन लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
11. मिथुनलग्न हो, लग्नेश बुध, धनेश चन्द्र, भाग्येश शनि तथा लाभेश मंगल अपनी-अप्रनी उच्च एवं स्वराशियों में हों तो जातक करोड़पति होता है।
12. मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में राहु, शुक्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है।
13. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो ''धनहीन योग'' की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार ऐसे जातक के पास धन नहीं ठहर पाता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु जातक को गले में अभियंत्रित 'चंद्र यंत्र' धारण करना चाहिये।

14. मिथुनलग्न में धनेश चंद्रमा यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से भी रुपया निकल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।
15. चन्द्रमा स्व का हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।
16. द्वितीयेश उच्च स्थान में बैठा हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।
17. षष्ठेश, पंचमेश की युति होने से दरिद्र योग बनता है।
18. बुध सप्तम भाव में हो तथा द्वादशेश चतुर्थ भवन में हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।
19. बलवान धनेश सातवें हो तथा शुक्र द्वारा देखा जाता हो तो ससुराल से धन की प्राप्ति होती है।
20. यदि धन व चन्द्रमा 10वें स्थान पर हो तो यकायक अर्थ प्राप्ति होती है।
21. मिथुनलग्न में गुरु, शनि व मंगल लग्न में हों तो जमींदार योग होता है।
22. दिन का जन्म हो, मिथुनलग्न हो, चन्द्रमा मित्र के नवांश में हो तो धन-सुख मिलता है।
23. मिथुनलग्न हो, गुरु, चंद्र की युति कर्क में हो तो गजकेसरी योग होता है। जातक विवेकी, सद्गुणी, नम्र तथा धनी होता है।
24. मिथुनलग्न हो, शनि स्व (कुंभ) का त्रिकोण में पड़ा हो तथा दशमेश गुरु पंचम भाव में बैठकर सुरपति योग बनाता है। ऐसा जातक अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है।
25. मिथुनलग्न में मंगल लाभ स्थान में यदि मेष राशि का हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।
26. मिथुनलग्न में सुखेश बुध, लाभेश मंगल नवम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।
27. मिथुनलग्न में गुरु+चन्द्र की युति कर्क, कन्या, तुला या कुम्भ राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

28. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा अष्टम में एवं अष्टमेश शुक्र धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन कमाता है।

29. मिथुनलग्न में तृतीयेश सूर्य लाभस्थान में एवं लाभेश मंगल तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

30. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र के साथ यदि चतुर्थेश बुध की युति हो तो व्यक्ति माता, वाहन व नौकरों के द्वारा धन अर्जित करता है।

31. मिथुनलग्न में तृतीयेश सूर्य उच्च का लाभ स्थान में हो तथा लग्नेश लाभेश का परस्पर परिवर्तन योग हो तो जातक प्रकाशन कार्य एवं बुद्धि वैचित्रय से करोड़ों रुपये कमाता है।

32. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा (धन भाव) अर्थात् अपने घर को देखता हो। लग्नेश बुध उच्च का केन्द्र में हो। लग्न स्थान या लग्नेश पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक कुबेर के समान करोड़ों का स्वामी होता है।

33. मिथुनलग्न में यदि बलवान चन्द्र पंचमेश शुक्र के साथ हो, धन भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र संतान द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

34. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र यदि षष्टेश मंगल के साथ हो तथा धनेश चन्द्र शनि से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के मान-मर्दन से धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

35. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

36. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की नवमेश शनि के साथ युति हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो ऐसे जातक को राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी अनुबंध (ठेके) से काफी धन की प्राप्ति होती है।

37. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की दशमेश गुरु से युति हो तो जातक को पैतृक, सम्पत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

38. मिथुनलग्न में दशम भवन का स्वामी बृहस्पति यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक जन्म स्थान पर नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

39. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य वृश्चिक, मकर या वृष राशि में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

40. मिथुनलग्न के द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

41. मिथुनलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चन्द्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

42. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्र अस्त हो, नीच राशि (वृश्चिक) में हो, तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

43. मिथुनलग्न में लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत तथा पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

44. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि वक्री होकर कहीं बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। सावधान रहें।

45. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न एवं संतान योग

1. मिथुनलग्न में चन्द्रमा तुला का पंचम भाव में हो तो जातक के पुत्र होता है।
2. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र यदि आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
3. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र अस्त हो या पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
4. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र लग्न (मिथुन राशि) में हो तथा बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
5. मिथुनलग्न में शुक्र लग्न में हो तथा लग्नेश बुध पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो जातक दूसरे की सन्तान गोद लेता है तथा उसको अपने बच्चे की तरह पालकर अपने धन का स्वामी बनाता है।
6. मिथुनलग्न में पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक के छः कन्याएं होती हैं।
7. मिथुनलग्न में सूर्य पंचम में हो तथा मकर या कुम्भ के नवमांश में पाप पीड़ित हो तो जातक को पितृश्राप का दोष होता है। जिसके कारण उसे पुत्र सन्तान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा मे ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हों तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध द्वितीय स्थान में तथा पंचमेश शुक्र पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
13. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
14. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र की सप्तमेश गुरु के साथ युति हो जातक को प्रथम सन्तान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
15. सप्तमेश गुरु व तृतीयेश सूर्य की अन्यान्याश्रित योग होने से जातक के सन्तान बहुत होती है।
16. शुक्र कन्या का तथा सूर्य पंचम भाव में होने पर जातक के कन्याएं अधिक होती हैं।
17. शुक्र धनु का, चंद्र मीन का तथा कन्या राशिस्थ शनि, मंगल, राहु हो तो जातक के संतान नहीं होती।
18. गुरु धनु का हो तथा शुक्र, मंगल कहीं भी एक साथ होने पर उस स्त्री को संतान नहीं होती।
19. सप्तम स्थान में शनि, मंगल साथ हो तो स्त्री (जातक) के सन्तान होती ही नहीं।
20. स्त्री जातक के सप्तम भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री दुष्टा होती है। पति से सदा अनबन रहती है तथा सन्तान गुणहीन होती है।
21. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
22. पंचमेश शुक्र निर्बल हो, लग्नेश बुध भी निर्बल हो तो पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्पदोष के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
23. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक ''कालसर्प योग'' के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।
24. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
25. मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चन्द्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हों तो ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र सन्तान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती।

27. मिथुनलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

31. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चन्द्रमा यदि पंचम स्थान में हों तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सन्तानों को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र सन्तान नहीं होती।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न और राजयोग

1. मिथुनलग्न वाले मनुष्य के लग्न में यदि राहु और सिंह का मंगल पराक्रम स्थान में बैठा हो उच्च या मेष का सूर्य एकादश स्थान में विराजमान हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. लग्न में बुध, कर्क का चन्द्रमा धन भाव में, पराक्रम में सिंह का सूर्य और दशम में मीन का बृहस्पति हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का गुरु दूसरे भाव में, उच्च का बुध चतुर्थ भाव में और उच्च का सूर्य एकादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ पंचम भवन में हो, स्वगृही बृहस्पति सप्तम में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. स्वगृही सूर्य तृतीय स्थान में बैठा हो तथा उच्च का बृहस्पति स्वगृही चन्द्रमा के साथ धन भाव में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के पंचम स्थान में हो और उच्च का सूर्य के साथ स्वगृही मंगल एकादश भवन में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का शुक्र दशम, उच्च का सूर्य एकादश, उच्च का बुध चतुर्थ और उच्च का शनि पंचम में हो तो राजयोग करता है।
8. यदि मिथुन का शुक्र लग्न में हो, कर्क का स्वगृही पूर्ण चन्द्रमा धन (दूसरे) स्थान में हो, सिंह का बृहस्पति तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य अपने पराक्रम से धनी होता है तथा कीर्ति पाता है।
9. सूर्य एकादश भाव में, मंगल मृत्यु भवन में हो, शनि उच्च का हो तथा बुध त्रिकोण में हो तो जातक अवश्य ही मंत्री बनता है या राज्यपाल होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. शुक्र, लग्नेश व दशमेश, दशम भाव में हो तो जातक अवश्य राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है। हां, मंगल अवश्य ही 10वें भावस्थ होतो।
11. शुक्र पंचम भाव में, मंगल स्व का मेष में, गुरु द्वितीय भाव में हो तो जातक अवश्य ही शासन में उच्च पद प्राप्त करता है।
12. लग्नेश सप्तमेश की किसी केन्द्र में युति हो तथा गुरु उसे देखता हो तो उत्तम राज्ययोग होता है।
13. सभी ग्रह परमोच्च में हों तथा बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक देश का सर्वश्रेष्ठ पद संभावलता है।
14. लग्न में बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र की युति हो तथा उस पर पाप ग्रहों की छाया न हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।
15. बुध सुख भाव में, गुरु 10वें तथा शुक्र त्रिकोण (5वें) में हो तो जातक एम.एल.ए. होता है।
16. गुरु कर्क में तथा चन्द्रमा वृष का हो तो जातक नेता बनता है।
17. गुरु या शुक्र उच्च का हो तथा वह चन्द्रमा को पूर्ण सृष्टि से देखता हो तो जातक मंत्री बनता है।
18. शनि मिथुन का, गुरु स्व का सप्तम भाव में तथा शुक्र की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।
19. बुध, शुक्र व गुरु नवम् भाव में हो तथा इन पर मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक राजनीतिज्ञ बनता है।
20. गुरु द्वितीय भाव में तथा चन्द्रमा धनु राशि का हो तो जातंक को उच्च पद की प्राप्ति होती है।
21. शनि अपने कारक स्थान, गुरु, चन्द्र के साथ 7वें स्थान में तथा बुध चतुर्थ भाव में हो तो जातक की उच्च श्रेणी की नौकरी प्राप्त होती है।
22. सुखेश, कर्मेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो जमींदार योग बनता है।
23. लग्नेश बुध पंचम भाव में तथा शुक्र लग्न में हो तो महा राजयोग होता है।
24. बुध, गुरु, शुक्र क्रमशः 4, 7, 10वें स्थान में हों तथा अन्य ग्रह अन्यत्र तो जातक एम.पी. बनता है।
25. सभी ग्रह लग्न व त्रिकोणों में हों तो जातक सेनाध्यक्ष बनता है।
26. मिथुन लग्न हो, गुरु कर्क का, शनि तुला व सूर्य मेष राशि का होने से नृप योग होता है। जातक उच्च शासकीय पद प्राप्त करता है। उदाहरण—मुरारजी देसाई की कुण्डली देखें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

27. मिथुनलग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण, सुन्दरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश, नगर, देखने में व्यस्त राजा होता है।

28. मिथुनलग्न में द्वितीय स्थान में चन्द्रमा, बुध, मेष में गुरु, दशम स्थान में राहु शुक्र हो तो राजयोग होता है।

29. मिथुनलग्न में राहु, सिंह में मंगल हो तो इस योग में जातक घोड़ा, हाथी रखने वाला राजा होता है।

30. मिथुनलग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो लग्न में उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हों, तो राजयोग होता है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

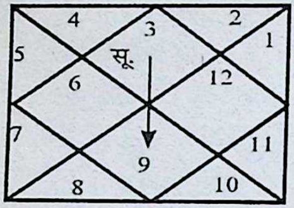

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पर प्रथम स्थान में सूर्य मिथुन राशि का होगा। यह इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक राजा के समान उच्च राज्याधिकारी होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, धार्मिक कार्यों में अग्रणी एवं परम्पराओं का पालक होता है। जातक स्वस्थ शरीर का स्वामी होता है, उसका बौद्धिक स्तर बढ़ा-चढ़ा होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को स्त्री व पुत्र दोनों सुख प्राप्त होंगे।

निशानी–स्वभाव में भावेश होने के कारण किसी से भी शीघ्र टकराव होगा।

दशा–सूर्य की दशा में उन्नति होगी, पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (5 से 7 बजे) के मध्य होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व पराक्रमी व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–जातक अधिक साहसी व हठी होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां स्वगृही होगा। लग्न में बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां पर 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि भी होगी। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलत: ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा। अपने बुद्धिबल एवं वाक् चातुर्य से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–ऐसा जातक आध्यात्मिक व धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–ऐसा व्यक्ति दार्शनिक होता है।
6. **सूर्य+शनि**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक धनवान होगा। जातक की किस्मत पिता की मृत्यु के बाद खुलेगी
7. **सूर्य+राहु**–जातक साहसी एवं राजा तुल्य पराक्रमी होता है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक क्रोधी होता है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

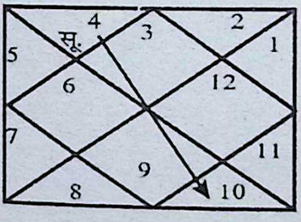

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पर द्वितीय स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा जो कि सूर्य की मित्र राशि है। ऐसा व्यक्ति दानी होता है एवं रुपया खर्च करने में आगे रहता है। ऐसा जातक अपने हुनर व परिश्रम के द्वारा धन कमाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि–द्वितीयस्थ सूर्य यहां अष्टम भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलतः जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी–जातक की परिवारिक उलझनें रहेंगी।

दशा–सूर्य की दशा जातक को धनवान बनायेगी। जातक पराक्रमी होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (6 से 4 बजे) के मध्य होगा। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। बलवान धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने के कारण मित्रमूल धन योग बनेगा। ऐसा जातक कुटम्बी जनों व मित्रों की सहायता से धन अर्जित करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–कुटुम्ब सुख में हानि।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान होगा तथा बाहुबल से खूब रुपया कमायेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा। लग्नेश की अष्टम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–व्यक्ति का ससुराल धनाढ्य एवं पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक आध्यात्मिक, संयमी व संतोषी व्यक्ति होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि), अष्टम भाव (मकर राशि) एवं लाभ स्थान मेष राशि को देखेंगे। फलतः जातक धनी, लम्बी उम्र का स्वामी एवं भाग्यशाली होगा। जातक की आर्थिक स्थिति पिता की मृत्यु के बाद सुधरेगी।
7. **सूर्य+राहु**–धन के घड़े में छेद रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–कुटुम्ब एवं धन संबंध में हानि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

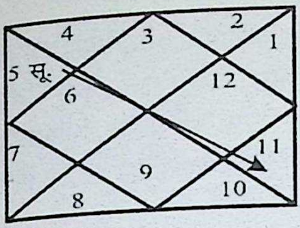

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां तृतीय स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक दौलत का राजा होता है। जातक शूरवीर एवं पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि नवम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक सौभाग्यशाली होता है व अपने भाग्य का निर्माण खुद करता है।

निशानी–मध्यम आयु के बाद जातक की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत हो जाती है। जातक के बड़े भाई की मृत्यु जातक के सामने होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बहुत बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि के समय दो से चार बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। फलत बलवान तृतीयेश की धनेश के साथ युति होने से जातक कुटुम्बी जनों, मित्रों से धन व यश अर्जित करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सहोदर सुख में हानि, बड़े भाई की मृत्यु।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के तृतीय भाव में सिंह राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां पर स्वगृही है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहे हैं। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। भाई-परिजन व मित्रों का बल उसे मिलता रहेगा। जातक भाग्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति या सहयोग से जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. **सूर्य+गुरु**–भाई पराक्रमी होंगे। मित्रों से, राजकीय अधिकारियों से लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–भाई-बहनों का सुख रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्य भाव (कुंभ राशि) एवं व्यय भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक की सन्तति प्रभावशाली होगी। जातक भाग्यशूर एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद बढ़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–कुटुम्ब सुख में हानि होगी व कलह, विवाद रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–पराक्रम में कमी होगी, मित्र पीठ पीछे निन्दा करेंगे।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

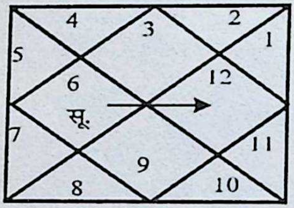

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। चतुर्थ स्थान में सूर्य कन्या राशि में होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। जातक उत्तम भू-सम्पत्ति, जमीन-जायदाद का स्वामी होगा। पर अपने कमाये गये धन का उपयोग स्वयं नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति अपने परम्परागत कार्य से हटकर नये आजीविका के क्षेत्र तलाशता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ सूर्य की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। राज्य पक्ष या राजनीति से लाभ होगा।

निशानी–जातक का जन्म उच्च कुल में होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में भौतिक सुख-उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि बारह बजे के आस-पास होगा। चन्द्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. **सूर्य+मंगल**–भाईयों का सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा तथा 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि करेगा। उच्च का बुध दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलत: जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली और पराक्रमी होगा। उसे माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। स्वयं भी बड़ी भूसम्पत्ति, नौकर-चाकर से युक्त, उत्तम वाहनों का स्वामी होगा। जातक की गिनती जीवन में सफलतम व्यक्तियों में अग्रगण्य होगी।
4. **सूर्य+गुरु**–राजयोग बनेगा। नौकरी लगेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सन्तति सुख, विद्या लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहां केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृश्चिक राशि), दशम स्थान (मीन राशि) एवं लग्न स्थान, मिथुन राशि को देखेंगे। फलत: जातक के अनेक शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक का शहर की राजनीति में वर्चस्व होगा तथा वह महत्वकांक्षी होगा। वह जो भी योजनाएं हाथ में लेगा उसमें सफलता मिलेगी।
7. **सूर्य+राहु**–माता की मृत्यु अल्पआयु में संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–भौतिक सुखों की प्राप्ति में संघर्ष बना रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

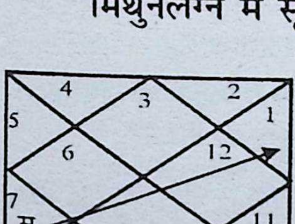

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पंचम स्थान में सूर्य तुला राशि का होगा। तुला राशि में सूर्य नीच का होता है तथा इसके 10 अंशों तक परम नीच का होता है। सूर्य की यह स्थिति जातक परिवार के लिए उन्नति कारक है। जातक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के जन्म के बाद परिवार की उन्नति होगी। जातक प्रजावान होगा। जातक के स्वयं के यहां जब पुत्र उत्पन्न होगा तब उसके स्वयं का विशेष भाग्योदय प्रारंभ होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होगा।

निशानी–दस अंशों से अधिक अंशों वाला होने पर सूर्य जातक को उत्तम विद्या, बुद्धि, नौकरी व व्यवसाय देगा।

दशा–सूर्य की दशा अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम एवं विद्या बढ़ेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक की एकाध सन्तति का क्षरण, अकाल मृत्यु या गर्भपात जैसा होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–प्रशासन के कार्य व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के पंचम भाव में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा परन्तु दोनों ग्रहों की दृष्टि एकादश भाव पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलत: जातक बुद्धिमान एवं प्रजावान होगा। जातक को कन्या व पुत्र दोनों सन्तति होंगी। जातक निजी व्यवसाय-व्यापार के द्वारा उन्नति के चरम शिखर पर पहुंचेगा। जातक शिक्षित होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–प्रकाशन, अध्ययन-अध्यापन के कार्य से जातक को लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–लेखन, प्रकाशन कार्य से लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि के होंगे। यहां शनि उच्च का होगा। तुला राशि अंशों में शनि परमोच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह 'नीचभंग राजयोग' बनायेंगे। तथा सप्तम भाव (धनु राशि), एकादश भाव (मेष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलत: जातक स्वयं महाधनी होगा। पिता के मृत्यु के बाद ऐसा जातक व्यापार व्यवसाय में खूब धन कमायेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. **सूर्य+राहु**–सन्तान सुख एवं कुटुम्ब सुख में बाधा होगी।
8. **सूर्य+केतु**–गर्भपात का भय होगा। विद्या रुकावट के साथ संभव है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

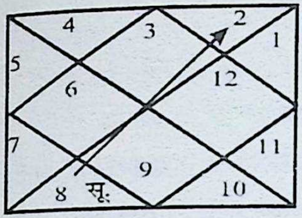

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां सूर्य वृश्चिक राशि में होगा। अपनी राशि में चौथे स्थान पर होने से ज्यादा अनिष्टकारी नहीं है। फिर भी 'पराक्रमभंग योग' तो बनाता ही है। ऐसा व्यक्ति बेफिक्र व लापरवाह होता है। जातक क्रोध में आकर कुछ भी कर सकता है। नौकरी में निरन्तर बाधा आती है। धैर्य की कमी के कारण मित्रों-परिजनों में मनमुटाव रहेगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि) होगी। फलत: नौकरी या व्यापार में बदलाव की निरन्तर स्थितियां बनती रहेंगी।

निशानी–अभावग्रस्त परिवार में जन्म होने के पश्चात् भी जातक सफलता के उच्च शिखर को स्पर्श करेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां षष्ठम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' एवं सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की रात्रि को 8 व 9 बजे के लगभग होता है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राजयोग (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक रूखे स्वभाव का होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के छठे स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य छठे हेने से 'पराक्रमभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की क्रमश: सृष्टि हुई है। फलत: यहां यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को माता की सम्पत्ति से वंचित होना पड़ेगा तथा उसे वाहन दुर्घटना का भय भी बना रहेगा। फिर भी इस योग के प्रभाव के कारण जातक का बचाव होता रहेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–पत्नी पक्ष से वैचारिक मतभेद रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक विनम्र व कोमल स्वभाव का होगा।
6. **सूर्य+शनि**–छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, अष्टम भाव (मकर राशि), व्यय भाव (वृष राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) को देखेंगे फलत: ऐसा जातक दीर्घ आयु वाला, खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। परन्तु जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक निडर किन्तु रूखे स्वभाव का व्यक्ति होगा।
8. **सूर्य+केतु**–शत्रुओं से भय बना रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

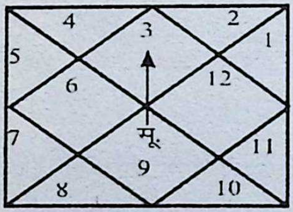

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां सप्तमस्थ सूर्य धनु राशि अपनी मित्र राशि में होगा। अपनी राशि (सिंह) से पांचवें होने के कारण सूर्य यहां शुभ फल देगा। सूर्य अग्नि राशि में होने के कारण जातक का स्वभाव कुछ भड़कीला व क्रोधी होगा। फिर भी जातक में बल, बुद्धि एवं विद्या का सम्मिश्रण प्रखर होगा। प्रथम सन्तति के जन्म के पश्चात् जातक का भाग्य चमकेगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक को परिश्रम का पूरा फल मिलेगा। जातक मित्रों-परिजनों का शुभचिन्तक होगा।

निशानी–जातक को 25 वर्ष की आयु के बाद विवाह सुख मिलेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा। गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सायं छ: बजे के आस-पास होता है। धनेश व पराक्रमेश होकर दोनों ग्रह स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से यथेष्ठ धन व प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–दाम्पत्य जीवन में कलह रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के सातवें स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: 'कुलदीपक योग' एवं 'लग्नाधिपति योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा तथा अल्प प्रयत्न से ही उसे ज्यादा सफलता मिलेगी। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–जातक का गृहस्थ सुख वैभवपूर्ण रहेगा। 'हंस योग' के कारण विवाह के बाद जातक की किस्मत खुलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–गृहस्थ सुख, सन्तान सुख श्रेष्ठ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (कुंभ राशि), लग्न भाव (मिथुन राशि) एवं सुख स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। पर जातक का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होता है।
7. **सूर्य+राहु**–वैवाहिक सुख में बाधा, विवाद, बिछोह की संभावना है।
8. **सूर्य+केतु**–गृहस्थ सुख विवादास्पद रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

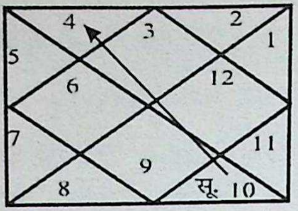

है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां अष्टम भाव गत सूर्य मकर राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। सूर्य अपनी राशि से छठे स्थान पर होने से यहां अशुभ फल ही देगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। भाईयों व मित्रों में विवाद बना रहेगा। ऐसे जातक को घर में जहरीले जानवर को नहीं पालना चाहिए। गुप्त प्रेम प्रसंग से जातक तबाह-बरबाद होगा। तेज गति के वाहन से बचना चाहिए। पाप कर्मों से बचे रहने पर ही आगे भाग्य चमकेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का धन विवाद, कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।

निशानी–ऐसा जातक मरते हुए प्राणी के सामने आ जाए तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे।

दशा–सूर्य की दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होने से ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों के खड्डे में गिंरने से 'पराक्रमभंग योग', 'धनहीन योग' बनता है। यह स्थिति निकृष्ट है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु एवं व्यापार व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक का स्वभाव नकारात्मक होगा पर 'विपरीत राजयोग' के कारण जातक राज-ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के अष्टम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के आठवें होने से 'पराक्रमभंग योग' एवं बुध के आठवें होने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। फलत: जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिलना चाहिए। यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक को अन्तिम सफलता मिलेगी।

4. **सूर्य+गुरु**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी व धैर्यवान् होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह राज्य भाव (मीन राशि), धनु भाव (कर्क राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। शनि यहां स्वगृही होकर मिल नामक, विपरीत राजयोग बनायेगा। फलत: जातक धनी होगा राजनीति में ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला यशस्वी होगा। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही राजनीति में सही विकास होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक को लम्बी बीमारी, दुर्घटना सम्भव है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को गुप्त रोग, बीमारी संभव है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

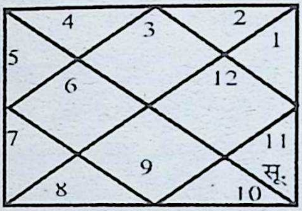

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां नवम भावगत सूर्य कुम्भ राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। यह स्थिति पिता के लिए अनिष्ट कारक है। सूर्य यहां अपनी (सिंह) राशि से सातवें (केन्द्र) में होने से शुभ फल प्रदाता है। जातक की उम्र लम्बी एवं खानदान बड़ा होगा। व्यक्ति अपने कुल-कुटम्ब की रक्षा के लिए कुर्बान होने के लिए प्रतिपल तैयार रहेगा। जातक को आध्यात्मिक, भौतिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा सहज प्राप्त होगी।

दृष्टि–नवमस्थ सूर्य की दृष्टि अपनी सिंह राशि पर एवं पराक्रम भाव पर होगी। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क के सहयोग में आगे बढ़ेगा।

निशानी–इस जातक के जन्म लेते ही परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा व पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान सिंह राशि पर होगी। जो सूर्य का घर है। फलतः जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा

2. **सूर्य+मंगल**–भौतिक व सामाजिक उत्थान सम्भव है।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के नवम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। उसका पराक्रम तेज होता है। जातक के कुटुम्बी-परिजन उसके सहायक होंगे। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
4. **सूर्य+गुरु**–सरकार व राज्य क्षेत्र में अच्छी नौकरी की सम्भावना रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–भाग्य प्रवल रहेगा। सन्तति सुख उत्तम है।
6. **सूर्य+शनि**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मेष राशि), पराक्रम स्थान (सिंह राशि) एवं छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार में लाभ कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा, परन्तु जातक का सही भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–भाग्य में बाधा, भौतिक सुखों की हानि होगी।
8. **सूर्य+केतु**–वैराग्य की भावना बनी रहेगी। जातक का आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में

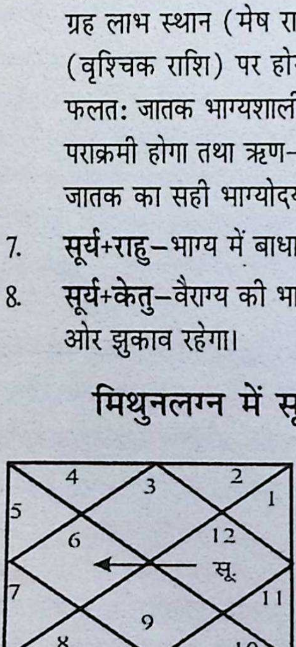

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अंतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां दशम स्थान में सूर्य मीन राशि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी मित्र राशि में होगा। दशम भावगत सूर्य स्वास्थ्य, धन व प्रसिद्धि के लिए अत्यन्त शुभ माना गया है। व्यक्ति महत्वकांक्षी एवं भाग्यशाली होता है। सूर्य यहां जल राशि में है फलत: अपनी उष्णता, उग्रता व क्रूरता खो देता है। इससे जातक में नेतृत्व शक्ति ज्यादा बढ़ जाती है। अपनी सिंह राशि में अष्टम स्थान पर होने से जातक कुछ शंकालु स्वभाव का होगा पर कुटम्बी जनों से आहत होगा।

दृष्टि–दशम भावगत सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक को मकान, वाहन एवं नौकर-चाकर का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक का व्यक्तित्व राजा के समान प्रभावशाली होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति पथ की ओर लगातार आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 से 2 बजे के बीच होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव कन्या राशि पर होगी, जातक को उत्तम वाहन सुख एवं भवन सुख की प्राप्ति होगी। जातक का राज्य सरकार या राजनीति में दबदबा रहेगा, क्योंकि सूर्य यहां उच्चाभिलाषी है।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक रौबीला होगा व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के दशम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। बुध यहां नीच का होगा। पर केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना रहा है। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जहां बुध की उच्चराशि उपस्थित है। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि चातुर्य से जातक धनवान होगा। अच्छा व्यापारी होगा। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–'जातक' राजा जैसा ही वैभवशाली होगा। 'मालव्य योग' से जातक का अचानक भाग्योदय होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **सूर्य+शनि**–यहां दसवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृष राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं सप्तम भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा तथा विवाह के बाद उसकी किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परन्तु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–संघर्ष के उपरान्त सफलता निश्चित है।
8. **सूर्य+केतु**–थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

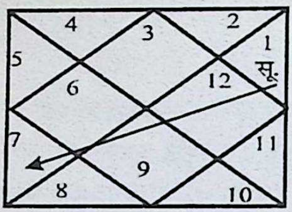

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां एकादश स्थान में सूर्य मेष राशि का होगा। जहां वह उच्च का होगा तथा 10 अंशों तक परमोच्च का होगा। अपनी (सिंह) राशि से नवम स्थान पर होने से सूर्य सवश्रेष्ठ शुभ फलों का प्रदायक है। ऐसे जातक को मित्र, समाज व ज्येष्ठ भ्राता से मनोवांछित सहयोग मिलता रहेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा। उसके एक पुत्र जरूर होगा। पुत्र भी विद्यावान होगा।

निशानी–जातक व्यक्तिगत रूप से अहंकारी होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक को खूब व्यापार एवं धन लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन के दस-ग्यारह बजे के लगभग होता है। यहां सूर्य उच्च का होगा। सूर्य दस अंशों में परमोच्च का हेगा। फलतः 'रविकृत राजयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (तुला राशि) को पूर्ण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक विद्यवान व तेजस्वी होगा। उसकी सन्तति भी तेजस्वी होगी। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—बड़े भाई बहन के सुख में हानि परन्तु 'किम्बहुना योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च राशि में होगा तथा पंचम भाव को देखेगा। यह युति यहां सार्थक है। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। गांव या शहर का प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी सन्तान भी शिक्षित होगी। जातक पराक्रमी एवं सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—राज्य सुख में वृद्धि होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सन्तति सुख उत्तम, विद्या सुख श्रेष्ठ।
6. **सूर्य+शनि**—यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव (मिथुन राशि) पंचम भाव (तुला राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। सूर्य यहां उच्च का होगा शनि नीच का 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। फलतः ऐसा जातक विद्यावान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफल होगा। परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद ही होगा।
7. **सूर्य+राहु**—बड़े भाई एवं पिता के सुख में हानि होगी। सन्तति सुख में हानि संभव है।
8. **सूर्य+केतु**—कुटुम्ब सुख में हानि महसूस करेंगे।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

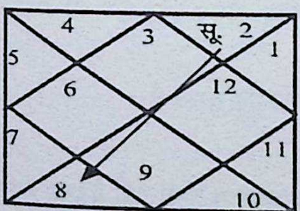

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां द्वादश स्थान में सूर्य वृष राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। सूर्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' बनाती है। अपनी सिंह राशि से दशम स्थान पर होने के कारण इतना अशुभ फल नहीं होगा। जातक धार्मिक यात्रा, परोपकार व सामाजिक कार्यों में पैसा खर्च करेगा। अपने मित्रों-परिजनों पर धन खर्च करेगा। जातक एय्याशी पर भी पैसा खर्च कर सकता है।

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक रोग एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा।

निशानी–पैसे की तंगी के कारण इज्जत खतरे में पड़ेगी। जातक दूसरों की मुसीबत अपने सिर लेता है।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः आठ बजे के आस-पास होता है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। चंद्रमा तीन अंशों में परमोच्च का होगा। दोनों ग्रहों के द्वादश में जाने से 'पराक्रमभंग योग' एवं 'धनहीन योग' बनता है। परन्तु धनेश उच्च का होने से जातक के पास धन तो बहुत आयेगा पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा, रुपयों की बरकत नहीं होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–शैय्या सुख में हानि। पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव हैं।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के द्वादश भाव में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेंगे। सूर्य बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' बना एवं बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'विद्या बाधायोग' बना। फलतः यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। यात्राएं खूब करेगा पर जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। ऐसा जातक संघर्षशील जीवन जीते हुये भी सफल व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–विलम्ब विवाह या शय्या सुख की हानि संभव है।
5. **सूर्य+शुक्र**–शैय्या सुख विविधता के साथ।
6. **सूर्य+शनि**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कर्क राशि), छठे स्थान (तुला राशि) एवं भाग्य स्थान (कुंभ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि) को देखेंगे। फलतः जातक भाग्यशाली तो होगा पर उसका पराक्रम भंग होगा। धन एवं इच्छित सफलता को प्राप्त करने हेतु संघर्ष बना रहेगा। जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–राजदण्ड मिल सकता है। कैद हो सकती है। शय्या सुख की हानि होगी।
8. **सूर्य+केतु**–कोर्ट-कचहरी से कारावास का भय बना रहेगा।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में

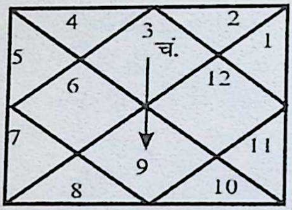

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। चंद्रमा प्रथम स्थान में मिथुन राशि में होगा एवं शत्रु क्षेत्री होगा। **'यामिनीनाथ योग'** के कारण ऐसा जातक समाज का सम्मानित व सफल व्यक्ति होगा। यद्यपि माता से वैचारिक मतभेद रहेंगे तथा माता का आशीर्वाद लेने से जातक निरन्तर उन्नति पथ की ओर अग्रसर होता रहेगा। जातक स्वयं के पुरुषार्थ से अच्छा धन कमायेगा। जातक संवेदनशील व शंकालु होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक की पत्नी सुन्दर, धार्मिक व पतिव्रता होगी।

निशानी–जब तक माता जीवित है जातक को धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (5 से 7 बजे) के मध्य होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व पराक्रमी व्यक्ति होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में चंद्रमा धनेश है जबकि मंगल षष्टेश व लाभेश होने से पापी है। लग्न में चंद्र+मंगल की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की षष्टेश+लाभेश के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। फिर भी 'लक्ष्मी योग' बनता है यहां बैठकर दोनों ग्रह, सुख स्थान (कन्या राशि) सप्तम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा जातक लम्बी उम्र वाला होगा।
3. **चंद्र+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–'गजकेसरी योग' के कारण जातक परम भाग्यशाली होगा। मिथुनलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। लग्न स्थान में चंद्रमा शत्रु क्षेत्री होगा। दो केन्द्रों का स्वामी होकर बृहस्पति क्रमशः पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। धन की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान की उत्पत्ति के साथ पुनः भाग्योदय होगा। जीवन आराम से गुजरेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक विद्यवान एवं यशस्वी होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक हठी एवं अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक अपने विचारों पर स्थिर नहीं रहेगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

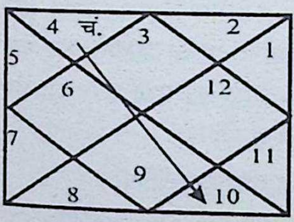

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के लिए योगकारक ग्रह माना गया है। यहां द्वितीयस्थ चंद्रमा कर्क राशि में स्वगृही होगा। जातक को धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी। ऐसा व्यक्ति घर में मन्दिर बनाये व चांदी की घण्टा बजाये तो चंद्रमा का शुभ फल मिलता रहेगा। चांदी के बर्तन में भोजन करना, सोते समय दूध पीना जातक के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिए शुभ रहेगा। जातक विद्यावान होगा। शिक्षा या संतान दोनों में से एक सुख ज्यादा अवस्था में पुष्टित होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक की आयु में वृद्धि होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

निशानी–जातक की वाणी मीठी होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक महाधनी होगा। धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय 6 से 4 बजे के मध्य होगा। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। बलवान धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने के कारण मित्रमूल धनयोग बनेगा। ऐसा जातक कुटम्बी जनों व मित्रों की सहायता से धन अर्जित करेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वितीय स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बना। इसके कारण यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्य भाव (कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। महाधनी होगा परन्तु जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक धनी एवं परिश्रमी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होकर किम्बहुना योग बनायेगा। इनकी अमृत दृष्टि षष्टम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव पर पड़ेगी। फलतः आपके शत्रु नष्ट होंगे। आपका राजनीति में वर्चस्व रहेगा। आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगे एवं धन की कोई कमी आपकी उन्नति में बाधक नहीं होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक कला प्रेमी एवं रसिक मनोवृत्ति वाला होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार के द्वारा धन अर्जित करेगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक का उपार्जित धन खर्च होता रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक के पास धन संग्रह कठिनता से होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

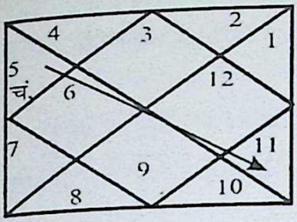

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के लिए योगकारक ग्रह माना गया है। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा सिंह राशि में होगा। जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है। जातक महत्वकांक्षी होगा। उसका पराक्रम तेज रहेगा। जातक भाई-बहन कुटुम्ब परिवार वाला होगा। ऐसा जातक किसी का अंकुश या दबाब सहन नहीं कर पाता।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–ऐसे व्यक्ति के घर में अकाल मृत्यु नहीं होगी। यहां चन्द्रमा मौत से रक्षा करने वाला है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। धन प्राप्ति के प्रयास सफल होंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि दो से चार बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। फलत बलवान् तृतीयेश की धनेश के साथ युति होने से जातक कुटुम्बी जनों, मित्रों से धन व यश अर्जित करेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीय स्थान में चंद्र+मंगल की युति 'सिंह राशि' में होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्य भाव (कुम्भ राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) को देखेंगे फलतः ऐसा जातक भाग्यशाली एवं धनवान होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक पराक्रमी होगा एवं उसकी बहनें अधिक होंगी।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के तृतीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः विवाह के बाद भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। आवक के जरिए नौकरी एवं स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से बहुमुखी होंगे। यह युति आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को भाई-बहनों का सुख होगा। स्त्री मित्र भी रहेंगे।
6. **चंद्र+शनि**–जातक को मित्रों से लाभ होगा। मित्र भाग्यशाली व धनी होंगे।
7. **चंद्र+राहु**–भाइयों से अनबन रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**–मित्र पीठ पीछे निन्दा करेंगे।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

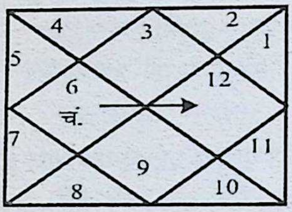

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा यहां कन्या राशि (शत्रु राशि) में होगा। फिर चंद्रमा इस भाव में बलवान होगा। यहां पर चंद्रमा को 'आमदनी का दरियाव' कहा गया है जो 'यामिनीनाथ योग' भी बनाता है। जातक के पास वाहन, स्वयं का धन एवं माता की सम्पत्ति होगी। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः राजपक्ष में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा।

निशानी–जातक भावुक, संवेदनशील, सौन्दर्य व श्रृंगार प्रेमी होगा। ऐसे व्यक्ति की आमदनी खर्च करने पर बढ़ती चली जाती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक के सुख-ऐश्वर्य में वृद्धि होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्विन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि बारह बजे के आस-पास होगा। चन्द्रमा यहां शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार चतुर्थ स्थान में चंद्रमा कन्या राशि में शत्रु क्षेत्री होगा। फलत: 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिग्बली होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) को देखेंगे जो कि मंगल के स्वयं की राशि है। ऐसा जातक धनी होगा। बड़ा व्यापारी होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के चतुर्थ स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री होगी जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एवं द्वादश पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: खर्च बढ़चढ़ कर रहेगा। राजकाज में प्रभाव वर्चस्व दबदबा रहेगा। जातक की आयु लम्बी होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक धनी होगा पर सही भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा। ठेके के कार्य में रुचि रहेगी।
7. **चंद्र+राहु**–माता को कष्ट, अथवा छोटी उम्र में माता की मृत्यु सम्भव है।
8. **चंद्र+केतु**–वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। माता की सम्पत्ति में विवाद सम्भव है।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

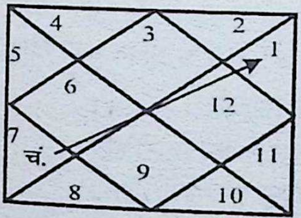

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। पंचम स्थान में चंद्रमा तुला राशि का होगा। यहां चंद्रमा को 'दूध की नहर' कहा गया है। ऐसा जातक शुभकार्य एवं बच्चों पालन-पोषण पर धन खर्च करता है। उसके घर में दौलत की बरकत रहती है। पाराशर ऋषि कहते हैं–''धनोपार्जन वृति लाश्च जायन्ते तत्सुता अपि'' जातक धनी होगा तथा उसकी सन्तति भी धनवान होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक व्यापार में धन अर्जित करेगा। विदेशी व्यापार से भी लाभ संभावित है।

निशानी–जातक के प्रथम कन्या होगी। दो कन्या की सम्भावना है।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक को नवीन उपलब्धियां मिलेंगी। धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि में 10 से 12 के मध्य होगा। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक की एकाध सन्तति का क्षरण, अकाल मृत्यु या गर्भपात जैसा होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टमभाव (मकर राशि) लाभ स्थान (मेष राशि) एवं व्यय भाव (खर्च स्थान) में देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा, लम्बी आयु का स्वामी होगा तथा खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक पढ़ा-लिखा होगा। जातक की सन्तति भी पढ़ी-लिखी व सभ्य होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के पंचम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। पंचम स्थान में ये दोनों शुभ ग्रह बैठकर भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का व्यक्तित्व तेजस्वी होगा। व्यापार-व्यवसाय द्वारा जातक को अतुल धन की प्राप्ति होती रहेगी। अन्य दुर्योग न हों तो जीवन सुखी रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक करोड़पति होगा। किसी उद्योग का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–पुत्र सन्तान प्राप्त में बाधा संभव है।
8. **चंद्र+केतु**–एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्ट्म स्थान में

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

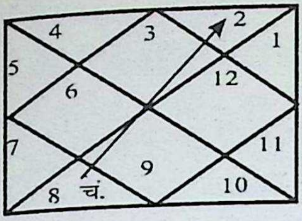

शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। छठे स्थान पर चंद्रमा अपनी नीच वृश्चिक राशि में होगा। इसमें 3 अंशों तक चन्द्रमा परम नीच का होगा। चंद्रमा की यह अवस्था 'धनहीन योग' बनाती है। ऐसे जातक को जीवन में निर्धनता व असफलताओं का सामना करना पड़ता है। मन अशान्त रहता है। भोजसंहिता के अनुसार जातक को विषभोजन का भय रहता है।

दृष्टि–षष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (वृषभ राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–चंद्रमा के साथ पाप ग्रह तो शत्रु द्वारा धन हानि और यदि शुभ ग्रह हो तो शत्रु द्वारा धन लाभ की स्थिति बनती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा कष्टदायक होगी।

विशेष–ऐसे जातक को बासी भोजन नहीं करना चाहिए। रात्रि को सोते समय दूध नहीं पीना चाहिए।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां षष्ठम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' एवं सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की रात्रि को 8 व 9 बजे के लगभग होता है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राजयोग (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार छठे स्थान में चंद्रमा अपनी नीच राशि में होगा एवं मंगल स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कुम्भ राशि), धन राशि (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा तथा भाग्यशाली होगा एवं राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण जातक का परिश्रम सार्थक नहीं होगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के छठे स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है छठे स्थान में चंद्रमा नीच का

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होगा एवं इस कुण्डली में 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभ फलदायक न होकर धन के प्रति संघर्ष का संकेत देता है।

5. **चंद्र+शुक्र**–विद्या में बाधा निश्चित है। विलम्ब सन्तति योग संभव है।
6. **चंद्र+शनि**–भाग्योदय में भारी रुकावट, संघर्ष रहेगा।
7. **चंद्र+राहु**–यहां राहु मृत्यु तुल्य कष्ट देगा।
8. **चंद्र+केतु**–यहां केतु लम्बी बीमारी देगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में

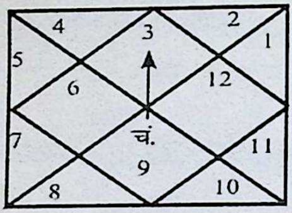

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। सप्तम स्थान में चंद्रमा यहां धनु राशि में है, जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसे चंद्रमा को 'लक्ष्मी का अवतार' कहते हैं। जातक का स्वभाव विनम्र उदार, कल्पनाशील, भावुक, संवेदनशील एवं सात्विक होता है। जातक की आर्थिक स्थिति विवाह के बाद सुदृढ़ होगी। जीवन साथी धन संग्रह में दक्ष होगा। जीवन साथी सुन्दर होगा। राजपक्ष में जातक को सम्मान मिलेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्नस्थ (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक द्वारा किये गये परिश्रम सार्थक होंगे।

निशानी–जातक के जन्म के बाद घर-परिवार में धन-दौलत की बरकत होती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा जातक की उन्नति होगी। वैवाहिक (गृहस्थ) सुख में वृद्धि होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म पौष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण अमावस्या को सायं छः बजे के आस-पास होता है। धनेश व पराक्रमेश होकर दोनों ग्रह स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ज़ातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से यथेष्ठ धन व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तम स्थान में धनुराशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (कुंभ राशि) लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। दोनों ग्रह केन्द्र में होने से 'रूचक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलतः जातक राजा के सामान बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। सौभाग्यशाली होगा एवं उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक की पत्नी सुन्दर, पतिव्रता व आज्ञाकारी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के सप्तम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृही होने से 'हंस योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न भाव एवं पराक्रम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपका व्यक्तित्व 24 वर्ष की आयु में निखरना शुरू हो जायेगा। 32 वर्ष की आयु मे आपका पराक्रम पूर्ण यौवन पर होगा। यदि लग्नेश बुध आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है तो निश्चय ही आप एक उत्कृष्ट श्रेणी के सफल व्यक्तियों में से एक हैं।
5. **चंद्र+शुक्र**–पत्नी सुन्दर एवं मांसल शरीर वाली, पति वल्लभा होगी।
6. **चंद्र+शनि**–विवाह के बाद भाग्योदय होगा।
7. **चंद्र+राहु**–गृहस्थ सुख में व्यवधान, द्विभार्या योग बनता है।
8. **चंद्र+केतु**–पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव परन्तु पत्नी सुन्दर होगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

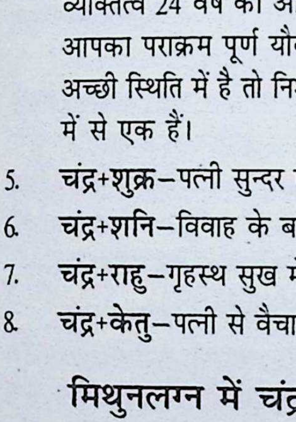

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मकर राशि में होगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' बनेगा। यहां चंद्रमा 'जला हुआ दूध' कहलाता है। ऐसा जातक बिना परिश्रम किये हुए धन-प्रतिष्ठा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिलने की उम्मीद रखता है और अन्ततः निराशा हाथ लगती है। ऐसा जातक प्रायः निर्लज्ज व स्वार्थी होता तथा अनैतिक कार्यों में विश्वास रखता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि अपने ही घर (कर्क राशि) धन भाव पर होगी। जातक को अंतिम प्रयास में सफलता मिलेगी।

निशानी–जातक प्रायः आलसी होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को विशेष संघर्ष, कष्ट एवं मानसिक वेदना की अनुभूति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां अष्टमं स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होने से ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों के खड्डे में गिरने से 'पराक्रमभंग योग', 'धनहीन योग' बनता है। यह स्थिति निकृष्ट है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु एवं व्यापार, व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पडेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार अष्टम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। यहां बैठकर दोनो गहों की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) धन भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः 'महालक्ष्मी योग' के कारण ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापारी होगा। उसका पराक्रम जनसंपर्क तेज होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के अष्टम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। अष्टम भाव में दोनों ग्रह होने के कारण आपकी कुंडली में क्रमशः 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई है। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभ फलदाई न होकर धन संग्रह में बाधक, विवाह सुख में बाधक एवं सरकारी नौकरी में बाधक है। राजकाल में किसी मुकदमें में पराजय भी हो सकता है।
5. **चंद्र+शुक्र**–विद्या में निश्चित रूप से बाधा आयेगी।
6. **चंद्र+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। शत्रु भय रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–शल्य चिकित्सा या दुर्घटना का योग है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

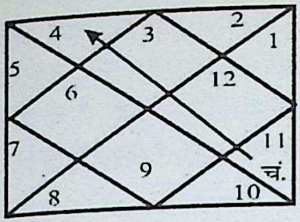

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां नवम स्थान में चंद्रमा 'कुंभ राशि' में होगे। ऐसे चंद्रमा को 'दुखियों का रक्षक' कहा जाता है। ऐसा जातक सात्विक, धार्मिक माता-पिता, गुरुजनों का भक्त होता है। जातक प्राय: सत्यवादी एवं न्यायप्रिय होता है। उसको परोपकार एवं सामाजिक कार्यों में रुचि रहती है।

दृष्टि–नवम स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक अत्यन्त पराक्रमी होगा। उसका जनसंपर्क उच्च वर्ग के अभिजात्य लोगों से होता है।

निशानी–जातक व्यापार से धनार्जन करता है। चंद्रमा का शुभ असर जातक की सन्तति पर होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक के प्रयास सार्थक होंगे एवं उसे धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान सिंह राशि पर होगी। जो सूर्य का घर है। फलत: जातक महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार नवम स्थान में कुम्भ राशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं सुख भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। महान पराक्रमी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का भी होगा। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **चंद्र+बुध**–जातक का भाग्योदय व्यापार से होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के नवम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। नवम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपके व्यक्तित्व में बढ़ोत्तरी 24 वर्ष की आयु से शुरू हो जायेगी। विवाह शुभद रहेगा एवं प्रथम संतति के साथ ही भाग्योदय का पूर्ण विकास होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–विद्या, बुद्धि, हुनुर द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक राजा के समान धनी एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–भाग्य में रुकावट, पिता का सुख कमजोर रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

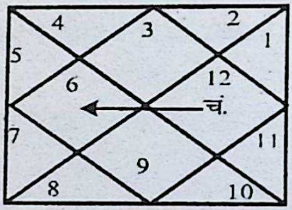

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां दशम स्थान में चंद्रमा मीन राशि में है जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है। यहां चंद्रमा 'यामिन नाथ योग' बना रहा है। चंद्रमा अपनी राशि कर्क में नवम स्थान पर होने से शुभ है। ऐसा जातक सहिष्णु, धैर्यशाली, शिष्टभाषी, धर्मप्रिय एवं विनम्र होता है। जातक को राज्य पक्ष से सम्मान मिलता है।

दृष्टि–दशमस्थ चन्द्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि) को देखेगा। जातक को भूमि-वाहन व माता का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक सुगंध एवं सुन्दर स्त्री व सौन्दर्य का प्रेमी होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को धन व यश की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दोपहर 2 से 12 बजे के बीच होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव कन्या राशि पर होगी, जातक को उत्तम वाहन सुख एवं भवन सुख की प्राप्ति होगी। जातक का राज्य सरकार या राजनीति में दबदबा रहेगा, क्योंकि सूर्य यहां उच्चाभिलाषी है।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार दशम स्थान में मीन राशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चुतर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक को जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। कुलदीपक योग के कारण जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी पर जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक कुल का दीपक एवं चमकता सितारा होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के दशम स्थान में चंद्र+गुरु की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बृहस्पति स्वगृही होकर केन्द्रस्थ होने से 'हंस योग' की सृष्टि कर रहा है। दोनों ग्रह बली होकर धन स्थान, सुख स्थान एवं छठे भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपके पास चल-अचल सम्पत्ति बहुत होगी। आपको अनेक वाहनों का सुख भी होगा। आयु दीर्घ होगी। पद्मसिंहासन योग के कारण आप साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ जायेंगे।
5. **चंद्र+शुक्र**–'मालव्य योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–सरकारी क्षेत्र में धोखा होगा।
8. **चंद्र+केतु**–सरकारी कार्य में बाधा आयेगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

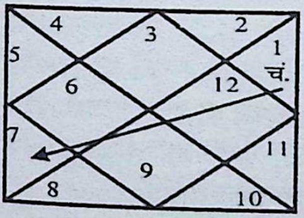

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। एकादश स्थान में चंद्रमा मेष राशि में होगा। मेष चंद्रमा की मित्र राशि है। ऐसा जातक थोड़ा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रोधी, उग्र स्वभाव का होगा। इसके कारण कई बार मानसिक संतुलन खो बैठता है। जातक महत्वकांक्षी होगा एवं धनवान होगा। जातक राज्य सरकार या सामाजिक संस्थानों द्वारा सम्मानित भी होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक अध्यात्म विद्या, गूढ़ विद्या का जानकार होता है।

निशानी–जातक व्यापार-प्रिय होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी। जातक का व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन के दस-ग्यारह बजे के लगभग होता है। यहां सूर्य उच्च का होगा। सूर्य दस अंशों में परमोच्च का होगा। फलत: 'रविकृत राजयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक विद्यवान व तेजस्वी होगा। उसकी सन्तति भी तेजस्वी होगी। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार एकादश स्थान में मेष राशि गत मंगल स्वगृही होगा। फलत: 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलत: जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अति धनवान होगा। उद्योगपति होगा एवं भाग्योदय प्रथम पुत्र सन्तति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक व्यापार-प्रिय व्यक्ति होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के एकादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। ये दोनों शुभ ग्रह यहां बैठकर तृतीय स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टिपात करेंगे। फलत: आपके पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि होगी। सन्तान उत्तम विद्यासुख श्रेष्ठ होगा। विवाह अच्छे घर-घराने में होगा। पत्नी सुन्दर मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **चंद्र+शनि**–जातक धनी व उद्योगपति होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक हिसंक स्वभाव का होगा। पागलपन के दौरे भी आ सकते हैं।
8. **चंद्र+केतु**–जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

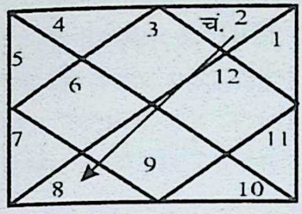

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोडा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परमशत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के योगकारक ग्रह माना गया है। द्वादश स्थान में चंद्रमा वृष राशि में होगा। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' बनेगा। पर चंद्रमा यहां उच्च का होगा तथा 5 अंशों तक परमोच्च का है। इस भाव चंद्रमा अपनी कर्कराशि में एकादश स्थान में होने के कारण द्वितीय भाव के पूर्ण फल प्रदान करेगा। निश्चय ही जातक धनी, मानी और अभिमानी होगा। लालकिताब वाले इसे 'रात का तूफान' कहते हैं। जातक यात्राओं के द्वारा (विदेश यात्रा) धन कमायेगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–ऐसा जातक जीवन में स्वप्रयास से जो कुछ कमायेगा वह स्थाई रहेगा। माता-पिता की सम्पत्ति स्थाई काम न आ पायेगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक यश-कीर्ति का अर्जन करेगा। यह दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चंद्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृषराशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः आठ बजे के आसपास होता है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। चंद्रमा तीन अंशों में परमोच्च का होगा। दोनों ग्रहों के द्वादश में जाने से 'पराक्रमभंगयोग' एवं 'धनहीनयोग' बनता है। परन्तु धनेश उच्च का होने से जातक के पास धन तो बहु आयेगा पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा, रुपयों की बरकत नहीं होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वादश स्थान में वृषराशिगत चंद्रमा उच्च का होगा। धनेश उच्च का होने से 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (सिंह राशि) छठास्थान (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम स्थान (धनु राशि) में देखेंगे फलतः ऐसा जातक ऋणरोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा। महापराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के द्वादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति गजकेसरी योग की सृष्टि कर रही है। यहां उच्च का है, चंद्रमा स्वगृही, इससे अधिक और क्या चाहिए? गुरु चंद्र की यह युति धनेश व दसमेश की युति है। आपके भाग्य में अद्वितीय वृद्धि कर रही है। यह युति संतति सुख देगी परंतु विवाह सुख में बाधक है। पत्नी फिजूल खर्च करने वाली होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–यहां 'किम्बहुनायोग' बनेगा। चंद्रमा उच्च का, शुक्र स्वगृही जातक को ट्रेवलिंग ऐजेंसी से लाभ होगा। विदेश में धन कमायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–'भाग्यभंग योग' बनेगा पर विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान एवं उत्तम वाहन का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–विदेश यात्र होगा जातक परदेश में कमायेगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक की यात्रा के दौरान संकट का सामना करना पड़ेगा।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में

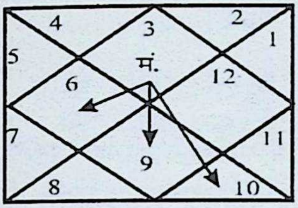

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां प्रथम स्थान में मिथुन राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती है। यह मंगल किस्मत जगाने वाला होता है। ऐसे जातक का 28 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय होता है। भाईयों के सहयोग से जातक की उन्नति होती है। ऐसा जातक किसी के भी बारे में अनायास अशुभ वचन बोल दे, तो वो पूरा जरूर होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को वाहन सुख, गृहस्थ सुख एवं दीर्घायु का लाभ जरूर मिलेगा।

निशानी–ऐसे जातक को गर्वीले व हठीले स्वभाव के कारण समाज में उचित स्थान नहीं मिलता।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक को वाहन सुख, मकान सुख की प्राप्ति होगी। जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक क्रोधी किन्तु पराक्रमी होगा। कुटुम्ब सुख श्रेष्ठ रहेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में चंद्रमा धनेश है जबकि मंगल षष्टेश व लाभेश होने से पापी है। लग्न में चंद्र+मंगल की युति वस्तुतः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनेश चंद्रमा की षष्टेश+लाभेश के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। फिर भी 'लक्ष्मीयोग' बनता है यहां बैठकर दोनों ग्रह, सुख स्थान (कन्या राशि) सप्तम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा जातक लम्बी उम्र वाला होगा।

3. **मंगल+बुध**–जातक 'भद्रयोग' के कारण राजा जैसा पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का गृहस्थ सुख वैभवशाली होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक विद्यावान व सभ्य होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक भाग्यशाली, धनवान होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक पराक्रमी, हठी व लड़ाकू होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक का व्यक्तित्व संघर्षशील रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में

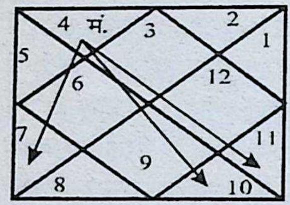

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां द्वितीयस्थ मंगल कर्क अपनी नीच राशि में होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परमनीच का कहलाता है। दूसरे घर में मंगल 'धर्म की मूरत' कहा गया है। ऐसे जातक को धन, यश, विद्या, बुद्धि, घर-परिवार के सुख की प्राप्ति होती है। जातक तामसी भोजन करेगा। अशुद्ध वाणी बोलेगा। जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला एवं समाजसेवी होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), अष्टमभाव (मकर राशि) एवं भाग्यभवन (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: पुत्र संतान की प्राप्ति उत्तम भाग्य की प्राप्ति एवं दीर्घायु की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक को जीवन में दौलत की कमी नहीं रहेगी। धन खुद-ब-खुद चलकर जातक के पास आएगा पर धनागमन बहुत कुछ चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा।

दशा–मंगल की दशा में जातक धनवान होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक की वाणी प्रखर-तेज होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वितीय स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं मंगल नीच के होने से 'नीचभंगराजयोग' बना। इसके कारण यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्यभाव (कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। महाधनी होगा परंतु इसका भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक पुरुषार्थी एवं विवेकी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक महाधनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा।
6. **मंगल+शनि**–कुटुम्ब में विवाद होगा, धन की तकलीफ रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–धन के घड़े में छेद, रुपया खर्च होता चला जाएगा।
8. **मंगल+केतु**–कुटुम्ब में विवाद, धन संग्रह में कमी रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में

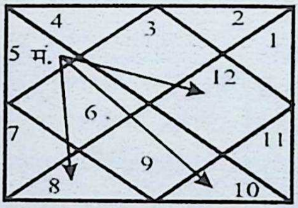

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर हैं फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। तृतीयस्थ मंगल सिंह राशि में होगा। फलतः जातक की तेजस्विता, पराक्रम शक्ति विलक्षण होगी। जातक शत्रुहंता होगा। उसमें साहस, शक्ति, उत्साह, परिश्रम एवं विजय की भावना प्रबल होगी। ऐसे मंगल को 'चिड़िया घर का कैदी शेर' कहा गया है। जो अपनी क्षमताओं का प्रयोग करने में असमर्थ होता है। जातक को भाई-बहन का सुख जरूर मिलता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्य भवन (कुंभ राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। जातक राजनीति में महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।

निशानी–जातक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कार्य करने की अद्‌भुत क्षमता रखेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–कुटुम्ब, सहोदर का सुख रहेगा। जातक आप अकेला नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु संभव है।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीय स्थान में चंद्र+मंगल की युति 'सिंह राशि' में होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्यभाव (कुम्भ राशि) एवं दशमभाव (मीन राशि) को देखेंगे फलतः ऐसा जातक भाग्यशाली तथा धनवान होगा एवं अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**–भाई-बहन का सुख रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मित्रों से लाभ होगा, पराक्रम तेज रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–भाई-बहनों का सुख रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–परिवार में कलह रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–परिवार में विग्रह रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–कीर्ति उत्तम पर मित्रों से मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

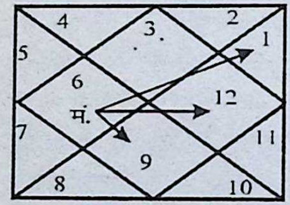

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां चतुर्थस्थ मंगल 'कन्या राशि' मित्र राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। मंगल यहां दिक्बली है। अतः चौथे मंगल को 'जलती आग' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं को सूखी घास की तरह जला डालता है। ऐसा जातक कुशल गणितज्ञ, सर्जन, इंजीनियर, कम्प्यूटर कार्य में दक्ष, अनुशासन कार्य में कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार-कुटुम्ब का सच्चा सहायक होता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को गृहस्थ सुख एवं व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट लाभ मिलता रहेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक ऐश्वर्य व उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–भौतिक व पारिवारिक सुख मिलेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार चतुर्थ स्थान में चंद्रमा कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिक्बली होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) को देखेंगे जो कि मंगल के स्वयं की राशि है। ऐस जातक धनी होगा। बड़ा व्यापारी होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजातुल्य वैभव से सम्पन्न होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल अच्छा होगा। स्वयं की नौकरी अच्छी होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक धनी व वैभवशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक भाग्यशाली है। दो मंजिल वाले मकान का स्वामी होगा।
7. **मंगल+राहु**–माता सुख में कमी, अल्पायु में मृत्यु संभव।
8. **मंगल+केतु**–माता बीमार रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में

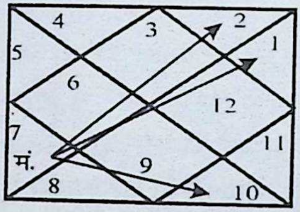

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां पंचम स्थान में मंगल तुला राशि (शत्रु) का होगा। ऐसा मंगल 'रईसों का बाप-दादा' कहलाता है। जातक धनवान, विद्यावान, बुद्धिमान होगा। परंतु विद्या में एक बार रुकावट आती है। दो-तीन पुत्र हो सकते हैं पर एकाध गर्भपात संभव है।

दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टमभाव (मकर राशि), अपने घर मेष राशि (एकादश स्थान), द्वादश स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः लम्बी आयु वाला, व्यापारी एवं खर्चीले स्वभाव का होता है।

निशानी–ऐसा व्यक्ति 28 वर्ष की आयु के बाद दिन-प्रतिदिन अमीर होता चला जाएगा। प्रथम संतान की उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्य और अधिक चमकेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। सरकारी नौकरी में कमी रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मकर राशि), लाभ स्थान (मेष राशि) एवं व्यय भाव (खर्च स्थान) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान, लम्बी आयु का स्वामी होगा तथा खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **मंगल+बुध**–संतति सुख उत्तम। पुत्र-पुत्री दोनों का सुख रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–पुत्र सुख निश्चित। विद्या में डिग्री मिलेगी।
5. **मंगल+शनि**–संतान एवं विद्या सुख श्रेष्ठ।
6. **मंगल+शनि**–विद्या में संघर्ष, रुकावट।
7. **मंगल+राहु**–संतान में बाधा, गर्भपात संभव।
8. **मंगल+केतु**–गर्भक्षय एवं रुकावट के साथ विद्या का संकेत मिलता है।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में

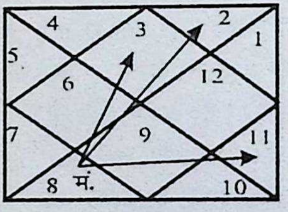

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर हैं फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां छठे स्थान में मंगल वृश्चिक राशि में स्वगृही है। षष्टेश षष्टम में स्वगृही होने से 'हर्षयोग' बनता है। जातक युद्ध विद्या व षड्यंत्र करने में निपुण होता है। जातक शत्रुहंता होता है। तनाव व दबाव को सहन करने में समर्थ होता है। जातक अपनी उन्नति हेतु अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल करने से नहीं चूकता। यहां 'लाभभंग योग' के कारण कई बार व्यापार में घाटा होगा।

दृष्टि–यहां षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भाव (कुम्भ राशि), व्यय भाव (वृष राशि) तथा लग्न भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक उन्नतिशील होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–ऐसे व्यक्ति साम, दाम, दण्ड व भेद नीति में निपुण होते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–पराक्रम भंग होगा। भाईयों में नहीं बनेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार छठे स्थान में चंद्रमा अपनी नीच राशि में होगा एवं मंगल स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कुम्भ राशि), धन स्थान (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। भाग्यशाली होगा एवं राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–परिश्रम का लाभ कम मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–गृहस्थ सुख में विवाद, पत्नी से कम बनेगी।
5. **मंगल+शुक्र**–विद्या में बाधा, संतान बिलम्ब से संभव।
6. **मंगल+शनि**–विपरीत राजयोग से वैभव बढ़ेगा।
7. **मंगल+राहु**–लम्बी बीमारी संभव।
8. **मंगल+केतु**–शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में

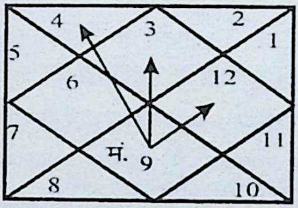

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां सप्तम स्थान में मंगल धनु राशि मित्र राशि का होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाएगी। इस मंगल को 'मीठा हलवा' कहा गया है। ऐसे जातक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है। उसे जमीन-जायदाद से लाभ होता है। राज्यपक्ष से भी लाभ होता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि), लग्न भाव (मिथुन राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक उन्नतिशील, धनी एवं राजनीति में दक्ष होगा।

निशानी–जातक का जीवनसाथी क्रोधी, कलहकारी एवं अहंकारी होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा—मंगल की दशा-अंर्तदशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—दाम्पत्य जीवन में कष्ट-पीड़ा रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तम स्थान में धनुराशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (कुंभ राशि) लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। दोनों ग्रह केन्द्र में होने से 'रूचकयोग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलतः जातक राजा के सामन बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा सौभाग्यशाली होगा एवं उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**—परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाएगा।
4. **मंगल+गुरु**—'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक भाग्यशाली, सुखी होगा।
6. **मंगल+शनि**—गृहस्थ सुख में रुकावट है। विलम्ब विवाह संभव है।
7. **मंगल+राहु**—पत्नी से विवाद, कलह, बिछोह संभव।
8. **मंगल+केतु**—गृहस्थ सुख में कोई-न-कोई न्यूनता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

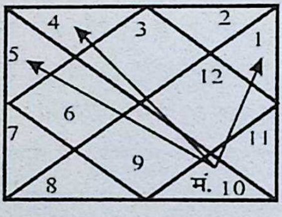

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। अष्टम स्थान में मंगल मकर राशि में उच्च का होगा। यहां 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती तथा 'लाभभंगयोग' एवं 'हषयोग' भी बनता है। लाल किताब में ऐसे मंगल को 'मौत का फंदा' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं का मुकाबला करता है। इंसाफ के लिए लड़ता है और उसे सफलता भी मिलती है। जातक धनी होता है पर भाग्यशाली है या नहीं इसका निर्णय शनि की बलवान स्थिति पर निर्भर होगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि अपने घर लाभ स्थान (मेष राशि), धन स्थान (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी होता है। जातक व्यापार व्यवसाय से लाभ प्राप्त करता है और धनी भी होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निशानी–व्यक्ति धनी होते हुए भी समाज में प्रतिष्ठित नहीं होगा।

विशेष–ऐसे व्यक्ति के घर में तंदूर या भट्टी हो तो उसे फौरन हटा देना चाहिए।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतें आएंगी, संघर्ष की स्थिति बनेगी पर सफलता संघर्ष के बाद निश्चित है।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–कुटुम्ब सुख में बाधा। विपरीत राजयोग के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार अष्टम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनाएगा। यहां बैठकर दोनो ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) धन भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: 'महालक्ष्मीयोग' के कारण ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापारी होगा। उसका पराक्रम, जनसंपर्क तेज होगा।
3. **मंगल+बुध**–जीवन साथी या स्वयं का शरीर सुख कमजोर।
4. **मंगल+गुरु**–जीवन साथी रोगी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–विलम्ब संतति या विद्या में बाधा सम्भव है।
6. **मंगल+शनि**–यहां शनि के कारण **'किम्बहुना'** नामक राजयोग बनेगा परन्तु जातक जीवन में प्राय: असफल ही रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–अचानक दुर्घटना भय संभव है।
8. **मंगल+केतु**–शल्य चिकित्सा योग, दीर्घ बीमारी संभव है।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में

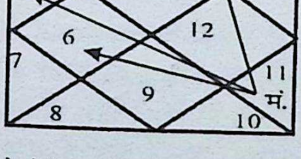

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। नवम स्थान में मंगल अपनी शत्रु कुंभ राशि में होगा। लाल किताब वालों ने ऐसे मंगल को 'शाही तख्त' कहा है। ऐसा व्यक्ति आयु के 28 वर्ष के बाद धनाढ्य होगा व राज्यधिकारियों की कृपा प्राप्त करेगा। समाज में राजनीति में उच्च

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद को प्राप्त करेगा। जातक प्राय: नास्तिक होता है तथा उसे अपयश का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि–नवम स्थानगत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को वाहन सुख, भूमि सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। दानी, परोपकारी होगा।

निशानी–पिता अल्प आयु वाला, अल्प प्रतिष्ठित रोगी होगा या पिता-पुत्र में कलह रहेगी, अथवा पड़ोसियों से कलह या मुकदमें होंगे।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के भाई व मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार नवम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं सुख भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान, महान् पराक्रमी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का भी होगा। इस 'लक्ष्मीयोग' के कारण जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक उद्यमी होगा। पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–स्त्री, संतान सुख श्रेष्ठ।
6. **मंगल+शनि**–जातक राजा के समान प्रभावशाली एवं पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक धनवान होगा, पर भाग्य उदय में रुकावटें बहुत आएंगी।
8. **मंगल+केतु**–संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

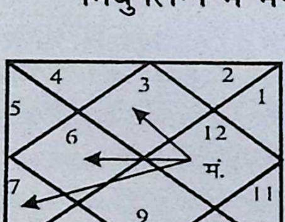

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। दशम स्थान में मंगल मीन राशि अपने मित्र गुरु की राशि में होगा। मंगल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'दिक्बली' होकर 'कुलदीपकयोग' बनाएगा। लालकिताब वालों ने ऐसे मंगल को 'चींटी के घर भगवान' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति अपने पूरे खानदान, कुटम्बीजनों का कल्याण करता है व सुंदर व सुदृढ़ देह का स्वामी होता है। जातक जमीन-जायदाद से लाभ उठाता है। परिवार-कुटुम्ब का नाम दीपक के सामन रोशन करता है।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ता है एवं वाहन व भूमि सुख प्राप्त करता है। संतान व गृहस्थ सुख भी प्राप्त करता है।

निशानी–जातक स्वपराक्रम से धन कमाता है और खुले दिल से खर्च करता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में ज़ातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक का राज्यक्षेत्र में पराक्रम होगा। बड़े राजनेताओं से सम्पर्क रहेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार दशम स्थान में मीन राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चुतर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। कुलदीपक योग के कारण जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी पर जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक धनी एवं वैभवशाली होगा।
4. **मंगल+गुरु**–'हंसयोग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक महाधनी होगा। 'मालव्ययोग' के कारण राजा से कम प्रभावशाली नहीं होता।
6. **मंगल+शनि**–जातक सौभाग्यशाली होगा। भाग्योदय के अवसर मिलते रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**–जातक को राज्यपक्ष में हानि होगी।
8. **मंगल+केतु**–जातक को राज्यपक्ष से भय रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत:

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

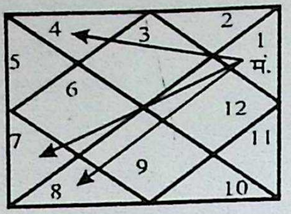

मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। एकादश स्थान में मंगल स्वगृही होकर मेष राशि में होगा। लालकिताब वालों ने ऐसे मंगल को 'दूध से पला हुआ पालतू शेर' कहा है। ऐसे जातक को धन, भवन, भू-सम्पत्ति, वाहन सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक देखने में खतरनाक परंतु कोमल हृदय का आध्यात्मिक प्राणी होता है। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। पर संतान को लेकर कोई-न-कोई चिंता बनी रहेगी।

दृष्टि–एकादशस्थ स्वगृही मंगल की दृष्टि धन भाव (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एवं षष्टम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक धनी होगा। संतान सुख से युक्त होगा तथा ऋण-रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः समर्थ होगा।

निशानी–जातक की आमदनी में वृद्धि 28 से 32 वर्ष की आयु के मध्य होगी। जातक के बड़े भाई को कष्ट होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–'किम्बहुना योग' के कारण जातक महान् पराक्रमी होगा। उद्योगपति एवं धनी होगा। जातक बड़े कुटुम्ब का स्वामी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार एकादश स्थान में मेष राशिगत मंगल स्वगृही होगा। फलतः 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक अति धनवान, उद्योगपति होगा एवं भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक कृशकाय होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का राज्यक्षेत्र में, सरकारी अधिकारियों के मध्य प्रभाव होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक कृशकाय होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा 'नीचभंग राजयोग' के कारण धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–व्यापार व लाभ में कमी, कुटुम्ब कलह संभव।
8. **मंगल+केतु**–परिवार में विग्रह-विवाद, शत्रुओं से सामना करना पड़ेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

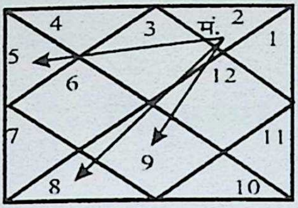

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। द्वादश स्थान में मंगल वृषभ राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली में क्रमशः 'मांगलिक योग', 'लाभभंगयोग' एवं 'हषयोग' बनाती है। लालकिताब वाले इस मंगल को 'मनमौजी' का दर्जा देते हैं। फलतः ऐसा व्यक्ति अपनी मर्जी (इच्छा) का स्वामी होता है। दूसरों के दबाब में आकर कोई काम नहीं करता। जातक भोग-विलास एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा।

दृष्टि—द्वादशस्थ मंगल की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि), छठे भाव (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। रोगी होगा एवं जीवन साथी के प्रति पूर्ण वफादार (समर्पित) नहीं होगा।

निशानी—गुरु व गाय का नित्य सेवा करने पर जातक तरक्की करेगा।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा कष्ट, दिक्कतों वाली होगी पर संघर्ष के बाद सफलता देने वाली होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—परिवार में विग्रह-विवाद की स्थिति रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार द्वादश स्थान में वृष राशिगत चंद्रमा उच्च का होगा। धनेश उच्च का होने से 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (सिंह राशि), षष्ठम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम स्थान (धनु राशि) में देखेंगे फलतः ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा। महापराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा, विलम्ब विवाह का योग है।
5. **मंगल+शनि**—जातक के दाम्पत्य सुख में कड़वाहट रहेगी। कलह, अलगाव की स्थिति, संतति हानि की स्थिति संभव है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **मंगल+शनि**–विलम्ब भाग्योदय का योग बनता है।
7. **मंगल+राहु**–भाग्य में रुकावट, यात्रा में चोरी संभव है।
8. **मंगल+केतु**–यात्रा में धनहानि, विवाद संभव है।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में

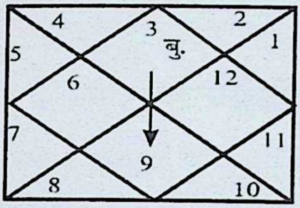

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केंद्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। प्रथम स्थान में बुध मिथुन राशि का होकर स्वगृही होगा। फलतः 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला प्रख्यात धनी, बहुसुत एवं बहुमित्रों से युत पराक्रमी होता है। लाल किताब वालों से इस बुध को 'खुदगर्ज हाकिम' कहा है। ऐसे जातक अपने कार्यों को युक्तपूर्वक करता है। जिससे समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है।

दृष्टि–लग्नस्थ स्वगृही बुध की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) पर होगी। फलतः जातक की पत्नी धार्मिक एवं पतिव्रता होगी तथा अल्परति में रुचि रखेगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति धन व अधिकार प्राप्त करने के लिए अनैतिक कार्य करने में नहीं हिचकता।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक राजयोग एवं व्यापार में उन्नति को प्राप्त करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां स्वगृही होगा। लग्न में बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि भी होगी। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलतः ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा। अपने बुद्धिबल एवं वाक्चातुर्य से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ेगा।

2. **बुध + चंद्र**–व्यकित धनी होगा एवं बहु व्यवसायी होगा।
3. **बुध + मंगल**–व्यकित पराक्रमी एवं जिद्दी स्वभाव का होगा।
4. **बुध + गुरु**–व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–ऐसा जातक विनम्र एवं विद्यावान होगा।
6. **बुध + शनि**–ऐसा जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **बुध + राहु**–ऐसा जातक हठी, जिद्दी किन्तु बुद्धिमान होगा।
8. **बुध + केतु**–ऐसा जातक कुतर्की होगा।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में

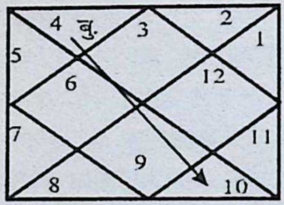

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। द्वितीय स्थान में बुध कर्क राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। लालकिताब में ऐसे जातक को 'योगीराज' कहा गया है। ऐसा जातक बड़ी मेहनत करके धन जुटाता है पर एक ही झटके में खर्च कर डालता है। जातक को जीवन में धन, यश, विद्या, कुटुम्ब सुख, घर, जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। जातक आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा। ऐसा व्यक्ति बातचीत में कुशल, वाक्यपटु होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टमस्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला होता है।

निशानी–जातक की आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आते-जाते रहेंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। धनवान होगा। बाहुबल से खूब रुपया कमाएगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा। लग्नेश की अष्टम् भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक बुद्धिमान, धनवान एवं विनम्र वाणी वाला होगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक बुद्धिमान किंतु सिद्धांतवादी वाणी का स्वामी होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक गंभीर विषयों पर बोलने वाला, धार्मिक, परोपकारी एवं धनी होगा।
5. **बुध + शुक्र**—ऐसा जातक धनी होगा। विद्यावान होगा। विद्याबल से धन अर्जित करेगा।
6. **बुध + शनि**—जातक को धन कमाने के उचित अवसर भाग्यवश प्राप्त होते रहेंगे।
7. **बुध + राहु**—धन के घड़े में छेद के कारण आर्थिक संघर्ष रहेगा।
8. **बुध + केतु**—धन के अधिक खर्च से मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में

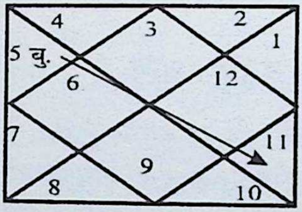

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां तृतीयस्थान में बुध सिंहराशि अपनी मित्रराशि में होगा। फलतः ऐसा जातक उन्नतिशील, अति उत्साही एवं पराक्रमी होता है। तीसरे घर में बैठे बुध को 'थुकने वाला कोढी' कहा गया है। यदि बुध खराब हो तो व्यक्ति दर-दर की ठोकरे खाने वाला होता है तथा जितना भी धन हो नष्ट कर डालता है पर यहां यह स्थिति नहीं है। जातक धनी होगा तथा बुद्धिबल से मित्रों के सहयोग से धन कमाएगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ सिंहराशिगत बुध की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। पूर्ण भाग्योदय 32 वर्ष की आयु तक होता है।

निशानी—जातक को भाई-बहन का पूर्ण सुख मिलेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के तृतीय भाव में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। यहां पर स्वगृही है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों ग्रह भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहे हैं। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। भाई-परिजन व मित्रों का बल उसे मिलता रहेगा। जातक भाग्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति या सहयोग से जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जाएगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक के बहने अधिक होगी। स्त्री-मित्र से जातक के लाभ रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक को भाई-बहन दोनों का सुख होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक को बड़े भाई या उम्र में बड़ें मित्रों से लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक के बहनें अधिक होगी। स्त्री-मित्र से जातक को लाभ होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक के कुटम्बी भाग्यशाली होंगे।
7. **बुध + राहु**–मित्रों में विवाद, भाईयों से विग्रह रहेगा।
8. **बुध + केतु**–ऐसे जातक के मित्र ऐनवक्त पर धोखा देगे।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

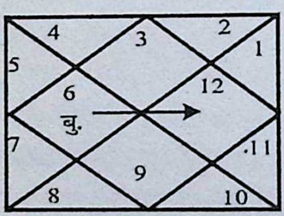

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। चतुर्थ स्थान में बुध कन्याराशि में उच्च का होगा। कन्याराशि के अंशों में बुध परमोच्च का होगा। बुध की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक समस्त भौतिक सुख-ऐश्वर्य से युक्त राजातुल्य परम पराक्रमी होता है। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'हुनुरमंद' कहा हैं ऐसा व्यक्ति किसी कला में निपुण होकर राजकार्य से जुड़ा होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि–चतुर्थभाव उच्च के बुध की दृष्टि राज्यपक्ष (मीनराशि) पर होगी। फलतः जातक राजनीति में उच्चपद व प्रतिष्ठा को अवश्य प्राप्त करेगा।

निशानी–जातक के वाहन और फोन जरूर होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक राजयोग एवं व्यापार में उन्नति प्राप्त करता है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में कन्याराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा तथा 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि करेगा। उच्च का बुध दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली और पराक्रमी होगा। उसे माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। स्वयं भी बड़ी भूसम्पत्ति, नौकर-चारक से युक्त, उत्तम वाहनों का स्वामी होगा। जातक की गिनती जीवन में सफलतम व्यक्तियों में अग्रण्य होगी।
2. **बुध + चंद्र**–जातक महाधनी होगा। दो-तीन मकानों का स्वामी होगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक के गुप्त शत्रु जरूर होगे पर सभी नष्ट होंगे। भूमि संबंधी विवाद जरूर होगा।
4. **बुध + गुरु**–ऐसे जातक की पत्नी धनवान होगी। ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–'नीचभंगयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **बुध + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में खूब धन कमाएगा।
7. **बुध + राहु**–माता एवं बहन का सुख कमजोर रहेगा।
8. **बुध + केतु**–माता की संपत्ति हाथ नहीं लगेगी। भौतिक सुखों में बाधा महसूस होगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में

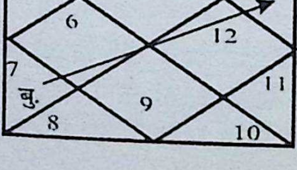

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां पंचम स्थान में बुध तुला

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि मित्रराशि में होगा। ऐसे जातक को धन, विद्या, बुद्धि, स्त्री-संतान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति सहज में ही होती रहेगी। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'पीर का आशीर्वाद' कहा है। ऐसे व्यक्ति पर गणपति व गुरु की कृपा होती है। ऐसा जातक किसी के भी संदर्भ में अचानक कोई बात कहे तो वह पूर्ण (सही) हो जाती है।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि लाभस्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। कम्प्यूटर या मेडिकल लाईन में ज्यादा लाभ संभव है।

निशानी–जातक को प्रथम कन्या होगी। दो-तीन कन्याओं का योग बनता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुंमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के पंचम भाव में तुलाराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच राशि का होग परंतु दोनों ग्रहों की दृष्टि एकादश भाव पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। प्रजावान होगा। जातक को कन्या व पुत्र दोनों संतति होगी। जातक निजी व्यवसाय-व्यापार के द्वारा उन्नति के चरम शिखिर पर पहुंचेगा। जातक शिक्षित होगा।
2. **बुध + चंद्र**–संतति के संबंध में जातक भाग्यशाली होगा।
3. **बुध + मंगल**–ऐसा जातक लाभदायक व्यापार का स्वामी होगा। पुत्र एवं पुत्री दोनों का सुख मिलेगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक का पत्नी द्वारा लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**–जातक अति धनी होगा। भाग्यशाली होगा। जातक की संतान भी महाधनी होगी।
7. **बुध + राहु**–एक-दो संतति की अकाल मृत्यु संभव है। विद्या में बाधा।
8. **बुध + केतु**–विद्या पूरी होगी पर संघर्ष के साथ।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति षष्ट्म स्थान में

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां छठे स्थान में बुध वृश्चिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

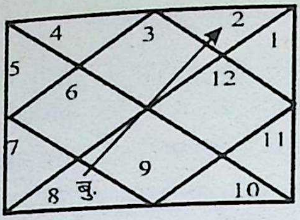

(सम) राशि का होगा। फलत: 'लग्नभंगयोग', 'सुखहीनयोग' की सृष्टि होती है। ऐसे जातक को परिश्रम का उचित लाभ नहीं मिलता। भौतिक सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ता है। लालकिताब वालों ने इस बधु को 'दिल का राजा' कहा है। ऐसा व्यक्ति दिल का साफ होता है। मन में गांठ नहीं रखता। लिखा-पढ़ी एवं मानसिक श्रम से धन कमाता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। जातक के रुपये रोग एवं शत्रु को लेकर खर्च होगे।

निशानी–ऐसे व्यक्ति कलहप्रिय, निष्ठुर, कटुवचनकारी होता है। तथा मित्रों के लिए विश्वासनीय नहीं होता। शारीरिक श्रम इसके वश की बात नहीं।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के छठे स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य छठे हेने से 'पराक्रम भंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'लग्नभंगयोग' एवं 'सुखभंगयो' की क्रमश: सृष्टि हुई है। फलत: यहां यह योग ज्यादा सार्थ नहीं है। जातक को माता की सम्पत्ति से वंचित होना पड़ेगा तथा उसे वाहन दुर्घटना का भय भी बना रहेगा। फिर भी यह योग के प्रभाव के कारण जातक का बचाव होता रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**–आर्थिक कष्ट एवं तंगी रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक ऐश्यवर्यशाली जीवन जिएगा।
4. **बुध + गुरु**–विलम्ब विवाह होगा। गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**–विलम्ब संतति होगी। विद्या में बाधा।
6. **बुध + शनि**–भाग्योदय में बाधा आएगी।
7. **बुध + राहु**–शत्रु परास्त होने पर बाधा पंहुचाने की चेष्टा करेगें।
8. **बुध + केतु**–गुप्त शत्रुओं से चिंता बनी रहेगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

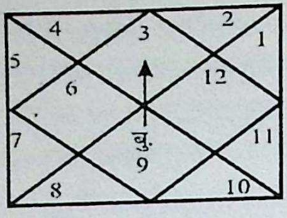

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। सप्तम स्थान में बुध धनुराशि का होगा। यह बुध की समराशि है। बुध यहां 'कुलदीपक योग' बनाएगा। लालकिताब वालों ने इस बुध को 'पारस' का दर्जा दिया है। ऐसे जातक को विद्या, बुद्धि एवं कलम की शक्ति मिलती है। जातक अपनी कला, हुनर के माध्यम से धनवान होता है। उसे परिश्रम का फल मिलता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ बुध लग्नस्थान अपने ही घर (मिथुनराशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: ऐसा जातक सुंदर, सुडौल और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा।

निशानी–जातक का जीवनसाथी वफादार होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के सातवें स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेगे फलत: 'कुलदीपकयोग' एवं 'लग्नाधिपति योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा। तथा अल्प प्रयत्न से ही उसे ज्यादा सफलता मिलेगी। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–व्यक्ति अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन कमाएगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक पराक्रमी होगा। गृहस्थ सुख में थोड़ी सी खटपट संभव।
4. **बुध + गुरु**–'हसंयोग' के कारण विवाह के बाद जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ जीवन सुखी। जातक स्त्री व संतान से सुखी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा। गृहस्थ सुख उत्तम।
7. **बुध + राहु**–गृहस्थ सुख में बाधा। द्विभार्यायोग संभव।
8. **बुध + केतु**–वैवाहिक तनाव संभव।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

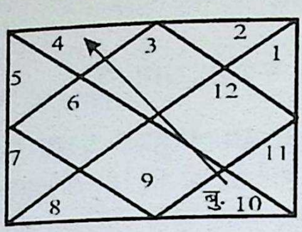

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। अष्टम भाव में बुध मकर (सम) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'लग्नभंगयोग' एवं सुखहीन योग' की सृष्टि करती है। लाल किताब वालों ने इस बुध को बीमारी और जहमत कहा है जातक को जीवन में अनेक कष्ट दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। गुप्त रोग व गुप्त शत्रु का भय रहेगा।

दृष्टि–अष्टम स्थानगत बुध की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलत: जातक को धन, विद्या व कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को परेशानी पैदा होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के अष्टम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के आठवे होने से 'पराक्रमभंगयोग' एवं बुध के आठवें होने से 'लग्नभंगयोग' एवं सुखभंग योग बनेगा। फलत: जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना मिलना चाहिए। यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक को अन्तिम सफलता मिलेगी।
2. **बुध + चंद्र**–धन प्राप्ति हेतु कष्ट, संघर्ष एवं बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
3. **बुध + मंगल**–यहां 'विपरीत राजयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य एवं पराक्रम को प्राप्त करेगा।
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा एवं शत्रुओं का भय बना रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**–विलम्ब संतति योग एवं विद्या में बाधा संभव।
6. **बुध + शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. **बुध + राहु**–अचानक दुर्घना संभव, आयु में बाधा।
8. **बुध + केतु**–शल्यचिकित्सा, पैरों में चोट संभव।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

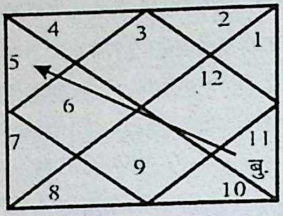

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। नवम स्थान में बुध कुंभ (सम) राशि में होगा। लग्नेश का भाग्यस्थान में होने से जातक भाग्यशाली होगा। धनवान होगा। बुद्धिमान होगा। बंधु-बांधवों का प्रेमी, विख्यात, तेजस्वी व पराक्रमी होगा। जातक का जनसंपर्क तेज होगा।

दृष्टि–नवम् स्थानगत बुध की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंहराशि) पर होगी। जातक महान पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ उठाएगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस बुध को 'जादू का भूत' कहा है। ऐसा व्यक्ति जबान से बोलेगा सच हो जाएगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के नवम् स्थान में कुंभराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होता है। भाग्यशाली होता है। उसका पराक्रम तेज होता है। जातक के कुटुम्बी-परिजन उसके सहायक होगे। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बुध + चंद्र**–भाग्य एवं धन का साथ जीवन में बराबर बना रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलती रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख उत्तम। नौकरी सुख भी उत्तम।
5. **बुध + शुक्र**–भाग्य का सितारा आपके आगे बढ़ाने में लगातार सहायक भूमिका निभाएगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **बुध + शनि**–राजा के सामन ऐश्वर्यशाली जीवन होगा। भाग्यशाली व्यापारियों में अपनका नाम होगा।
7. **बुध + राहु**–भाग्य में बाधा, रुकावट एवं कष्टानुभूति होगी पर अंतिम सफलता।
8. **बुध + केतु**–संघर्ष, परेशानी एवं भाग्योदय संबंधी चिंता रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में

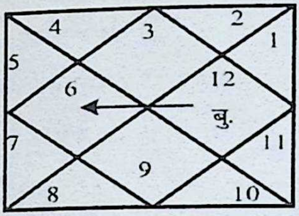

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। दशम स्थान पर बुध मीन राशि अपनी नीच राशि में होगा। यहां 15 अंशों में बुध परमनीच का होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसे जातक को जीवन में धन, धान्य, वाहन, मकान का सुख, स्त्री-संतान का सुख मिलेगा। जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा। लालकिताब वालों ने ऐसे बुध को 'जीहजूरिया' कहा है, क्योंकि ऐसा जातक दूसरों को हां में हां मिलाने वाला, खुशामद से अपना कार्य सिद्ध करने वाला होता है।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि अपनी उच्च राशि (कन्या) चतुर्थभाव पर होगी। फलतः जातक को मकान का पूर्ण सुख मिलेगा। भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति बुद्धिबल के माध्यम से होगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की जुबान मीठी होती है। व्यापार-नौकरी से धन कमाता है।

दशा–बुध का दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के स्थान स्थान में मीनराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। बुध यहां नीच का होगा। पर केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपकयोग' बना रहा है। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगें जहां बुध की उच्चराशि उपस्थित है। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि चातुर्य से जातक धनवान होगा। अच्छा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यापारी होगा। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध + चंद्र**–राज्य में, सरकार व राजनीति में लाभप्रद स्थित रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–परिवार व कुटुम्ब आपके नाम से जाना जाएगा।
4. **बुध + गुरु**–गुरु के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली पराक्रमी होगां जातक ज्ञानी-ध्यानी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र के कारण यहां 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
6. **बुध + शनि**–भाग्य का सितारा आपकी मेहनत का सही मूल्यांकन करेगा।
7. **बुध + राहु**–राज्य सरकार एवं राजनीति में अप्रिय घटना हो सकती है।
8. **बुध + केतु**–राज्य-सरकार या राजनीति में कार्यरत लोगों के माध्यम से चिंताग्रस्त रहेंगे।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

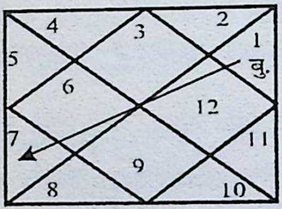

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। एकादश स्थान में बुध मेष (सम) राशि में है। लालकिताब वालों ने इस बुध को हुनरमंद और शर्मसार कहा है। जातक प्राय: विरोधाभासी बयान देगा तथा कई बार सही निर्णय लेने में अक्षम रहेगा। प्राय: जातक असत्य वचन बोलकर अपनी विश्वसनियता खो देता है। पर जातक धनवान होता है। जातक का परिश्रम उसे सफल बनाने में सहायक होगा।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित बुध की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) पर होगी। जातक प्रजावान होगा। कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय 34 वर्ष के बाद होता है। परन्तु जातक का बड़े भाई से विरोध रहेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मेषराशिगत यह युति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च राशि में होगा तथा पंचम भाव को देखेगा। यह युति यहां सार्थक है। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। गांव या शहर का प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक पराक्रमी एवं सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–व्यापार-व्यवसाय में बराबर लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**–यहां संगत की युति से जातक नकली चीजें बनाने में, झूठी गवाह देने में रुचि लेगा अपने गलत कार्य को भी सहीं मानेगा।
4. **बुध + गुरु**–विवाह के बाद उन्नति, गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ सुख उत्तम, स्त्री-संतान सुख उत्तम।
6. **बुध + शनि**–भाग्य एवं भविष्य व्यापार से ही चमकेगे।
7. **बुध + राहु**–व्यापार में शुद्ध मुनाफे में घाटा होगा।
8. **बुध + केतु**–व्यापार-व्यवसाय में तरक्की की चिंता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

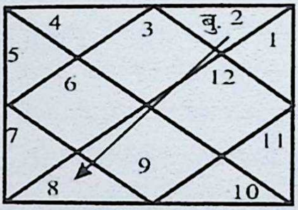

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे '**केन्द्राधिपत्य दोष**' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। द्वादश स्थान में बुध वृषराशि का होगा। वृष बुध की मित्रराशि है पर बुध की यह स्थिति क्रमशः **लग्नभंगयोग**, **सुखहीनयोग** की सृष्टि करती है। जातक को सुंदर स्त्री, सुंदर वस्त्र, संतान एवं वाहन का सुख मिलेगा, परंतु परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा, जितना मिलना चाहिए। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'नेकस्वभाव मगर किस्मत का मारा' कहा है। ऐसे व्यक्ति को भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वादश भाव स्थि बुध की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग परेशान करेंगे।

निशानी–जातक हास्य, संगीत, खेल व कला का प्रेमी होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को दिक्कते आएगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के द्वादश भाव में वृषराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेंगे। सूर्य बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' बना एवं बुध के कारण 'लग्नभंगयोग' एवं 'विद्या बाधायोग' बना। फलतः यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। यात्राएं खूब करेगा पर जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। ऐसा जातक संघर्षशील जीवन जीते हुये भी सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–धन के अपव्यय पर चिंता बनी रहेगी। यात्राएं अधिक होगी।
3. **बुध + मंगल**–व्यापार-व्यवसाय में लाभ के प्रति आशंका रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख में चिंता, अलगाव संभव।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ सुख, संतान सुख में बाधा।
6. **बुध + शनि**–भाग्योदया में बाधा, व्यापार में बाधा।
7. **बुध + राहु**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
8. **बुध + केतु**–कारोबार के प्रति, धन के प्रति चिंता रहेगी।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में

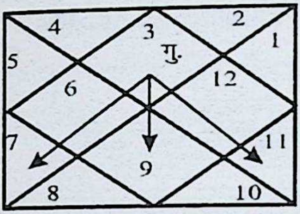

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। प्रथम स्थान में बृहस्पति मिथुन (मित्र) राशि में होकर 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरीयोग' योग की सृष्टि करते हुए उच्चाभिलाषी होगी। ऐसा जातक महत्वकांक्षी होता है। उसमें ज्ञान, संयम, विवेक व धैर्य का अद्‌भुत समंवय होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गद्दीनाथ साधु' कहा है। ऐसा व्यक्ति समाज का सम्मानित, प्रतिष्ठित एवं आदरणीय व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति भले ही ज्यादा दौलतमंद न हो पर यशस्वी जरूर होता है। धन की मजबूती का पता चंद्रमा की स्थित से लगेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं भाग्य स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक को संतान सुख, पत्नी व गृहस्थ सुख, भाग्य व सौभाग्य का सुख पूर्ण रूप से मिलेगा।

निशानी–जातक अध्ययन-अध्यापन के काम में ज्यादा रूचि लेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का सर्वागीण विकास होगा। उसे भौतिक व आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–ऐसा जातक पराक्रमी होगा। कुटुम्ब-परिवार में रहने वाला होगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुनलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। लग्न स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होगा। दो केन्द्रों का स्वामी होकर बृहस्पति क्रमशः पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः आपका भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। धन की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान की उत्पत्ति के साथ पुनः भाग्योदय होगा। जीवन आराम से गुजरेगा।

3. **गुरु + मंगल**–जातक सिद्धांत प्रिय एवं हठी होगा।
4. **गुरु + बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक उच्च शैक्षणिक प्रतिभा वाला Highly Qualified होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक धनी एवं उत्तमश्रेणी के व्यापार का स्वामी होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोंनो ग्रह प्रथम स्थान में मिथुन राशि में है। यहां बृहस्पति की अपनी मित्रराशि एवं अपनी उच्चराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण जातक हठी होगा तथा परिवार-कुटुम्ब वालों के प्रति लगाव नहीं रखेगा।
8. **गुरु + केतु**–ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में

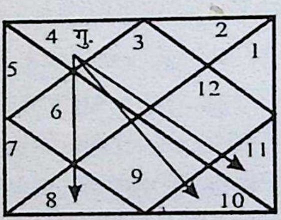

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां द्वितीय स्थान में बृहस्पति उच्च (कर्क) राशि में है। कर्कराशि के अंशों में बृहस्पति परमोच्च का होता है। बृहस्पति की यह स्थिति जातक के लिए परमसौभाग्यशाली होने का प्रतीक है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'सभी को तारने वाला जगतगुरु' कहा है। ऐसा जातक अपने कुल की प्रतिष्ठा को चार-चांद लगाता है। मर्यादाओं में रहते हुए उन्नति करता है। अपने कुटुम्ब की जिम्मेदायियों का निर्वहन, हंसते हुए करता है। पर आय का स्रोत धीमा होता है। जातक का वाणी गंभीर एवं धर्मप्रधान प्रामाणिक होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि), आठवें भाव (मकर राशि) एवं अपने स्वयं के घर राज्यभाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम (समर्थ) होता है।

विशेष–'कारको भावनाशाय' सूत्र के अनुसार कई बार उच्च का बृहस्पति यहां धन, कुटुम्ब, संतान व दाम्पत्य के सुख में बाधक हो जाता है। अतः बृहस्पति यहां पूर्ण शुभ फल तभी देगा जब बृहस्पति किसी शुभग्रह से युत का दृष्ट हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा उसका सर्वांगीण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक धनवान होगा। भाई-कुटम्बी व मित्रों से धन की प्राप्ति होगी।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न में द्वितीय स्थान गुरु+चंद्र की कयुति वस्तु: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होकर **किम्बहुनायोग** बनाएगा। इनकी अमृत दृष्टि षष्टमभाव, अष्टमभाव एवं दसम भाव पर पड़ेगा। फलत: आपके शत्रु नष्ट होंगे। आपका राजनीति में वर्चस्व रहेगा। आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगे एवं धन की कोई कमी आपकी उन्नति में बाधक नहीं होगी।
3. **गुरु + मंगल**–यहां 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक धनवान होगा। राजनैतिक पराक्रम वाला व्यक्ति होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक बुद्धिमान होगा। बुद्धिबल से रुपया कमाएगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक विद्यावान होगा। विद्या के बल पर धन अर्जित करेगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा। भाग्य कदम-कदम पर साथ देगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में है। यहां बृहस्पति अपनी उच्चराशि एवं अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण धन के प्रति लापरवाह होगा। जहां जरूरत नहीं होगी वहां रुपया खर्च कर देगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक धर्मगुरु या धार्मिक वक्ता होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

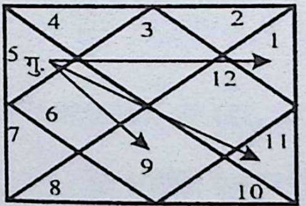

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां तृतीयस्थ बृहस्पति अपने मित्र सूर्य की सिंहराशि में हो। जातक पराक्रमी होगा। जातक को राज्यसुख, पितृसुख, भाईयों-मित्रों का सुख, नौकरी-व्यवसाय का सुख मिलेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गरजते शेर' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक बहुत हिम्मतवाला होता है

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा विपरीत परिस्थतियों में भी अपना धैर्य नहीं खोता। जातक समाज में, राजनीति में, यश-प्रतिष्ठा मिलती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि), भाग्य भवन (कुंभ राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) पर होगी। इससे स्त्री, गृहस्थ सुख, सौभाग्य, बड़े भाई, धन, पद, घर और जमीन-जायदाद का सुख मिलेगा।

निशानी–अपने से बड़ी उम्र के लोगों से लाभ होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुंमुखी विकास होगा। सौभाग्य में वृद्धि होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम तेज होगा। भाई-कुटुम्बी इष्ट मित्रों की सहायता जातक को समय-समय पर मिलती रहेगी।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के तृतीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तमभाव, नवमभाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि होंगे। फलत: विवाह के बाद भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। आवक के जरिए नौकरी एवं स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से बहुमुखी होंगे। यह युति आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक अपने पराक्रम से आगे बढ़ेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक विद्यावान होगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा। जातक की संतान भी पढ़ी-लिखी होगी।
6. **गुरु + शनि**–जातक मित्रों के सहयोग जनसंपर्क से आगे बढ़ेगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां तृतीयस्थ दोनों ग्रह सिंहराशि में है। राहु अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण भाईयों से अनबन एवं भागीदारों में मनमुटाव रहेगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, प्रकाशक या सम्पादक होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

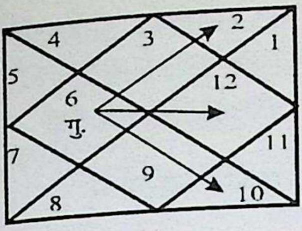

फलदायक है। यहां चतुर्थ स्थान में बृहस्पति कन्या (शत्रु) राशि में होगा। यहां बैठकर बृहस्पति 'केसरीयोग' एवं 'कुलदीपकयोग' की सृष्टि करेगा। ऐसे जातक को माता, भूमि, भवन, नौकरी-व्यवसाय का पूर्ण सुख मिलता है। लालकिताब वालों ने इसे नेकराह का मुसाफिर कहा है। ऐसा जातक चतुर्दिक मान-प्रतिष्ठा व सफलता प्राप्त करता हुआ नेक राह पर चलता है। जातक के जाति-समाज, व्यवसाय, राजनीति इत्यादि में सर्वत्र प्रतिष्ठा मिलती है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मकरराशि), दशम स्थान (मीनराशि) एवं द्वादश स्थान (वृषराशि) को देखेगा। फलतः जातक दीर्घायु वाला, धार्मिक व परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करने वाला। राजा से सम्मान प्राप्त करता है।

निशानी–जातक धन का अपव्यय नहीं करता एवं कलह-लड़ाई-झगड़े, ईर्ष्या मे विश्वास नहीं रखेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक उच्च पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक को घर का मकान, वाहन एवं भौतिक सुख सदैव उपलब्ध रहेगे।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के चतुर्थ स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ स्थान चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगी जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दसम भाव एवं द्वादश पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः खर्च बढ़चढ़ कर रहेगा। राजकाज में प्रभाव वर्चस्व दबदबा रहेगा। जातक की आयु लम्बी होगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक अपने कुटुम्ब कुल का नाम स्वपराक्रम से रोशन करेगा।
4. **गुरु + बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा। जातक का मातृपक्ष शक्तिशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–ऐसा जातक Highly qualified उच्च शैक्षणिक डिग्री को प्राप्त होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. **गुरु + राहु**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण माता के सुख में कमी रहेगी। सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी।
8. **गुरु + केतु**–जातक किसी धार्मिक ट्रस्ट या धर्मस्थान का प्रधान होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में

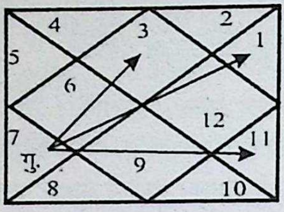

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। पंचम स्थान में बृहस्पति तुला (शत्रु) राशि में होगा। जातक विद्यावान-ज्ञानवान होगा एवं गृहस्थ के सम्पूर्ण सुख को भोगेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को ब्रह्मज्ञानी कहा है। जातक बड़ी इज्जत-आबरू वाला, अपनी सलाह से लोगों की पीड़ा-कष्ट को दूर करने में समर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति का पुत्र प्रतिष्ठित होता है। जातक भाग्योदय पुत्र उत्पत्ति के पश्चात् होता है तथा प्रौढावस्था ज्यादा सुखमय होती है।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभ राशि), लाभस्थान (मेष राशि) और लग्नस्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को पुरुषार्थ-परिश्रम का यथेष्ट फल मिलेगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में लाभ कमाएगा एवं परम सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक के पास सबकुछ होते हुए भी व्यवसाय-नौकरी, संतान पक्ष में असंतोष रहता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वागीण उन्नति होगी। कोर्ट-केस में विजय मिलेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक बुद्धिमान होगा। आध्यात्म-मार्ग का पथिक होगा। जातक के पास पूर्व संचित पुण्य के कारण पूर्वाभास की शक्ति होगी।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के पंचम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। पंचम स्थान में ये दोनों शुभ ग्रह बैठकर भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का व्यक्तित्व तेजस्वी होगा। व्यापार-व्यवसाय द्वारा जातक के अतुल धन की प्राप्ति होती रहेगी। अन्य दुर्योग न हो तो जीवन सुखी रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **गुरु + मंगल**—जातक व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। टैक्निकल व मैकेनिकल कार्य में रुचि रखेगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक व्यापार प्रिय होगा एवं व्यापार से धन कमाएगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक कला प्रिय, गुणों का पारखी एवं ज्ञानी होगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक परम सौभाग्यशाली एवं महाधनी होगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां पंचमभाव में दोनों ग्रह तुलाराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण पुत्र संतति विलम्ब में होगी विद्यायोग में अनपेक्षित बाधा संभव।
8. **गुरु + केतु**—धार्मिक क्रिया करने पर तेजस्वी संतति का पिता होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति षष्ट्म स्थान में

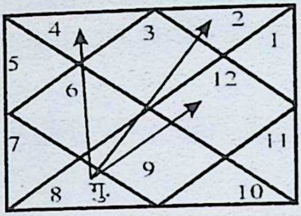

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से ि[illegible]नयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। छठे स्थान में बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बृहस्पति छठे जाने से 'विवाहभंगयोग' एवं राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई। जातक को गृहस्थसुख एवं राज्यसुख प्राप्त करने में दिक्कतें-बाधाएं आएगी। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'मुफ्तखोर' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक साधु स्वभाव वाला होता हुआ भी बिना परिश्रम किये धन अर्जित करने में विश्वास रखता है। जातक अपनी बुद्धि, ज्ञान व अनुभव का पूरा लाभ नहीं उठा पाता।

दृष्टि—छठे भावगत बृहस्पति की दृष्टि दसम स्थान (मीनराशि), व्ययस्थान (वृषराशि) एवं धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलतः जातक का धन, शत्रु-रोग एवं कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।

विशेष—इस बृहस्पति को शुभ बनाने के लिए व्यक्ति पीले रंग का ख्याल जेब में रखना चाहिए। भिखायियों को भोजन एवं बृहस्पति को केले का दान करने से गुरु नेक हो जाता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—ऐसे जातक का 'पराक्रमभंग' होता है। जातक को राजा से दण्ड या समाज से तिरस्कृत (अपमान) जनक कार्यवाही संभव है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के छठे स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है छठे स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। एवं इस कुण्डली में 'धनहीनयोग', 'विवाहभंगयोग' एवं 'राजभंगयोग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभफलदायक न होकर धन के प्रति संघर्ष का संकेत देता है।
3. **गुरु + मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक के पास गाड़ी-घोड़ा, बगंला, बैंक-बैलेंस वगैरा होगें।
4. **गुरु + बुध**—जातक को परिश्रम का उचित फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—विद्या में रुकावट, खर्च के प्रति चिंता संभव।
6. **गुरु + शनि**—भाग्योदय में बाधा, विलम्ब विवाह संभव है।
7. **गुरु + राहु**—यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। चाण्डालयोग के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित रूप से बाधा पहुंचेगी।
8. **गुरु + केतु**—नीति वाक्यों एवं धैर्य के माध्यम से जातक अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

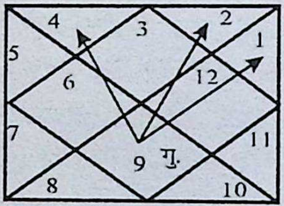

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां सप्तम स्थान में बृहस्पति स्वगृही धनुराशि का है। फलतः यहां पर क्रमशः कुलदीपकयोग, केसरीयोग एवं हंसयोग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पराक्रमी, कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करने वाला यशस्वी जातक होता है। लालकिताब वालों ने इसे 'गृहस्थ में फंसा साधु' कहा है। ऐसा जातक धर्म-कर्म में अग्रणी व दौलतमन्द होता है। जातक माता-पिता का सेवक होता है तथा प्रथम पुत्र की उत्पत्ति के बाद प्रतिष्ठा एवं आवक बढ़ती है।

दृष्टि—सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि एकादश (मेष राशि), लग्नस्थान (मिथुन राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्ब एवं मित्रों का रक्षक होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निशानी–जातक के आवक के जरिए दो-तीन प्रकार के होगे।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक जबरदस्त उन्नति करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जिससे जातक के स्वयं का पराक्रम बढ़ेगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के सप्तम स्थान मे गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृही होने से '**हंसयोग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह लाभस्थान, लग्नभाव एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलता आपका व्यक्तित्व 24 वर्ष की आयु में निखरना शुरू हो जायेगा। 32 वर्ष की आयु मे आपका पराक्रम पूर्ण यौवन पर होगा। यदि लग्नेश बुध आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है तो निश्चय ही आप एक उत्कृष्ट श्रेणी के सफल व्यक्तियों में से एक है।
3. **गुरु + मंगल**–जातक धनी होगा। व्यापार प्रिय होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को अल्प पुरुषार्थ का विशेष फल मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक बुद्धि कौशल से अपने क्षेत्र में नये कीर्तिमान् स्थापित करेगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक परमसौभाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह धनुराशि में है। जातक का ससुराल प्रभावशाली व संपन्न होगा। यहां 'चाण्डालयोग' के कारण पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
8. **गुरु + केतु**–समझौते वाली नीति एवं धैर्य के माध्यम से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में

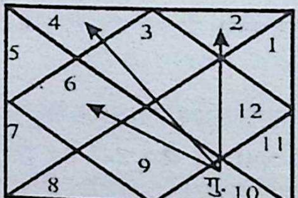

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां अष्टम स्थान में बृहस्पति अपनी नीच (मकर) राशि में होगा। मकरराशि के पांच अंशों में बृहस्पति परमनीच

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का कहलाता है। बृहस्पतिं की इस स्थिति में क्रमशः 'विवाह भंगयोग' एवं 'राज्यभंगयोग' की सृष्टि होती है। जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहेगी। राज्यपक्ष में भी वांछित लाभ नहीं मिल पाएगा। लालकिताब वालों ने इसे देवकृपा का प्रतीक' कहा है। ऐसा जातक सोने की लंका तक का दान करने में नहीं हिचकिचाता।

दृष्टि–अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), धन भाव (कर्क राशि) एवं चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी परंतु जातक खर्च की बाहुल्यता के कारण ऋणी रहेगा।

विशेष–ऐसे जातक को शरीर के सुवर्ण आभूषण धारण करना चाहिए। गुप्त दान या पीले फलों के दान करते रहना चाहिए तो बृहस्पति शुभ हो जाएगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतें आएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम भंग होगा। राजा से दण्ड मिल सकता है। समाज से बहिष्कार या तिरस्कार जैसी घटना घटित हो सकती है।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के अष्टम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। अष्टम भाव में दोनों ग्रह होने के कारण आपकी कुंडली में क्रमशः 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई है। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभफलदाई न होकर धनसंग्रह में बाधक, विवाह सुख में बाधक एवं सरकारी नौकरी में बाधक है। राजकाल में किसी मुकदमें में पराजय भी हो सकता है।
3. **गुरु + मंगल**–यहां मंगल होने पर 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजा के समय पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–विद्या में बाधा, संतान की तरक्की में भी बाधा महसूस होगी।
6. **गुरु + शनि**–यहां शनि होने पर नीचभंगराजयोग बनेगा। जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण विलम्ब विवाह योग अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित बाधा के योग बनते हैं। यहां द्विभार्ययोग भी संभव है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. **गुरु + केतु**–यदि धैर्य एवं समझौतेवादी नीति से काम न लिया तो गृहस्थ जीवन कष्टमय हो सकता है।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में

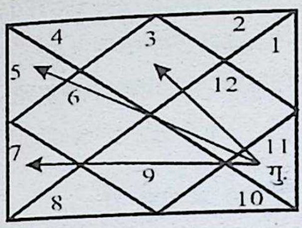

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। नवम् स्थान में बृहस्पति कुंभ (सम) राशि में है। जातक बुद्धिमान, ज्ञानवान, धैर्यवान होता है। जातक की बौद्धिक ऊर्जा सकारात्मक होती है। लालकिताब वालों ने इसे 'दहकता सोना' कहा हैं जातक अपने बुजुर्गों की इज्जत करता है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। जातक महत्वकांक्षी होता है। राज्यपक्ष व राजनीति में जातक का दबदबा रहता है। कोर्ट-कचहरी में उसे विजय मिलती है।

दृष्टि–नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि), पराक्रमस्थान (सिंहराशि) एवं पंचम भाव (तुलाराशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। पुत्रवान होगा। उसे परिश्रम में सफलता मिलेगी।

निशानी–जातक विनम्र, उदार व शालीन होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक गंगास्नान को जायेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम बहुत तेज होगा। जनसम्पर्क विस्तृत होगा। कुटुम्बीजनों मित्रों से लाभ है।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के नवम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। नवमभाव में बैठकर दोनों शुभग्रह लग्नस्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपके व्यक्तित्व में बढ़ोत्तरी 24 वर्ष की आयु से शुरू हो जाएगी। विवाह शुभद रहेगा एवं प्रथम संतति के साथ ही भाग्योदय का पूर्ण विकास होगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक प्रसिद्ध उद्योगपति होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक प्रसिद्ध व्यापारी होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. **गुरु + शुक्र**–जातक विद्याबल आगे बढ़ने वाला, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक परम भाग्यशाली, राजा के सामन वैभवशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। जातक का राजनैतिक वर्चस्व तो रहेगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण पिता से अनबन रहेगी अथवा राजनीत में पद प्राप्ति के अवसर पर धोखा मिलेगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक सिद्धांतवादी व्यक्ति होगा एवं भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में

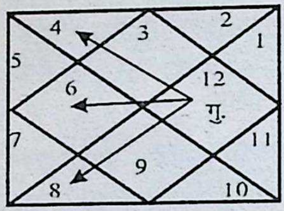

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां दसम स्थान में बृहस्पति स्वगृही है। फलत: यहां पर क्रमश: कुलदीपक योग, केसरीयोग एवं हंसयोग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा के समान परम पराक्रमी, नौकर-चाकर से युक्त, उत्तम वाहन का स्वामी होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'बच्चों को यतीम छोड़ने वाला बाप' कहा है। जो कम जंचता है। ऐसे व्यक्ति व्यक्तिगत और समष्टिगत उन्नति में विश्वास रखते हैं। जातक को माता-पिता, पत्नी-पुत्र, धन, यश, जमीन-जायदाद का पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि–दशमस्थ बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (कर्क राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं छठेभाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक अतिधनी होगा। अच्छे भवन, वाहन का स्वामी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होती है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक महान् पराक्रमी होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं धनी होगा। मित्रों से जनसम्पर्क से लाभ होता रहेगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के दशम स्थान में चंद्र+गुरु की युति वस्तुत: धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बृहस्पति स्वगृही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर केन्द्रस्थ होने से 'हंसयोग' की सृष्टि कर रहा है। दोनों ग्रह बली होकर धनस्थान, सुखस्थान एवं छठे भाव को पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपके पास चल-अचल सम्पत्ति बहुत होगी। आपके अनेक वाहनों का सुख भी होगा। आयुदीर्घ होगी। पद्मसिंहासन योग के कारण आप साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ जाएंगे।

3. **गुरु + मंगल**—जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
4. **गुरु + राहु**—यहां दोनों ग्रह मीन राशि में है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। परंतु **'चांडालयोग'** के कारण राजा (सरकार) में दण्ड प्राप्ति संभव है। पिता की सम्पत्ति में विवाद रहेगा।
5. **गुरु + केतु**—जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली, न्यायप्रिय एवं कीर्तिवान् होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

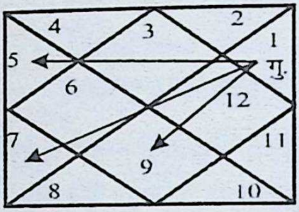

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। एकादश स्थान में बृहस्पति मेष (मित्र) राशि में होता है। ऐसे जातक का जीवनसाथी आकर्षक, बुद्धिमान व शिक्षित होता है। जातक नौकरी, व्यापार व कमाई के कार्यों में दक्ष होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पीति को 'खजूर के वृक्ष पर अकेला' कहा है। जातक को जमीन-जायदाद का लाभ मिलेगा। परंतु अपने विचारधारा का आप अकेला व्यक्ति होगा।

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि तृतीयभाव (सिंहराशि) पंचमभाव (तुलाराशि) एवं सप्तमभाव अपने ही घर (धनुराशि) पर होगी। फलतः जातक को भाईयों का सुख, पत्नी (गृहस्थ) का सुख एवं संतान का सुख उत्तरोत्तर उत्तम होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा एवं विभिन्न भौतिक सुखों को प्राप्त होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक महान् पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा। कुटुम्बीजनों, मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के एकादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। ये दोनों शुभग्रह यहां बैठकर तृतीय स्थान, पंचमस्थान एवं सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टिपात करेंगे। फलत: आपके पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि होगी। संतान उत्तम विद्यासुख श्रेष्ठ होगा। विवाह अच्छे घर-घराने में होगा। पत्नी सुंदर मिलेगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक पराक्रमी होगा पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।
4. **गुरु + बुध**–जातक व्यापार प्रिय होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक बुद्धिबल से कमाने वाला उच्च व्यवसायी होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक भाग्यशाली व्यापारी होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में है। जातक पत्नी एवं पिता पक्ष में सुखी होगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण व्यापार-व्यवसाय में अपेक्षित लाभ नहीं होगा।
8. **गुरु + केतु**–ऐसा जातक यशस्वी उद्योगपति होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में

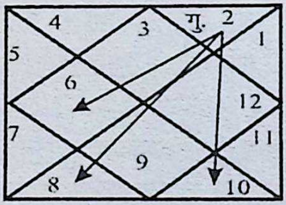

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां द्वादश स्थान में बृहस्पति वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति की इस स्थिति में क्रमश: 'विवाहभंगयोग' एवं 'राज्यभंगयोग' की सृष्टि होगी। जातक का विलम्ब विवाह होगा अथवा गृहस्थ सुख में अकारण बाधाएं उत्पन्न होगी। राज्यपक्ष में भी, राजनीतिज्ञ लोगों से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को उच्चतम ज्ञानी कहा है। जातक तंत्र-मंत्र, धर्म-अध्यात्म का ज्ञानी होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ बृहस्पति की दृष्टि चुतर्थभाव (कन्याराशि), षष्टम भाव (वृश्चिकराशि) एवं अष्टमभाव (मकरराशि) पर होगी। फलत: शारीरिक सुखों में बाधा, शत्रुओ का प्रकोप एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी–ऐसा जातक प्रौढ़ावस्था में प्राय: संन्यास की ओर प्रवृत होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में रोग उत्पन्न होगे। अशुभ परिणाम फलिभूत होंगे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रमभंग होगा। सरकार से दण्ड या समाज से अपमान होगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के द्वादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति गजकेसरी योग की सृष्टि कर रही है। यहां उच्च का है, चंद्रमा स्वगृही, इससे अधिक और क्या चाहिए? गुरु चंद्र की यह युति धनेश व दसमेश की युति है। आपके भाग्य में अद्वितीय वृद्धि कर रही है। यह युति संतति सुख देगी परंतु विवाह सुख में बाधक है। पत्नी फिजूल खर्च करने वाली होगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को परिश्रम का यथेष्ट फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–ज़ातक विलासी होगा एवं यात्राओं से धन कमाएगा।
6. **गुरु + शनि**–भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह वृषराशि में है। यहां '**चांडालयोग**' के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृह सुख में बाधा होने के निश्चित योग बनते हैं। जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेश बस जाएगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक धार्मिक कार्य, परोपकार, तीर्थयात्रा में, शुभकार्य में धन खर्च करेगा।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

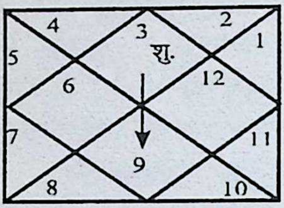

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां प्रथम स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक गीत-संगीत, नृत्य-कला, स्त्री व रोमांच के प्रेमी होते हैं। पंचमेश लग्न में होने से जातक का सोया हुआ भाग्य खुलता है। प्रयत्न यदि उत्तम हो तो जातक सफलता की बुलंदियों को छू लेता है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र का नाम **'रंग-बिरंगी माया'** दिया है। यह शुक्र **'कुलदीपकयोग'** भी बना रहा है। ऐसे जातक के जीवन का सही विकास विवाह के बाद होता है। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। धन, विद्या, यश, वाणिज्य-व्यापार से लाभ होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) पर होगी। जीवनसाथी सुंदर मिलेगा।

निशानी–ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक स्त्रियों का सुख भोगता है। जातक दूसरों की सलाह लेकर काम करेगा तो उन्नति ज्यादा होगी। सफलता अधिक मिलेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यहां सूर्य की स्थिति से जातक तेजस्वी होगी, परंतु विचलित मनोवृत्ति वाला होगा। कभी 'हां' कभी 'ना' के बीच में निर्णय झूलता रहेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–चंद्रमा यहां शत्रुक्षेमी होकर जातक की चित्तवृत्ति अस्थिर करता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **शुक्र+मंगल**–मंगल के कारण जातक हठी, कलहकारी किन्तु विलासी प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा।
4. **शुक्र+बुध–'भद्रयोग'** के कारण राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–यहां गुरु के कारण गृहस्थ सुख उत्तम, संतान सुख उत्तम एवं जातक भाग्यबली होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शनि की युति से जातक ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–जातक के कार्य में अस्थिरता रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में

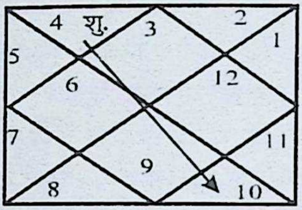

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। द्वितीय स्थान में शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक के रोमांटिक स्वभाव के कारण धनसंग्रह में बाधा होगी। विलासित पूर्ण वस्तुओं में धन का अपव्यय होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'मोहमाया का उम्दा गृहस्थी'** कहा है। ऐसा व्यक्ति सुंदर, आकर्षक, विनम्र एवं उदार स्वभाव का होगा। जातक की आथ्रिक सम्पन्नता प्रथम संतति के बाद ज्यादा मुखरित होगी।

दृष्टि–शुक्र की दृष्टि अष्टमस्थान (मकरराशि) पर होगी, फलतः जातक की आयु दीर्घ होती है।

निशानी–ऐसा जातक यदि ईश्वर पर भरोसा रखकर काम करेगा तो उसे किसी वस्तु की कमी नहीं रहेगी। देवी की उपासना ज्यादा फलेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। धन एवं शुभफलों की प्राप्ति अधिक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–जातक को मित्रों द्वारा धन मिलेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक की वाणी विनम्र-मधुर होगी। जातक धनी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक की वाणी कर्कश, कटाक्ष वाली होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. **शुक्र+बुध**–जातक मधुर वाणी एवं मीठी बातें करने वाला होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक महाधनी एवं विद्यावान होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा। हुनुरबंद होगा।
7. **शुक्र+राहु**–धन का अपव्यय अधिक होगा।
8. **शुक्र+केतु**–धनखर्च के प्रति चिंता रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में

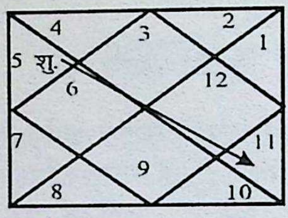

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। तृतीय स्थान में शुक्र सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक का पराक्रम विवादास्पद होता है। भाई-बहनों व मित्रों से मनमुटाव रह सकता है। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को **'इश्क का परवाना'** कहा है। ऐसे जातक पराई स्त्री पर डोरे डालता है और उनसे अनैतिक सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करता है। ऐसा जातक यार-दोस्तों पर, सामाजिक प्रतिष्ठा कायम रखने के चक्कर में बहुत पैसा खर्च करता है। जातक फिजूलखर्ची होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। ऐसा जातक थोड़ी मेहनत से ही उत्तम फलों की प्राप्ति करने में सफल होता है।

निशानी–जातक की प्रगति विवाह के बाद होती है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यहां सूर्य होने से जातक को भाई-बहन दोनों का सुख मिलता है, पर बड़े भाई की आयु के लिए सूर्य की यह स्थिति ठीक नहीं।
2. **शुक्र+चंद्र**–पराक्रम स्थान में धनेश पंचमेश युति सार्थक है। विद्या द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा एवं खटपट भी रहेगी।
4. **शुक्र+बुध**–लग्नेश का तृतीयस्थान में पंचमेश शुक्र से युति शुभ है।
5. **शुक्र+गुरु**–सप्तमेश पंचमेश की युति तृतीयस्थान में विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ाएगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **शुक्र+शनि**–भाग्येश पंचमेश की युति तृतीय स्थान में व्यक्ति के भाग्यवृद्धि का संकेत देती है।
7. **शुक्र+राहु**–परिवार में मनमुटाव रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–मित्रों में असंतोष रहेगा।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

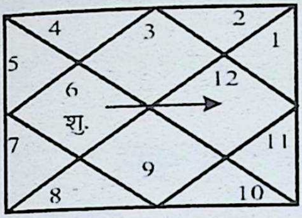

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र कन्या (मित्र) राशि में होते हुए नीच का होता है। कन्याराशि के 27 अंशों में परमनीच का होता है। शुक्र केंद्रवर्ती होने से '**कुलदीपकयोग**' बना रहा है। चतुर्थभाव में शुक्र बलवान होने से हानिकारक नहीं होता। जातक को उत्तम वाहन, धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र की '**खुश्की का सफर**' कहा है। ऐसा व्यक्ति भरपूर संपत्ति, सवारी एवं भौतिक वैभव से सम्पन्न होता है। जातक की शिक्षा संघर्षपूर्ण होती है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शुक्र की दृष्टि दशमभाव (मीनराशि) पर होगी। यह शुक्र की उच्च राशि है। फलत: जातक राजनीति में उच्च पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसे जातक उन्नति विवाह के बाद होती है पर संतान आज्ञाकारी नहीं होते। विवाह के पहले प्रेमप्रसंग संभव है, बाद में सब कुछ सामान्य रहता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक उपलब्धियों एवं सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–तृतीयेश सूर्य केन्द्र में शुक्र के साथ शुभ स्थिति की सूचक है। जातक ऐश्वर्यवान् होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश का पंचमेश शुक्र के साथ केन्द्रस्थ होना बहुत शुभ है। जातक धनी होगा। एकाधिक मकानों का स्वामी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–मंगल का दिक्बली होकर शुक्र के साथ केन्द्र में बैठना शुभ है। जातक बड़ी भूमि का स्वामी होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. **शुक्र+बुध**–बुध के कारण '**नीचभंगराजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य को भोगना है।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक का प्रथम भाग्योदय विवाह के बाद, द्वितीय भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
6. **शुक्र+शनि**–भाग्येश व पंचमेश की युति केंद्र में जातक को उद्योगपति बनाएगी।
7. **शुक्र+राहु**–यहां राहु की युति से शुक्र चतुर्थ व पंचम दोनों भाव के शुभ फल नष्ट करता है।
8. **शुक्र+केतु**–केतु की युति से माता बीमार रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में

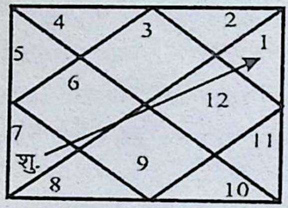

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। पंचम स्थान में शुक्र तुलाराशि में स्वगृही होता है। ऐसा जातक विद्या, बुद्धि, स्त्री-संतान सुख से युक्त होता है। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि Educational Degree मिलती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'बच्चों से भरा घर-परिवार' की संज्ञा दी है। जब तक जातक की पत्नी जीवित है, उसके जीवन में कोई रुकावट (कमी) नहीं आएगी।

दृष्टि–पचंमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक समाज-जाति का गौरव एवं संस्कारी व्यक्ति होगा।

निशानी–जातक के छः कन्या होती है। जातक प्रजावान् होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को खूब धन-दौलत, तरक्की मिलती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यदि सूर्य यहां है तो 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश पंचम स्थान में स्वगृही शुक्र के साथ होने से जातक अपनी विद्या-बुद्धि में धन अर्जित करेगा। जातक की संतान भाग्यशाली होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **शुक्र+मंगल**—जातक उद्योगपति होगा, ठेके व व्यापार से धन कमाएगा।
4. **शुक्र+बुध**—जातक का व्यक्ति आकर्षक होगा। जातक धनी व्यक्ति होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—जातक आध्यात्मिक एवं भक्ति मार्ग का पथिक होगा।
6. **शुक्र+शनि**—यदि शनि यहां हो तो 'किम्बहुना नामक राजयोग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**—विद्या एवं पुत्र संतति में बाधा।
8. **शुक्र+केतु**—विलम्ब संतति या संघर्ष के साथ विद्या की संभावना।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में

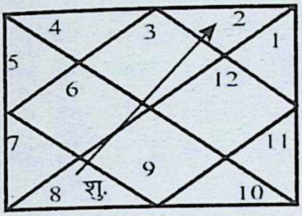

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां छठे स्थान में शुक्र वृश्चिक (सम) राशि का होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण '**संततिहीन योग**' बनता है। परंतु व्ययेश का छठे जाने से '**सरलयोग**' की सृष्टि भी होती है। शुक्र की इस स्थिति के कारण व्यक्ति में कामातिरेक की बाहुल्यता होती है। जातक परिश्रमी होता पर भोग-विलास, नशे-पते या जुआं के शौक में अपनी बरवादी का खुद ही कारण होता है।

दृष्टि—छठे भावगत शुक्र की दृष्टि अपने ही घर (वृषराशि) व्यय स्थान पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं कई बार राह से भटक जाएगा।

निशानी—ऐसा जातक प्रायः अपनी योग्यता एवं रुचि से भिन्न विषयों के क्षेत्र में कार्य करता है तथा किस्मत को कोसता रहता है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—पराक्रमभंगयोग बनता है। विद्या में रुकावट। निर्णय गलत होंगे।
2. **शुक्र+चंद्र**—धनहीनयोग के कारण आर्थिक संकट रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा पर शरीर में रोग रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**—जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा रहेगा। गुप्त रोग की संभावना है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **शुक्र+शनि**–भाग्योदय में बाधा परंतु विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–विद्या पुत्र संतति सुख में बाधा।
8. **शुक्र+केतु**–शल्य चिकित्सा योग। गुप्त बीमारी रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में

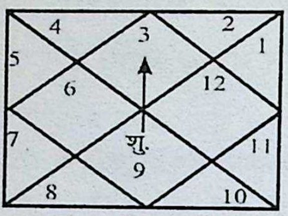

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। सतम स्थान में शुक्र धनु (शत्रु) राशि में होता है। शुक्र की इस स्थिति में '**कुलदीपकयोग**' बनता है। जातक उत्तम विद्या, बुद्धि, स्त्री व संतान के सुख से युत होता है। जातक की पत्नी खूबसूरत, स्नेह, ममता की मूर्ति, धर्मभीरू परंतु कुछ उग्र स्वभाव की होती है। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि) पर होगी। फलत: जातक अल्प प्रयत्न से बहुभाग्य का स्वामी होगा।

निशानी–ऐसा जातक परदेश में ज्यादा धन कमाता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–जातक का ससुराल, जीवनसाथी प्रभावशाली होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक को ससुराल से धन मिलेगा। लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक के गृहस्थ जीवन में सुख-दु:ख का सम्मिश्रण रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
5. **शुक्र+गुरु**–'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। जीवनसाथी सुंदर होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–गृहस्थ सुख में कलह रहेगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में

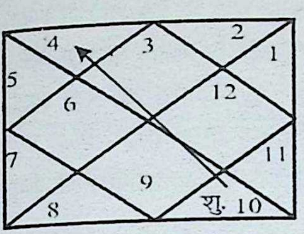

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां अष्टम स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति '**संततिहीन योग**' की सृष्टि करती है परंतु व्ययेश अष्टम में होने से '**सरलयोग**' की भी सृष्टि करती है। ऐसे जातक के जीवन में दूरदर्शिता का अभाव होता है तथा उसकी विद्या एवं बुद्धि का सही उपयोग समय पर नहीं हो पाता। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को '**चाण्डाल औरत**' की संज्ञा दी है। ऐसे जातक की पत्नी की जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होगा।

दृष्टि–अष्टम भाव में स्थिति शुक्र की दृष्टि धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलत: जातक धन को खर्च करते वक्त तनिक भी विचार नहीं करता।

निशानी–ऐसा जातक यदि पत्नी को तंग करेगा तो उसे लगातार मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे शुक्र की शुभ करने के लिए गाय (दूध) का दान करें। जातक को धर्म स्थान के सामने सिर झुकाकर चलना चाहिए।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–पराक्रम भंगयोग के कारण मानहानि होगी। रोग का प्रकोप होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनहीन योग के कारण आर्थिक परेशानी बनी रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शुक्र+बुध**–लग्नभंगयोग के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–विलम्ब विवाह या गृहस्थ सुख कलुषित रहेगा। सैक्स रोग होगा।
6. **शुक्र+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान एवं भोगी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–गुप्त बीमारी एवं अचानक दुर्घटना संभव।
8. **शुक्र+केतु**–शल्यचिकित्सा योग बनता है।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

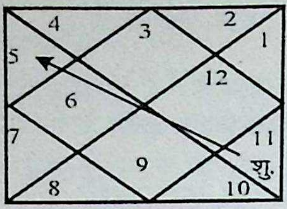

देने वाला है। यहां नवम स्थान में शुक्र कुंभ (मित्र) राशि में होगा। यह शुक्र पंचम भाव से पंचम है, उच्चाभिलाषी है। अतः श्रेष्ठ है। इस भाव में शुक्र के पिता की दीर्घआयु होती है। जातक को स्त्री-धन, संतान, विद्या-बुद्धि एवं सौभाग्य का पूर्ण सुख मिलता है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'मिट्टी की काली आंधी'** कहा है। ऐसे जातक को स्त्री या दौलत दोनों में से एक का ही पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि–नवम स्थानगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलतः जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जनसंपर्क बहुत तेज होगा।

निशानी–ऐसा व्यक्ति यदि सम्मानित स्त्रियों का अपमान करें तो उसका भाग्य तत्काल रूठ जाएगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का चतुमुखी भाग्योदय होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्बी एवं मित्रों का सकारात्मक सहयोग रहेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश चन्द्र भाग्यस्थान में शुक्र के साथ होने से धन द्वारा भाग्य में वृद्धि होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा, पर गुप्त शत्रु परेशान करेगें।
4. **शुक्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। सफलता कदम चूमेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–विवाह के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक करोड़पति होगा। भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–भाग्योदय में लगातार बाधा से जातक परेशान हो जाएगा।
8. **शुक्र+केतु**–जातक का जीवन में, संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। दशम स्थान में शुक्र मीनराशि का उच्च का होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। शुक्र की इस स्धिति से यहां **'कुलदीपकयोग'**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

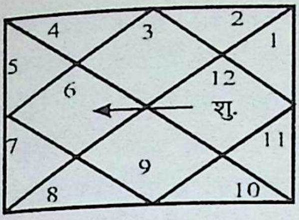

एवं '**मालव्ययोग**' की सृष्टि हो रही है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं साधनों का स्वामी होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को '**खाब्ब हरा**' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति प्रेम-प्रसंगों में उलझा रहता है। सुंदर स्त्रियों के साथ संपर्क करने हेतु लालायित रहता है। उसे धन, यश, परिवार, नौकरी-व्यवसाय में उन्नति होगी।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि सुख भाव (कन्याराशि) पर होने से जातक को सुंदर भवन, सुंदर वाहन, माता का सुख, भौतिक सुख एवं ऐश्वर्य के सभी साधनों की प्राप्ति होगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। राज्य से लाभ प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यहां सूर्य, शनि की युति से 'प्रवज्यायोग' बनेगा। जातक राजा होते हुए भी वैरागी होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक अति धनवान होगा। राजातुल्य ऐश्वर्यवान् होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–यहां दिक्बली मंगल 'कुलदीपकयोग' के साथ जातक का नाम रोशन करेगा।
4. **शुक्र+बुध**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक करोड़पति होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–किम्बहुनायोग, हंसयोग, मालव्ययोग, पद्मसिंहासन योग चारों एक साथ एकत्रित होने से जातक करोड़पति होगा। जातक भाग्योदय की कोई सीमा नहीं होगी। सिंह शुक्र गुरु की युति का सर्वश्रेष्ठ दृष्टांत है।
6. **शुक्र+शनि**–जातक परमसौभाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–राज्यपक्ष में बाधा, सरकारी परेशानी रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–सरकारपक्ष में गुप्त संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

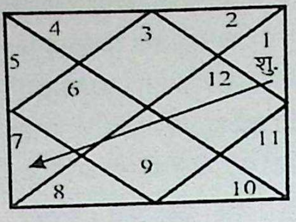

देने वाला है। यहां एकादश स्थान में शुक्र मेष (सम) राशि का होगा। जातक बुद्धिमान, धनवान, स्त्री व संतान सुख से युक्त होता है। प्राय: माता-पिता की प्रेरणा व सहयोग से उच्च पद, प्रतिष्ठा, धन-वैभव की प्राप्ति होती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र की '**माया के लिए घूमते व्यक्ति**' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति का धन जब तक पत्नी के पास रहेगा, सुरक्षित रहेगा। अन्यथा ऐसा व्यक्ति सरलता से धन का खर्च कर देगा, संचय नहीं कर पाएगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि अपने घर तुलाराशि (पंचमभाव) पर होगी फलत: जातक संघर्ष के बाद भी विद्या (Educational Degree) प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–उच्च का सूर्य जातक को महान् पराक्रमी एवं यशस्वी बनाएगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक का उद्योग-व्यापार से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक बड़ा उद्योगपति होगा। स्वगृही मंगल व्यापार में लाभ कराएगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक का परिश्रम सदैव सार्थक रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक को गुप्त व्यापार से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–व्यापार में गुप्त नुकसान होगा।
8. **शुक्र+केतु**–व्यापार-व्यवसाय, लाभ में रुकावट आएगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

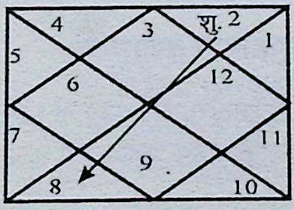

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां द्वादश स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। शुक्र की यह स्थिति '**संतानहीन**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योग' बनाती है परंतु व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से '**सरलयोग**' बना। इसलिए शुक्र शुभफलदाई हो गया है। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को '**कामधेनु गाय**' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति के पास धन-दौलत, ऐशो-आराम की सामग्री अपने आप आएगी। बलवान शुक्र के कारण स्त्री-सुंदर व आकर्षक होगी। विवाह शीघ्र होगा। ऐसा व्यक्ति धनवान, विख्यात तेजस्वी व यशस्वी होगा।

दृष्टि—द्वादशस्थ शुक्र की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—व्यक्ति को नौकरी अथवा ट्रेवलिंग व्यापार में अच्छी सफलता मिलती है।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक सुखी होगा। सम्पन्नता को प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—पराक्रम भंग योग के कारण मान भंग होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**—चंद्रमा उच्च का एवं शुक्र स्वगृही होने से 'किम्बहुनायोग' बनेगा। जातक परोपकारी एवं दानी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शुक्र+बुध**—लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा आएगी।
6. **शुक्र+शनि**—भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **शुक्र+राहु**—व्यर्थ की यात्रा में धन का अपव्यय होगा। राहु के साथ शुक्र होने से व्यक्ति कामी हो जाता है तथा नैतिक-अनैतिक तरीके से अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है।
8. **शुक्र+केतु**—यात्रा में कष्ट, नेत्रपीड़ा संभव। शल्य चिकित्सा होगी।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में

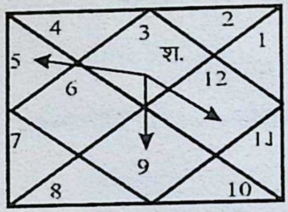

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां प्रथम स्थान में शनि मिथनु (मित्र) राशि में होगा। फलत: ऐसा जातक स्वस्थ्य शरीर वाला, उदार प्रवृत्ति विनम्र एवं गंभीर स्वभाव का होगा। ऐसा व्यक्ति स्वप्रयासों से उन्नति करता है। व्यक्ति कई बार उदासीन व एकांतप्रिय होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं राज्यभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की भाईयों से कम बनेगी। पत्नी से विचार नहीं मिलेगे एवं सरकार (नौकरी) में खटपट रहेगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की किस्मत प्राय: वृद्धावस्था में चमकती है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनुराशि) एवं दसमभाव (मीनराशि) को देखेंगे। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक धनवान होगा। जातक का किस्मत पिता की मृत्यु के बाद खुलेगी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. **शनि+चंद्र**–धनेश लग्न में शत्रुक्षेत्री पापग्रह शनि के हाथ होने से आर्थिक संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–जातक झगड़ालू+ईष्यालु व कलहकारी होगा।
4. **शनि+बुध**–**'भद्रयोग'** के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक गम्भीर स्वभाव का होगा। विवाह के बाद उन्नति पथ की ओर बढ़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **शनि+राहु**–जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।
8. **शनि+केतु**–जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में

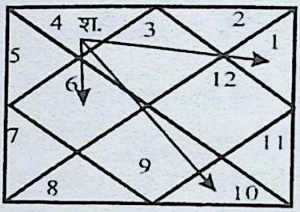

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। द्वितीय स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को प्राय: धन व कुटुम्ब सुख में परेशानी आती है। वाणी में कड़वाहट का सम्मिश्रण रहता है। लालकिताब वालों ने ऐसे शनि को **'गुरुशरण'** कहा है। ऐसे व्यक्ति की क्षमता व योग्यता बाह्य दृष्टि से कम प्रतीत होती है पर गुरु की कृपा से जातक आंतरिक रुप से शक्तिशाली, बुद्धिमान और समर्थ होता है। इस कुण्डली में धन की ताकत का पता चंद्रमा की स्थिति में चलेगा।

दृष्टि–द्वितीय शनि की दृष्टि सुखस्थान (कन्याराशि), अष्टमस्थान (मकरराशि) एवं लाभस्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक भौतिक सुख की प्राप्ति हेतु संघर्ष करेगा। व्यापार-व्यवसाय में भी संघर्ष एवं रोग के प्रकोप हेतु भी जातक को सावधान रहना होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेंगे। शुभ व अशुभ दोनों प्रकार।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि), अष्टम भाव (मकरराशि) एवं लाभस्थान मेष राशि को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी एवं भाग्यशाली होगा। जातक की आर्थिक स्थिति पिता की मृत्यु के बाद सुधरेगी।
2. **शनि+चंद्र**–जातक भाग्यशाली एवं महाधनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक का पैसा कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।
4. **शनि+बुध**–जातक अपने पुरुषार्थ से धन अर्जित करेगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक ससुराल पक्ष से भाग्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक विद्या हुनर के माध्यम से धन अर्जित करेगा।
7. **शनि+राहु**–धन के संग्रह में बाधा रहेगी।
8. **शनि+केतु**–धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में

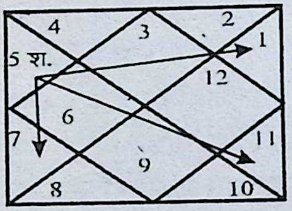

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां शनि तृतीय स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक के भाई होगे पर भाईयों से कम निभेगी। जातक परिश्रमी होगा एवं कठोर परिश्रम के द्वारा अपना भाग्योदय स्वयं करेगा। जातक भाग्यशाली होगा परंतु भागीदारों, मित्रों से ज्यादा नहीं निभेगी। जातक मशीनरी कार्यों में रुचि रखेगा, परंतु भाग्योदय 32 से 34 के पहले नहीं होगा। जातक पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) भाग्यभवन जो उसके स्वयं का घर है (कुंभ राशि) एवं लाभ भाव (मेषराशि) पर होगी। शनि की यह स्थित संतान सुख में बाधक है। स्वतंत्र व्यापार में बाधा आएगी।

निशानी–जातक छोटे भाई-बहन के सुख में कमी अनुभव करता है। शनि की यह स्थिति छोटे भाई की आयु के लिए घातक है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा संघर्षमय रहेगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) भाग्यभाव (कुंभराशि) एवं व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। फलतः जातक की संतति प्रभावशाली होगी। जातक भाग्यशूर एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद बढ़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक के भाई-बहनों का सुख होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक कुटुम्ब परिवार के साथ रहना पसंद करेगा।
4. **शनि+बुध**–जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों का सुख होगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश व सप्तमेश की युति विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराएगी।
6. **शनि+शुक्र**–पंचमेश, भाग्येश की तृतीय भाव में युति जातक का पराक्रम बढ़ाएगी।
7. **शनि+राहु**–भाईयों से अनबन रहेगी। कोर्ट में विवाद संभव है।
8. **शनि+केतु**–मित्रों में मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

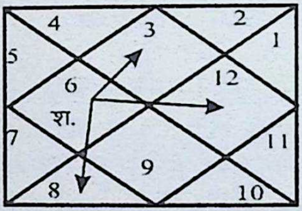

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां चतुर्थ स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति अवश्य होती है पर उसमें कुछ न कुछ कमी रहती है। लाल किताब वालों ने इस शनि को **'पानी का सांप'** कहा है। जातक जहरीले स्वभाव का होता है पर जहरीला दिखाई नहीं देता। ऐसे जातक युवावस्था में प्रेम प्रसंगों में घिरते है पर जीवन के उत्तरार्द्ध में धार्मिक होते हैं।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठेभाव (वृश्चिक राशि), राज्यभाव (मीन राशि) एवं लग्नभाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पर रोग-ऋण व शत्रु हावी रहेगे। फिर जातक उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ता रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निशानी–वृद्धावस्था में धन-दौलत भरपूर होती है। जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलते हैं।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–ऐसे व्यक्ति का जीवन घोर संघर्षों से भरा होगा। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहां केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृश्चिकराशि), दशमस्थान (मीनराशि) एवं लग्नस्थान, मिथुनराशि को देखेंगे। फलतः जातक के अनेक शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक का शहर की राजनीति में वर्चस्व होगा तथा महत्वकांक्षी जो भी योजनाएं हाथ में लेगा उसमें सफलता मिलेगी।
2. **शनि+चंद्र**–जातक धनी होगा। माता का सुख होगा, परंतु मां बीमार रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–मंगल यहां दिक्बली होगा। भूसम्पत्ति को लेकर विवाद रहेगा।
4. **शनि+बुध**–'**भद्रयोग**' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–विवाह के बाद जातक का भाग्य चमकेगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
7. **शनि+राहु**–वाहन दुर्घटना का योग है।
8. **शनि+केतु**–मातृसुख कमजोर रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

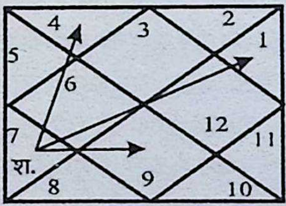

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां पंचम स्थान में शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि के अंशों में शनि परमोच्च का होता है। शनि की यह स्थिति परम सौभाग्य का सूचक है। लाल किताब वालों इस शनि को '**बुद्धू लड़का**' कहा है जो अपने भोलेपन के कारण परेशानी में पड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति ज्यादा प्लानिंग से कार्य नहीं करते, उतावलापन में किए गये कार्य से अवश्य नुकसान होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) लाभभाव (मेषराशि) एवं धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलतः जातक के विवाह में विलम्ब होगी। त्वरित धन एकत्रित करने में बाधा रहेगी।

निशानी–जातक के सात कन्याएं होती है या कन्या संतति की बाहुल्यता रहती है। यदि जातक सदाचारी होगा तो पुत्र संतान का सुख मिलेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। सौभाग्य में वृद्धि होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुलाराशि के होंगे। यहां शनि उच्च का होगा। तुलाराशि अंशों में शनि परमोच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह **'नीचभंगराजयोग'** बनाएगे। तथा सप्तमभाव (धनुराशि), एकादशभाव (मेषराशि) एवं धनभाव (कर्कराशि) को देखेंगे। फलतः जातक स्वय महाधनी होगा। पिता के मृत्यु के बाद ऐसा जातक व्यापार व्यवसाय में खूब धन कमाएगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक महाधनी होगा। भाग्यशाली होगा।
3. **शनि+मंगल**–शत्रु परेशान करेगे।
4. **शनि+बुध**–जातक महान् बुद्धिशाली होगा। हुनुरबंद होगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक का ससुराल धनाढ्य होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शुक्र स्वगृही, शनि उच्च का होने से 'किम्बहुनायोग' बनेगा। जातक महाभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–विद्या में रुकावट, कन्या संतति ज्यादा।
8. **शनि+केतु**–स्त्री संतति की बहुल्यता एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति षष्ट्म स्थान में

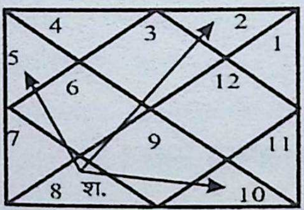

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां छठे स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि में है। अष्टमेश का छठे होने से '**विमल योग**' विपरीत राजयोग बनता है। लाल किताब वालों ने इस शनि को '**किस्मत लिखने का मालिक**' कहा है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति सर्व कार्य स्वतंत्र होता है। अपना भाग्य खुद बनाता है। जातक को समाज में प्रतिष्ठ, धन-यश व संतति सुख मिलता है। भाग्येश शनि छठे जाने से '**भाग्यभंगयोग**' बना। जिससे भाग्य की हानि होती है पर यह हानि मात्र 20% है। 80% शनि अष्टमेश का फल करेगा। जिससे जातक के शत्रुओं का दमन होगा।

दृष्टि–पष्ठमस्थ शनि की दृष्टि अष्टमभाव अपने स्वयं के घर (मकरराशि) पर होगी। व्ययभाव (वृषराशि) एवं पराक्रमभाव (सिंहराशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक के पीठ पीछे उसकी निंदा होती रहेगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में विपरीत राजयोग (विमलयोग) के कारण जातक उन्नति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, अष्टमभाव (मकरराशि) व्ययभाव (वृषराशि) एवं पराक्रमभाव (सिंहराशि) को देखेंगे फलत: ऐसा जातक दीर्घआयु वाला, खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। परंतु भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–'**धनहीन योग**' के कारण जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शनि+बुध**–लग्नभंगयोग के कारण परिश्रम व्यर्थ जाएगा।
5. **शनि+गुरु**–विवाह संबंधी विवाद संभव। जातक का समय पर विवाह नहीं होगा।
6. **शनि+शुक्र**–संतति बाधा, गृहस्थ सुख में कमी।
7. **शनि+राहु**–विपरीत राजयोग के काण जातक धनी होगा।
8. **शनि+केतु**–गुप्त शत्रु या रोग जातक को परेशान करेंगे।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

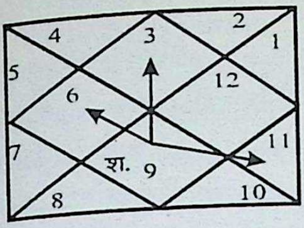

दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां सप्तम भावगत शनि धनु (सम) राशि में होगा। जातक को दाम्पत्य-सुख, गृहस्थ सुख, व्यापार-वाणिज्य का सुख, अध्यात्म व भाग्य का सुख पूर्ण होगा। पर सभी सुखों में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी। लाल किताब वालों ने इस शनि को **'विधाता की कलम'** कहा है। ऐसे जातक को अपने कर्मों का फल इसी जन्म में भोगना पड़ता है। ऐसा जातक ऊपर से कुछ और अंदर से कुछ ओर ही प्रकार का होता है। फलतः ऐसा जातक रहस्यमय होता है जो कहता है वो करता नहीं, जो करता है वह कहता नहीं।

दृष्टि–सप्तमस्थ शनि की दृष्टि अपने घर भाग्यस्थान (कुंभराशि), लग्नस्थान (मिथुनराशि) एवं चतुर्थभाव (कन्याराशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा पर कोई भी कार्य प्रथम प्रयास (First attempt) में सिद्ध नहीं होगा।

निशानी–जातक का विवाह यदि विलम्ब से हो तो यह उन्नति का संकेत है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, भाग्यस्थान (कुंभराशि) लग्नभाव (मिथुनराशि) एवं सुखस्थान (कन्याराशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। पर जातक को सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होता है।
2. **शनि+चंद्र**–जातक का विवाह के बाद धनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक का व्यापार विवाह के बाद चमकेगा।
4. **शनि+बुध**–जातक को परिश्रम का सुंदर फल मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–**'हंसयोग'** के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक की पत्नी सुंदर व भाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–विवाह सुख में कमी। द्विभार्यायोग बनता है।
8. **शनि+केतु**–जीवनसाथी से बिछोह संभव।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

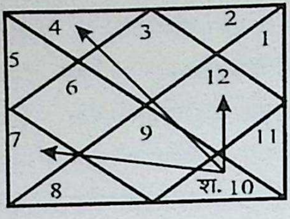

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। अष्टम स्थान में शनि मकरराशि का स्वगृही होता है। यद्यपि शनि की यह स्थिति '**भाग्यभंगयोग**' की सृष्टि करती है तथापि अष्टम स्थानगत शनि दीर्घायु देता है। अष्टमेश का अष्टम में स्वगही होना '**विमलनामक**' विपरीत राजयोग की सृष्टि करता है। जातक भाग्यशाली होता है। रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन प्राप्ति में व्यवधान, संतान सुख में व्यवधान होते हुए भी अंतिम रूप से सफलता निश्चित रूप से मिलती है। लाल किताब वालो ने इस राशि को '**मनमर्जी का मालिक**' कहा है। ऐसा व्यक्ति स्वेच्छाचारी एवं अभिमानी होता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्यभवन (मीनराशि), धनभाव (कर्कराशि) एवं संतान भवन (तुलाराशि) पर होगी। फलतः धनप्राप्ति, रोजगार प्राप्ति, संतान प्राप्ति में विलम्ब होता है।

निशानी—कोई भी कार्य मे प्रथम प्रयास (First attempt) में सफलता न मिलकर प्रगति धीमे-धीमे होती है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में शत्रुओं का नाश होकर, रोग पर विजय प्राप्त होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मकरराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह राज्यभाव (मीनराशि), धनुभाव (कर्कराशि) एवं पंचमभाव (तुलाराशि) को देखेंगे। शनि यहां स्वगृही होकर सरल नामक, '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। फलतः जातक धनी होगा राजनीति में ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला यशस्वी होगा। परंतु पिता की मृत्यु के बाद ही राजनीति में सही विकास होगा।
2. **शनि+चंद्र**—धनहीन योग बनेगा। आर्थिक संघर्ष रहेगा फिर भी विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **शनि+मंगल**–यहां शनि मंगल से युक्त होकर आयु की हानि करता है। यहां पर शनि स्वगृही, मंगल उच्च का 'किम्बहुनायोग' एवं विपरीत राजयोग बनाता है। फलतः जातक महाधनी होगा। गाड़ी बंगला मोटर का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक धनी, मानी व अभिमानी पुरुष होगा।
6. **शनि+शुक्र**–संततिहीन योग, विद्या में बाधा संभव।
7. **शनि+राहु**–आयु में रुकावट, दुर्घटना संभव।
8. **शनि+केतु**–शरीर कष्ट एवं शल्य चिकित्सा संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में

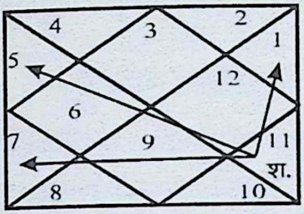

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। नवम स्थान में शनि कुम्भराशि का होकर स्वगृही होगा। यह शनि की **मूलत्रिकोण** राशि है। यह शनि पितृ सौख्य का प्रतीक है। ऐसा जातक अति धनवान एवं वैभवशाली होता है। लालकिताब वाले ने इस शनि को '**आक के दरख्त**' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति एक से अधिक मकान बनाता है। उसका परिवार सुखी व संपन्न होता है। यदि सही पुरुषार्थ करे तो भाग्य कदम-कदम पर सहायता करता है।

दृष्टि–नवमस्थ शनि की दृष्टि एकादश स्थान (मेषराशि), पराक्रम स्थान (सिंहराशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु परेशान करेगा, परंतु सभी शत्रु अपने-अपने कर्मों से नष्ट होंगे।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा। जातक गंगा स्नान को जायेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभस्थान (मेषराशि), पराक्रम स्थान (सिंहराशि) एवं छठेभाव (वृश्चिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि) पर होगी। शनि यहां अपनी मूलत्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। व्यापार में लाभ कमाएगा। जातक महान् पराक्रमी होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा, परंतु सही भाग्योदय पिता को मृत्यु के बाद होगा।

2. **शनि+चंद्र**–जातक महाधनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा पर एक बार उद्योग बंद जरूर होगा।
4. **शनि+बुध**–जातक भाग्य शूर होगा।
5. **शनि+गुरु**–विवाह के उपरांत ही जातक का भाग्य खुलेगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक को श्रेष्ठ पत्नी एवं उत्तम संतति का सुख मिलेगा।
7. **शनि+राहु**–भाग्य में बिगाड़। किस्मत बनती-बनती बिगड़ जाएगी।
8. **शनि+केतु**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

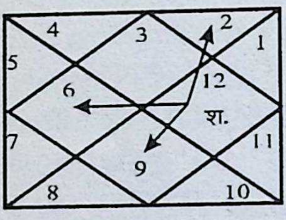

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां दशम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में है। नवमेश दसम भाव में स्थित होने से जातक को धन, विद्या, यश, वाहन, भवन, व्यापार-वाणिज्य का सुख प्राप्त होगा। लाल किताब वालों ने इस शनि को '**किस्मत जगाने**' वाले की संज्ञा दी है। ऐसा जातक प्रतिभावान होता है। अपने विशिष्ट प्रयत्न से अपनी किस्मत खुद बनाता है। जातक ऐश्वर्यशाली एवं तेजस्वी जीवन जीता है। जातक धर्म, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) पर होगी, फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्रा, धार्मिक कार्य में धन खर्च होता रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक माता-पिता का भक्त होता है। जातक का स्वभाव सौम्य व शीतल होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दसवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा। विवाह के बाद किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परंतु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक का राजनीति में प्रभाव रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा।
4. **शनि+बुध**–**'कुलदीपकयोग'** के कारण जातक परिवार का नाम रोशन करेगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **शनि+गुरु**–**'हंसयोग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक महाधनी होगा। उनके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **शनि+शुक्र**–**'मालव्ययोग'** के कारण जातक के पास अनेक वाहन होंगे। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **शनि+राहु**–राजनीति में धोखा मिलेगा।
8. **शनि+केतु**–राजनीति यंत्र में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेगे।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में

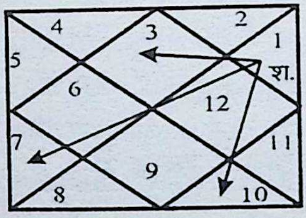

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। एकादश स्थान में यहां शनि मेष (शत्रु) राशि का होगा। मेष में शनि नीच का होता है तथा 20 अंशों में परमनीच का होता है। ऐसा जातक धनी व उद्योगपति होता है। लालकिताब वालों ने इस शनि को **'खुद का विधाता'** कहा है। ऐसा व्यक्ति अपने हुनुर एवं चतुराई से, बिना किसी बाहरी मदद के उन्नतिपथ की ओर आगे बढ़ता है। जातक को लघु उद्योग, व्यवसाय से लाभ होता है। जातक दीर्घजीवी होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित शनि की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि), पंचम भाव (तुलाराशि) एवं अपने स्वयं के घर मकरराशि (अष्टमभाव) पर होगी। फलतः ऐसे जातक को परिश्रम अनुरूप फल नहीं मिलता। संतति के भाग्योदय में बाधा, जीवन में उन्नति आसानी से नहीं होगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां सूर्य के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के तुल्य। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्नभाव (मिथुनराशि) पंचमभाव (तुला राशि) एवं अष्टमभाव (मकरराशि) को देखेंगे। सूर्य यहां उच्च का होगा शनि नीच का 'नीचभंगराजयोग' बनाएगा। फलतः ऐसा जातक विद्यावान होगा। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफल होगा। परंतु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद ही होगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक धनी होगा। व्यापार से लाभ रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–यहां मंगल के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक बड़ी भूमि, फैक्ट्री, कारखाने का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**–परिश्रम का लाभ बराबर मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक को दो प्रकार के धंधों से लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक विद्यावान् होगा।
7. **शनि+राहु**–व्यापार में नुकसान होगा।
8. **शनि+केतु**–व्यापार के लाभांश में रुकावट महसूस होगी।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

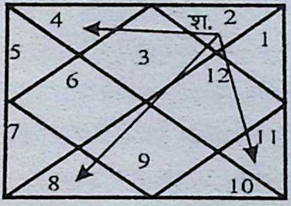

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां शनि वृष (मित्र) राशि में है। शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की इस स्थिति में '**भाग्यभंग योग**' बनता है परंतु अष्टमेश का व्ययस्थान में जाने से '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' भी बनता है। फलस्वरूप जातक भाग्यवान, धनी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है, पर जीवन में इन सब वस्तुओं की प्राप्ति हेतु संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। लाल किताब के अनुसार ऐसा व्यक्ति रुपयों का गुलाम नहीं होता। जमा पूंजी को एक मिनट में खर्च करते हुए विचार नहीं करता।

दृष्टि–द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि), छठे भाव (वृश्चिक राशि) एवं अपने ही घर कुंभ राशि (भाग्यस्थान) पर होगी।

निशानी–जातक को नींद कम आएगी एवं अंतिम अवस्था (मृत्यु) दुःखदाई होती है। इसके लिए शुक्र की स्थित को देखना भी जरूरी है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में खर्च बढ़ेगा। भाग्योदय भी होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव (कर्कराशि), छठे स्थान (तुलाराशि) एवं भाग्यस्थान (कुंभराशि) को देखेंगे। फलतः जातक भाग्यशाली तो होगा पर पराक्रमभंग होगा। धन एवं इच्छित सफलता को प्राप्त करने हेतु संघर्ष बना रहेगा। जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–बढ़े-चढ़े खर्चे से कर्ज की स्थिति बन सकती है।
3. **शनि+मंगल**–जातक गुप्त शत्रुओं के कारण परेशान रहेगा।
4. **शनि+बुध**–परिश्रम-पुरुषार्थ का यथेष्ट लाल नहीं मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। ससुराल में धोखा संभव।
6. **शनि+शुक्र**–जातक नित नई स्पसी का सेवन (संभोग) करेगा।
7. **शनि+राहु**–यात्रा में कष्ट, गुप्त बीमारी संभव जातक दार्शनिक होगा।
8. **शनि+केतु**–मानसिक चिंता व तनाव रहेगा।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में

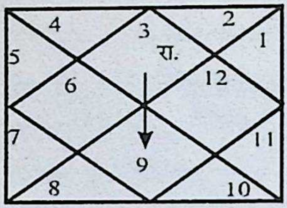

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। प्रथम भावगत राहु मिथुन राशि में है जो कि राहु की स्वराशि है। कुछ विद्वान इसे राहु की उच्च राशि भी कहते हैं। ऐसा जातक तीव्र बुद्धि वाला, कोई भी निर्णय सोच-समझकर करने वाला, स्वतंत्र विचारों वाला, धैर्यवान्, स्नेहशील एवं समझौतावादी दृष्टिकोण वाला होता है। ऐसा जातक वैभवशाली जीवन जीता है तथा व्यापार व नौकरी में बराबर उन्नति प्राप्त करता रहता है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होने से गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता महसूस होगी।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'पीढ़ी संदी'** कहा है। ऐस व्यक्ति धनवान होता है तथा खर्चा भी खूब करता है।

दशा–राहु का दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। दशा अच्छा फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के संग सूर्य होने से व्यक्ति उदण्ड होता है।
2 **राहु+चंद्र**–जातक हठी व अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के संग मंगल होने से व्यक्ति अभद्र व्यवहार करने वाला उदण्ड होता है।
4. **राहु+बुध**–जातक हठी, जिद्दी किंतु बुद्धिमान होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. **राहु+गुरु**–यहां दोंनो ग्रह प्रथम स्थान में मिथुन राशि में है। यहां बृहस्पति की अपनी मित्रराशि एवं अपनी उच्चराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण जातक हठी होगा तथा परिवार-कुटुम्ब वालों के प्रति लगाव नहीं रखेगा।
6. **राहु+शुक्र**–जातक के कार्य में अस्थिरता रहेगी।
7. **राहु+शनि**–जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

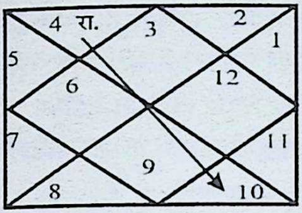

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां द्वितीय स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक धन कमाता है। पर धन की बरकत नहीं होती। पैसे की तंगी बराबर बनी रहती है। ऐसा जातक की वाणी अनियंत्रित होती है। कुटुम्ब में भी प्रेम-स्नेह-संबल की कमी रहती है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि आठवें स्थान (मकर राशि) पर होगी। यह राहु दीर्घायु में कमी कराता है।

निशानी–लाल किताब वालो ने राहु को '**राजगुरु के मातहत**' की संज्ञा दी है। जातक प्रभावशाली होता है पर अमीरी-गरीबी की छाया में पलकर बढ़ा होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में धन हानि की संभावना, परिवार में विवाद एवं गलत निर्णय के दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–की युति में जातक अहंकारी होता है। वाणी में घमण्ड ज्यादा होता है तथा मित्रो के प्रति उपेक्षा भाव बना रहता है।
2. **राहु+चंद्र**–जातक द्वारा उपार्जित धन खर्च होता चला जाएगा।
3. **राहु+मंगल**–की युति से जातक कलहकारी होगा, वाणी लड़ाकू होगी।
4. **राहु+बुध**–धन के घड़े में छेद के कारण आर्थिक संघर्ष रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में है। यहां बृहस्पति अपनी उच्चराशि एवं अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण धन के प्रति लापरवाह होगा। जहां जरूरत नहीं होगी वहां रुपया खर्च कर देगा।
6. **राहु+शुक्र**–धन की अपव्यय अधिक होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. **राहु+शनि**–धन संग्रह में बाधा रहेगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में

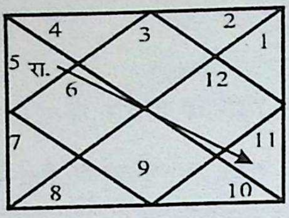

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां तीसरे स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। तीसरे भाव में राहु की स्थिति को शास्त्रकारों ने राजयोग कारक माना है। ऐसा जातक महान्, पराक्रमी, धार्मिक, हठी एवं महत्वकांक्षी होता है। ऐसे व्यक्ति के पास जायदाद अवश्य होती है। जातक शरण में आउ व्यक्ति की भरपूर मदद करता है। उसके हौसले बुलंद होते हैं पर भाईयों-कुटम्बीजनों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता। भाईयों से मनमुटाव की स्थिति रहती है, पर जातक की व्यक्तिगत उन्नति शानदान होती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। फलत: भाग्य में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**अंगरक्षक**' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति दिलेर होता है तथा मुसीबत में घिरे व्यक्तियों की मदद करता है। जातक के सपने कई बार सच होते हैं।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा पर विरोधियों का भी सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–कुटुम्ब सुख में हानि, कलह, विवाद रहेगा।
2. **राहु+चंद्र**–यहां राहु संग चंद्रमा होने से जातक का मन-मस्तिष्क अशांत रहेगा। जातक एकांत प्रिय होगा। भाईयों से अनबन रहेगी।
3. **राहु+मंगल**–परिवार में विग्रह होगा।
4. **राहु+बुध**–मित्रों में विवाद, भाईयों में विग्रह रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां तृतीयस्थ दोनों ग्रह सिंहराशि में है। राहु अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण भाईयों से अनबन एवं भागीदारों में मनमुटाव रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–परिवार में मनमुटाव रहेगा।
7. **राहु+शनि**–भाईयों से अनबन रहेगी। कोई में विवाद संभव है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

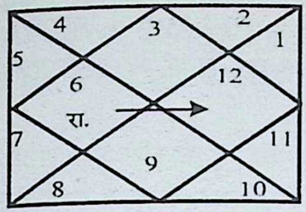

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु कन्या (स्व) राशि में है। ऐसे व्यक्ति को मातृसुख में न्यूनता रहती है। भौतिक ऐश्वर्य, सुख-संसाधनों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। मानसिक अशान्ति, अस्थिरता एवं अज्ञात भय, अशुभ की आशंक बनी रहेगी। ऐसे व्यक्ति को पुराने मकान में रहना पड़ता है तथा प्रायः मकान में वास्तुदोष होता है। जातक को समाज में अपयश भी मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि दशमभाव (मीनराशि) पर होगी। फलतः जातक का राजा (सरकार) से सम्मान होगा।

निशानी–लालकिताब वालों इस राहु को '**धर्मी**' कहा है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक व परोपकारी होता है। भाग्यपथ से दौलत अर्जित करता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में आर्थिक, सामाजिक एवं व्यवसायिक उन्नति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–माता की मृत्यु अल्प आयु में संभव।
2. **राहु+चंद्र**–माता को कष्ट अथवा छोटी उम्र में माता की मृत्यु संभव है।
3. **राहु+मंगल**–मंगल की युति से शिक्षा अधूरी रहेगी।
4. **राहु+बुध**–माता एवं बहन का सुख कमजोर रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण माता के सुख में कमी रहेगी। सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–यहां राहु की युति से शुक्र चतुर्थ व पंचम दोनों भाव के शुभ फल नष्ट करेगा।
7. **राहु+शनि**–वाहन दुर्घटना का योग बनता है।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां पंचम स्थान में राहु, तुला (मित्र) राशि में है। यह इतना बुरा नहीं होता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

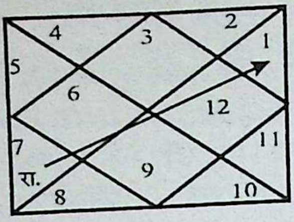

यह पंचम भाव के फलों में वृद्धि करता है। परंतु शुक्र की बलवत्ता (स्थिति) पर ध्यान देना जरूरी है। जातक को पुत्र सुख विलम्ब से मिलता है। जातक को व्यर्थ के वाद-विवाद का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि–पचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश भाव (मेषराशि) पर होगी। फलतः व्यापार-व्यवसाय में प्रारंभिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**शरारती**' कहा है। यह विद्या में बाधा डालता है। गर्भ में संतान को नष्ट करता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगे। मनोवांछित कार्य में रुकावट महसूस होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य निराशा उत्पन्न करता है। शिक्षा का अभाव संभव है। अथवा शिक्षा का यथेष्ट लाभ जीवन में नहीं मिलेगा। संतान व कुटुम्ब सुख में बाधा
2. **राहु+चंद्र**–पुत्र संतान प्राप्ति में बाधा संभव।
3. **राहु+मंगल**–यहां मंगल की युति से शिक्षा अधूरी रहेगी।
4. **राहु+बुध**–एक दो संतति की अकाल मृत्यु संभव है। विद्या में बाधा।
5. **राहु+गुरु**–यहां पंचमभाव में दोनों ग्रह तुलाराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण पुत्र संतति विलम्ब में होगी विद्यायोग में अनपेक्षित बाधा संभव।
6. **राहु+शुक्र**–विद्या एवं पुत्र संतति में बाधा।
7. **राहु+शनि**–विद्या में रुकावट, कन्या संतति ज्यादा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति षष्ट्म स्थान में

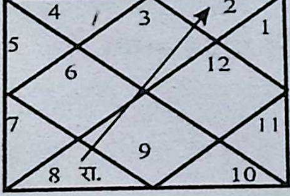

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां छठे स्थान में राहु वृश्चिक राशि मे नीच का होगा। शास्त्रकारों ने छठे राहु को राजयोगकारक माना है, क्योंकि दुष्टग्रह उपचय स्थान में शुभफल देते हैं। फलतः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहां जातक की व्यक्तिगत उन्नति में सहायक है। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होता है। ऐसे व्यक्ति को सुख-ऐश्वर्य के सभी साधन सहज में उपलब्ध होते हैं। व्यक्ति हमेशा उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता रहेगा।

दृष्टि–षष्ट भावगत राहु की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**फांसी काटने वाला मददगार हाथी**' कहा है। ऐसे व्यक्ति को कोई भी बाधा अधिक समय तक पीड़ित नहीं कर सकती।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जहां देह कष्ट, मानसिक संताप या रोगोनृपत्ति का संभावना बनी रहेगी। वही जातक की उन्नति भी होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–निडर किंतु रूखे स्वभाव का व्यक्ति होगा।
2 **राहु+चंद्र**–यहां राहु मृत्यु तुल्य कष्ट देगा।
3. **राहु+मंगल**–यहां राहु+मंगल की युति जातक को अतिपराक्रमी बनाएगी। जातक पुलिस, फौज, प्रशासन के कार्यों में विशेष रुप से सफल होगा।
4. **राहु+बुध**–शत्रु परास्त होने से बाधा पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।
5. **राहु+गुरु**–यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। चाण्डालयोग के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित रूप से बाधा पहुंचेगी।
6. **राहु+शुक्र**–विद्या, पुत्र संतति सुख में बाधा।
7. **राहु+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

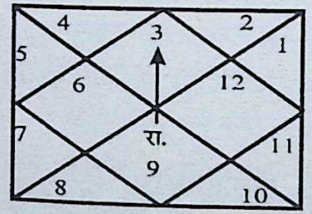

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। सप्तम स्थान में राहु धनु (शत्रु) राशि में है। राहु की यह अवस्था सप्तम भाव के लिए शुभ नहीं कही गई। जातक के गृहस्थ सुख में कमी रहेगी। संभवत: प्रथम विवाह का सुख नहीं। सम्भवत: दूसरे विवाह से सुख मिलता है अथवा 42 वर्ष की आयु के बाद गृहस्थ सुख जमता है। यहां सप्तमेश बृहस्पति की स्थित का अवलोकन करके निर्णय लेना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि—राहु की दृष्टि लग्न स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को 'दौलत का धुआं निकालने वाला चाण्डाल' कहा है। शीघ्र विवाह होना, जीवन साथी के लिए हानिप्रद रहता है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में गृहस्थ सुख में बाधक है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—वैवाहिक सुख में बाधा, विवाद, बिछोद की संभावना।
2. **राहु+चंद्र**—गृहस्थ सुख में व्यवधान, द्विभार्यायोग बनता है।
3. **राहु+मंगल**—पत्नी से विवाद, कलह, बिछोह संभव।
4. **राहु+बुध**—गृहस्थ सुख में बाधा द्विभार्या योग संभव।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह धनुराशि में है। जातक का ससुराल प्रभावशाली व संपन्न होगा। यहां 'चाण्डालयोग' के कारण पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
7. **राहु+शनि**—विवाद सुख में कमी, द्विभार्यायोग बनता है।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में -

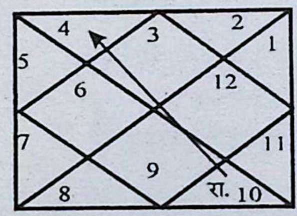

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां अष्टम स्थान में राहु मकर (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक में चिंतन की शक्ति गजब की होती है। इनका दैहिक कष्ट व दुर्घटना का भय रहेगा। गुप्त शत्रु भी परेशान करेंगे। लोगों की भलाई में बुराई का फल मिलेगा।

दृष्टि—अष्टम भावगत राहु की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलतः धन की हानि एवं परिवारिक कष्ट होंगे।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को **'कड़वा धुआं'** कहा है। ऐसा व्यक्ति अच्छे परिवार में जन्म लेकर भी अपनी करतूतों के कारण बदनाम होता है।

उपाय—इस राहु को नेक करने के लिए व्यक्ति को खोटा सिक्का। 43 शनिवार तक दरियां में बहाना चाहिए। या राहु के जाप कराने चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में मानसिक, दैहिक व आर्थिक कष्ट अनुभूति होती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–जातक को लम्बी बीमारी दुर्घटना संभव है।
2. **राहु+चंद्र**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा, मृत्युभय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु मंगल की युति में जनेन्द्रिय में रोग होते हैं।
4. **राहु+बुध**–अचानक दुर्घटना संभव, आयु में बाधा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण विलम्ब विवाह योग अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित बाधा के योग बनते हैं। यहां द्विमार्गयोग भी संभव है।
6. **राहु+शुक्र**–गुप्त बीमारी एवं अचानक दुर्घटना संभव।
7. **राहु+शनि**–आयु में रुकावट, दुर्घटना संभव।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में

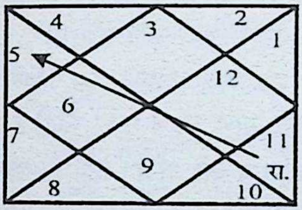

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां नवम स्थान में राहु कुंभ (मित्र) राशि में है। यह राहु व्यक्ति को राजातुल्य वैभव देता है। व्यक्ति शौर्य, पराक्रम, बल, बुद्धि, प्रतिष्ठा में किसी से कम नहीं होता। यद्यपि जातक के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते है तथापि अक्कड़ किसी रहीस से कम नहीं होती।

दृष्टि–नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को कुटुम्ब व भाईयों का सुख-सहयोग मिलेगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'पागलों का सरताज हकीम'** कहा है। ऐसा व्यक्ति स्वप्रयासों से बिगड़े एवं उलझे हुए जटिल कार्यों से सुलझा देते है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–भाग्य में बाधा, भौतिक सुखों की हानि।
2. **राहु+चंद्र**–भाग्य में रुकावट पिता का सुख कमजोर रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. **राहु+मंगल**–जातक धनवान होगा पर भाग्योदय में रुकावटे बहुत आएगी।
4. **राहु+बुध**–राज्य सरकार एवं राजनीति में अप्रिय घटना हो सकती है।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। जातक का राजनैतिक वर्चस्व तो रहेगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण पिता से अनबन रहेगी अथवा राजनीति में पद प्राप्ति के अवसर पर धोखा मिलेगा।
6. **राहु+शुक्र**–भाग्य में लगातार बाधा से जातक परेशान हो जाएगा।
7. **राहु+शनि**–भाग्य में बिगाड़, किस्मत बनती-बनती बिगड़ जाएगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

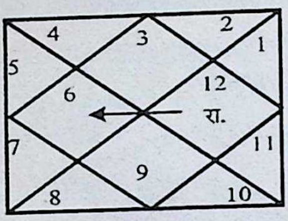

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां दशम स्थान में राहु मीन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा व्यक्ति सामाजिक प्राणी होता है। आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों को लेकर विभिन्न संगठनों से जुड़ा रहता है। व्यक्ति समाज के पुनर्निर्माण में कुरीतियों को दूर करने में रुचि रखते हैं। विरोधियों द्वारा उत्पन्न बाधाओं को दूर करने में सक्षम होते हैं। ऐसे जातक कूट राजनीतिज्ञ होते हैं तथा हठी व स्वाभिमानी होते हैं।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थभाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक के पास अनेक वाहन होते हैं। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति सहज में हो जाती है।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'सांप की मणि'** कहा है। यह जातक को दौलतमंद बनाता है। व्यक्ति खतरों से खेलता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक वैभव, उन्नति को प्राप्त करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–संघर्ष के उपरान्त सफलता निश्चित हैं
2. **राहु+चंद्र**–सरकारी क्षेत्र में धोखा होगा।
3. **राहु+मंगल**–जातक को राज्यपक्ष से हानि होगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में, शुद्ध मुनाफे में घाटा होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। परंतु 'चांडालयोग' के कारण राजा (सरकार) में दण्ड प्राप्ति संभव है। पिता की सम्पत्ति में विवाद रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **राहु+शुक्र**–राज्यपक्ष में बाधा, सरकारी परेशानी रहेगी।
7. **राहु+शनि**–राजनीति में धोखा मिलेगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

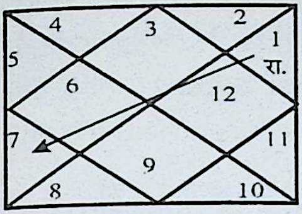

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां एकादश स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। शास्त्रकारों ने एकादश स्थान में राहु को राजयोगकारक माना है। ऐसे व्यक्ति अपने साहस, पराक्रम एवं संघर्ष करने की लगातार शक्ति के कारण उन्नति के शिखर को स्पर्श कर लेते हैं ऐसे जातक प्रायः लडाकू प्रवृत्ति के होते हैं।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित राहु की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) पर होने से यह गर्भपात कराता है। तथा विद्या प्राप्ति के एकाध बार रुकावट का संकेत देता है।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को कष्टकारक माना है जिसके फलस्वरूप आयु में बड़े भाई-बहनों को कष्ट होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में संघर्षकारी स्थितियों को उत्पन्न करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–बड़े भाई एवं पिता को सुख में हानि। संतति सुख में हानि संभव।
2. **राहु+चंद्र**–जातक हिसंक स्वभाव का होगा। पागलपन के दौरे भी आ सकते हैं।
3. **राहु+मंगल**–यदि मंगल साथ है तो उद्योग या फैक्ट्री में एक बार रुकावट जरूर आएगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में है। जातक पत्नी एवं पिता पक्ष में सुखी होगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण व्यापार-व्यवसाय में अपेक्षित लाभ नहीं होगा।
6. **राहु+शुक्र**–व्यापार मे गुप्त नुकसान होगा।
7. **राहु+शनि**–व्यापार में नुकसान होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

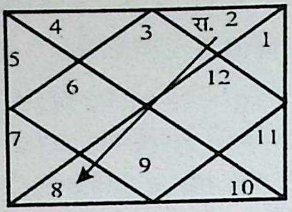

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां द्वादश स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी, साहसी व कर्मठ होता है। ऐसे जातक धुमक्कड, रसिक एवं विलासी प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति कार्य कुछ करते हैं तथा परिणाम कुछ (भिन्न) पाता है। बिना सोच समझ कर (Unplanned) कार्य करने से ये स्वयं कई बार मुसीबत में उलझ जाते हैं।

दृष्टि–द्वादश भाव गत उच्च के राहु की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक अपने रोग-ऋण व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम समर्थ होता है।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**शेख चिल्ली**' की संज्ञा दी है। ऐसे जातक को दौलत ज्यादा समय तक साथ नहीं देती।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में यात्राएं होगी तथा फालतू के खर्चे बढ़ जाएगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–ऐसा व्यक्ति जेल जाएगा या राजा से दंडित होगा। शैया सुख की हानि।
2. **राहु+चंद्र**–ऐसा व्यक्ति कर्जदार (ऋणी) होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से काम-वासना अधिक होगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृषराशि में है। यहां 'चांडालयोग' के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृह सुख में बाधा होने के निश्चित योग बनते हैं। जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेश बस जाएगा। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक व दार्शनिक होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र होने से व्यक्ति कामी हो जाता तथा नैतिक-अनैतिक तरीके से अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है। यात्रा में धन का अपव्यय होगा।
7. **राहु+शनि**–व्यक्ति दार्शनिक होगा। यात्रा में कष्ट गुप्त बीमारी संभव।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति प्रथम भाव में

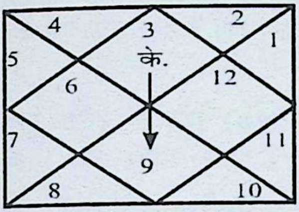

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। केतु प्रथम स्थान में मिथुन (नीच) राशि में है। केतु के यहां बैठने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शक्तिशाली होता है। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा परंतु यदि सप्तमेश बृहस्पति की स्थिति अनुकूल न हो तो **'द्विभार्यायोग'** बनता है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः गृहस्थ सुख में बाधा, थोड़ी कमी रहेगी।

निशानी–जातक को उच्च स्थान से गिरने का भय रहता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा, पर थोड़ा संघर्ष भी रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–जातक क्रोधी होगी
2 **केतु+सूर्य**–जातक की पत्नी सुंदर होगी।
3. **केतु+मंगल**–जातक का व्यक्तित्व संघर्षशील होगा।
4. **केतु+बुध**–ऐसा जातक कुतर्की होगा।
5. **केतु+गुरु**–ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **केतु+शुक्र**–जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।
7. **केतु+शनि**–जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय भाव में

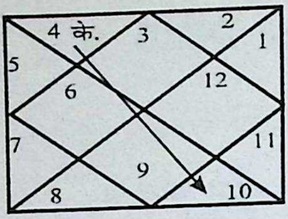

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वितीय स्थान में केतु कर्क (शत्रु) राशि में है। दूसरे घर में केतु को लालकिताब वालों ने 'अच्छा हुक्मराज' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति की किस्मत में उतार-चढ़ाव तो आता है पर अंततः शुभ फल मिलता है। ऐसे व्यक्ति वाचाल होते है तथा उच्च पद की प्राप्ति इन्हें सरलता से हो जाती है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि यहां अष्टम भाव (मकरराशि) पर होगी, फलतः गुप्त रोग या बीमारी का भय रहेगा।

निशानी–धन एकत्रित करने के मामले में बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा धनसंग्रह हेतु संघर्ष की द्योतक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–कुटुम्ब एवं धन संबंध में हानि।
2. **केतु+सूर्य**–जातक के पास धनसंग्रह कठिनता से होगी।
3. **केतु+मंगल**–कुटुम्ब में विवाद, धनसंग्रह में तकलीफ होगी।
4. **केतु+बुध**–धन के अधिक खर्च से मानसिक चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–जातक धर्मगुरु का धार्मिक वक्ता होगा।
6. **केतु+शुक्र**–धन खर्च के प्रति चिंता रहेगी।
7. **केतु+शनि**–धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति तृतीय भाव में

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां तृतीय स्थान में केतु सिंह (शत्रु)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

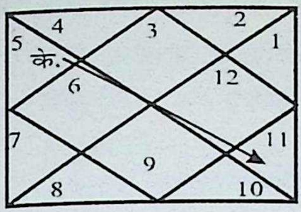

राशि में है। तीसरे घर में केतु व्यक्ति के यश की कीर्ति पताका का द्योतक है। ऐसे व्यक्ति को दैविक सहायता तो मिलती रहती है पर जीवन में व्यर्थ की उलझने बहुत आएगी। जातक पराक्रमी होगा एवं राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि सातवें स्थान (कुंभ राशि) पर होगी।

निशानी–जातक के जीवन में निरंतर यात्रा की स्थिति बनी रहती है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–पराक्रम में कमी मित्र पीठ पीछे निंदा करेंगे।
2 **केतु+सूर्य**–मित्र पीठ पीछे निंदा करेंगे।
3. **केतु+मंगल**–कीर्ति उत्तम पर मित्रों से मनमुटाव रहेगा।
4. **केतु+बुध**–ऐसे जातक को मित्र ऐनवक्त पर धोखा देंगे।
5. **केतु+गुरु**–जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, प्रकाशक या सम्पादक होगा।
6. **केतु+शुक्र**–मित्रों में असंतोष रहेगा।
7. **केतु+शनि**–मित्रों में मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ भाव में

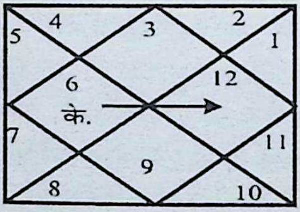

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां चतुर्थभाव गत केतु कन्या (मूल त्रिकोण) राशि में है। यहां केतु शुभफल देगा। लाल किताब वालों ने चौथे घर में केतु को **'डराने वाला कुत्ता'** जो काटता नहीं। अशुभ की आशंका बनी रहेगी। पर जीवन में अशुभफल मिलेगे नहीं। दौलत व आयु के लिए केतु की यह स्थिति ठीक है।

दृष्टि–चतुर्थ भाव गत केन्द्र की दृष्टि दशमभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुख, राजनैतिक पद की प्राप्ति होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निशानी–जातक की आयु के 36 वर्ष बाद पुत्र सुख की प्राप्ति होगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–भौतिक सुखों की प्राप्ति में संघर्ष बना रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। माता की सम्पत्ति में विवाद संभव है।
3. **केतु+मंगल**–माता बीमार रहेगी।
4. **केतु+बुध**–माता की सम्पत्ति हाथ नहीं लगेगी। भौतिक सुखों में बाधा महसूस होगी।
5. **केतु+गुरु**–जातक किसी धार्मिक ट्रस्ट या धर्मस्थान का प्रधान होगा।
6. **केतु+शुक्र**–माता बीमार रहेगी।
7. **केतु+शनि**–मातृ सुख कमजोर रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति पंचम भाव में

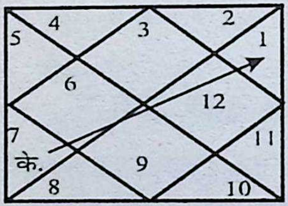

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां पंचम स्थान में केतु तुला (सम) राशि में है। लालकिताब वालों ने पांचे घर में केतु को **'रक्षक'** कहा है। यह संतति और विद्या दोनों के तेजस्विता की रक्षा करता है। प्रारम्भिक अवरोधों के बाद संतान और विद्या दोनों की प्राप्ति होती है। जातक को अपने जीवन मे बहुत से उतार-चढ़ाव देखने पड़ते है। कोई भी वस्तु आसानी में नहीं मिलती।

दृष्टि–पंचम भाव में स्थिति केतु की दृष्टि लाभ भाव (मेषराशि) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा थोड़े से संघर्ष के बाद पूर्ण सफलता की सूचक है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–गर्भपात का भय विद्या में रुकावट संभव।
2 **केतु+सूर्य**–एकाध गर्भपात संभव।
3. **केतु+मंगल**–गर्भक्षय एवं रुकावट के साथ विद्या का संकेत मिलता है।
4. **केतु+बुध**–विद्या पूरी होगी पर संघर्ष के साथ।
5. **केतु+गुरु**–धार्मिक क्रिया करने पर जातक तेजस्वी संतति का पिता होगा।
6. **केतु+शुक्र**–विलम्ब संतति या संघर्ष के साथ विद्या प्राप्ति।
7. **केतु+शनि**–स्त्री संतति की बाहुल्यता, एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म भाव में

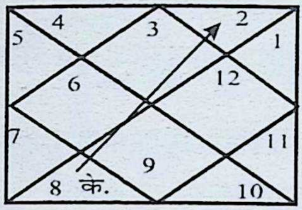

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां छठे स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि में है। लाल किताब वालों ने छठे घर में बैठे केतु को 'शेर के समान खूंखार कुत्ता' कहा है। ऐसे जातक घुमक्कड व रसिक मिजाज के होते हुए भी अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होते है।

दृष्टि–छठे भावगत केतु की दृष्टि व्ययभाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–यदि शुक्र कमजोर हो तो गृहस्थ व संतान सुख में बाधा आएगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मे परेशानी बढ़ेगी पर शत्रु परास्त होंगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–शत्रुओं से भय बना रहेगा।
2 **केतु+सूर्य**–जातक को लम्बी बीमारी होगी।
3. **केतु+मंगल**–शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध शुभ फल देगा। पर गुप्त शत्रुओं से चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–नीति वाक्यों एवं धैर्य के माध्यम से जातक अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. **केतु+शुक्र**–शल्य चिकित्सा योग गुप्त बीमारी रहेगी।
7. **केतु+शनि**–गुप्त शत्रु या रोग जातक को परेशान करेंगे।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में

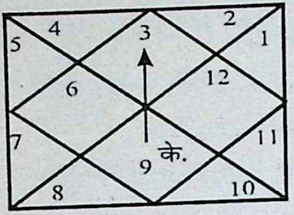

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां सप्तम स्थान में केतु धनु अपनी स्वराशि में होने से स्वगृही है। केतु यहां शुभ फल देगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गढरिए का पालतू कुत्ता' कहा है। ऐसा जातक प्रत्येक व्यक्ति को सही राह दिखाता है। ऐसा जातक यदि भक्ति (साधना) का मार्ग पकड़ ले तो उसके दुश्मन अपने आप तबाह-बरवाद हो जाते हैं।

दृष्टि–सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि) पर होगी। फलत: ऐसे जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।

निशानी–यदि ऐसा व्यक्ति वचन का पक्का हो तो उसे कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–गृहस्थ सुख विवादास्पद रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–जातक की पत्नी सुंदर होगी। पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–गृहस्थ सुख में कोई-न-कोई न्यूनता रहेगी।
4. **केतु+बुध**–वैवाहिक तनाव संभव है।
5. **केतु+गुरु**–समझौते वाली नीति एवं धैर्य के माध्यम से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगी।
6. **केतु+शुक्र**–गृहस्थ सुख में कलह रहेगी।
7. **केतु+शनि**–जीवन साथी में बिछोह संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति अष्टम भाव में

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

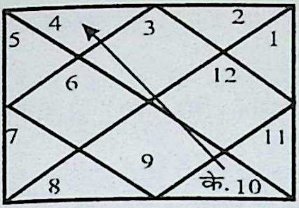

केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां अष्टम स्थान में केतु मकर (मित्र) राशि में है। यह केतु की मूल त्रिकोण राशि भी है, जहां वह शुभफल देने के लिए बाध्य है। आठवें घर में बैठे केतु को बच्चों के गम में 'छत पर रोने वाले कुत्ते' की संज्ञा दी है। प्रथम संतान की उत्पत्ति के बाद ऐसे व्यक्ति की आयु को कोई खतरा नहीं है। जातक वाणी का जरूर कर्कश हो सकता है।

दृष्टि–अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक फिजूलखर्ची होता है।

निशानी–यदि छत पर बैठकर कुत्ता रोए, तो आठवें घर में बैठा केतु अशुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में दुश्मनों से सावधान रहे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–जातक को गुप्त रोग बीमारी संभव है।
2. **केतु+सूर्य**–शल्य चिकित्सा या दुर्घटना योग है।
3. **केतु+मंगल**–शल्य चिकित्सा योग, दीर्घ बीमारी संभव।
4. **केतु+बुध**–शल्य चिकित्सा, पैरों में चोट संभव है।
5. **केतु+गुरु**–यदि धैर्य एवं समझौते वादी नीति से काम न लिया तो गृहस्थ जीवन कष्टमय हो सकता है।
6. **केतु+शुक्र**–शल्य चिकित्सा योग बनता है।
7. **केतु+शनि**–शरीर कष्ट एवं शल्य चिकित्सा संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में

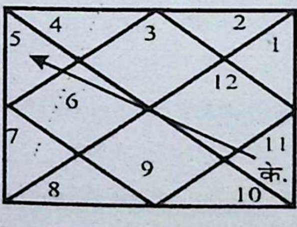

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां नवम स्थान में केतु कुंभ (मित्र) राशि में है। लालकिताब वालों ने इस केतु को 'बाप

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का अज्ञाकारी बेटा' कहा है। ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं पराक्रमी होता है। ऐसे जातक का संतान उन्नतिशील एवं बलवान होगी। संतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

दृष्टि–नवम् भावगत केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः भाईयों व कुटम्बी जनों से कम निभेगी।

निशानी–यदि व्यक्ति दुरगां कुत्ता पाले या 'Tiger-eye' टाईगर आई नामक रत्न पहने तो भाग्योदय शीघ्र होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होगा। पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**– वैराग्य की भावना बनी रहेगी। आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव रहेगा।
2 **केतु+सूर्य**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।
3. **केतु+मंगल**–संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।
4. **केतु+बुध**–संघर्ष परेशानी एवं भाग्योदय संबंधी चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–विवाह के भाग्योदय होगा तथा जातक सिद्धांतवादी व्यक्ति होगा।
6. **केतु+शुक्र**–जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **केतु+शनि**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थित रहेगी।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति दशम भाव में

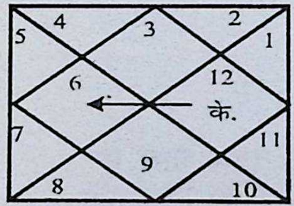

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां दशम स्थान में केतु मीन राशि अपनी स्वराशि में है। जातक को नौकरी-व्यापार में लाभ होगा। जातक अपने रोजी-रोजगार में उन्नति प्राप्त करेगा। जातक के निजी जमीन-जायदाद होगी।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थभाव (कन्याराशि) पर होगी। फलतः जातक को वाहन का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक पराई स्त्री के चक्कर में रहेगा तो तबाह-बरवाद हो जाएगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। रोजी-रोजगार के अवसर प्राप्त होगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।
2. **केतु+सूर्य**–सरकारी कार्य में बाधा आएगी।
3. **केतु+मंगल**–जातक के राज्यपक्ष से भय रहेगा।
4. **केतु+बुध**– राज्य-सरकार या राजनीति में कार्यरत लोगों के माध्यम से चिंताग्रस्त रहेगे।
5. **केतु+गुरु**–जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली, न्यायप्रिय एवं कीर्तिवान् होगा।
6. **केतु+शुक्र**–सरकार पक्ष से गुप्त संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **केतु+शनि**–राजनीति में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेंगे।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति एकादश भाव में

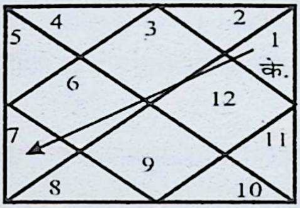

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां एकादश स्थान में केतु मेष (मित्र) राशि में है। यह केतु व्यापार-व्यवसाय में कीर्ति देगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गीदड स्वभाव' का कहा है। जातक लड़ाकू होते हुए भी ड़रपोक होगा। ऐसा जातक राज्य (सरकार) पक्ष के प्रतिष्ठित लोगों के सम्पर्क में रहकर उच्चपद को प्राप्त करता है।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित केतु की दृष्टि पंचम स्थान (तुला राशि) पर होगी। अत: एकाध गर्भपात कराएगा।

निशानी–व्यक्ति स्वयं अपनी जमीन-जायदाद खुद बनाएगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–कुटुम्ब सुख में हानि महसूस करेंगे।
2. **केतु+सूर्य**–जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–परिवार में विग्रह-विवाद, शत्रुओं से सामना करना पड़ेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. **केतु+बुध**–व्यापार-व्यवसाय में तरक्की की चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–ऐसा जातक यशस्वी उद्योगपति होगा।
6. **केतु+शुक्र**–व्यापार-व्यवसाय, लाभ में रुकावट रहेगी।
7. **केतु+शनि**–व्यापार के लाभंश में रुकावट महसूस होगी।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में

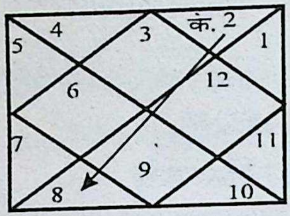

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वादश स्थान में केतु वृष (नीच) राशि का है। लालकिताब वालों ने इस केतु को शुभफल देने वाला कहा है। ऐसे जातक का जीवन ऐशो-आराम से व्यतीत होगा। ऐसा जातक जीवन में निरंतर उन्नति व लाभ को प्राप्त करता रहेगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम (समर्थ) होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक दीर्घ आयु को प्राप्त करेगा।

निशानी–ऐसे व्यक्ति को किसी संतानहीन व्यक्ति से भूमि, जमीन-जायदाद नहीं खरीदनी चाहिए अन्यथा उसके दिन बुरे शुरु हो जाएंगे।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में व्यर्थ की यात्रा एवं खर्च बढ़ जाएगें।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–कोर्ट-कचहरी से कारावास का भय रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–जातक को यात्रा के दौरान संकट का सामना करना पड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–यात्रा में धनहानि, परेशानी संभव है।
4. **केतु+बुध**–कारोबार के प्रति, धन के प्रति चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–जातक धार्मिक कार्य, परोपकार, तीर्थयात्रा में, शुभ कार्य मे रुपया खर्च करेगा।
6. **केतु+शुक्र**–यात्रा में कष्ट नेत्र-पीड़ा संभव। शल्य चिकित्सा होगी।
7. **केतु+शनि**–मानसिक चिंता व तनाव रहेगा।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करे। गम्भीरता पूर्वक करे। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठावें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभुचरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्रवचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर ले और प्रत्युत्तर हमेशा मय हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेगी।
7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर ज्यादा फूले नहीं क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित सत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होता है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हमसे है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।
8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना।।
ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ शुभ-अशुभ फलो की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा?

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः कि करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।
ग्रहों की अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अन्तर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष्ज्ञ फल मिलता है, परन्तु अन्य समय में थोड़ा बहुत फल मिलना ही चाहिए।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते।।
मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभफल जानना चाहिए।

12. मित्रराशिगत वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः।।
मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उसकी दशा में बहुत दुःख होता है।

15. जब ग्रह **'दिग्बल'** से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा में मिलती है, जिसका वह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह की महादशा में, शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरंभ से कष्ट होता है और अंत में भय होता है।

17. जब शुभ ग्रह की महादशा हो, तो पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

18. जब क्रूर ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अन्तर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनके दशांतर में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह क्रूर राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हों तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पापग्रह की अन्तर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब कर्म, लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हों तो उस ग्रह की दशा शुभ होती हैं। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हों पाप ग्रह हों, अथवा नीच का हो अथवा अस्तंगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अन्तर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा हों, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनिष्ट निवारण के विविध उपाय

1. अनिष्ट बुध की शांति की सर्वोत्तम उपाय बुध मंत्र के अनुष्ठान सहित नित्य विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ है।
2. पुरुष सुक्त के द्वारा भगवान विष्णु को षोडशोपचार पूजा भी कर ली जाए, तो बुधकृत समस्त अरिष्ट निश्चित रूप से शांत होते हैं। संतान कष्ट, गर्भदोष, वाणी एवं मानसिक कष्ट दूर हो जाते हैं तथा सुख शांति की वृद्धि होती है।
3. नित्य शालिग्राम पूजन करके तुलसी पत्र का सेवन करें तथा मंत्र जाप कर लें। चमत्कारिक लाभ होगा।
4. व्यापारिक अड़चनों एवं संतान कष्ट मे गोपालसहस्त्रनाम एवं कृष्ण पूजा भी अमोघ है।
5. कलह, शत्रुता, हानि, बाधाओं आदि से त्रस्त, मानसिक रूप से बहुत आकुल व्यक्ति यदि अधिक न कर सकें तो श्रीमद्भागवत गजेन्द्र मोक्ष या रामरक्षा स्त्रोत के पाठ से ही पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं।
6. शत्रु बाधा एवं अभिचार कर्मों के शमन के लिए प्रत्यांगिरा जप तथा हवन अमोघ है।
7. शारीरिक व्याधियों के लिए महाधन्वतरी मंत्र अथवा मृत्युंजय प्रयोग प्रशस्त है।
8. शिक्षा में बाधा एवं वाणी दोष के लिए वैदिक मार्ग प्रेम ऋग्वेदीय सारस्वत मंत्र एवं तंत्र प्रेमी नील सरस्वती मंत्र एवं स्त्रोत का अनुष्ठान करें, कल्याण होगा।
9. बुद्धिस्थान को मजबूत करने हेतु, धन प्राप्तिहेतु पन्नायुक्त **'बुधयंत्र'** धारण करें।
10. बुधवार को इलायची एवं तुलसी पत्र का भक्षण करें तथा एक हरी इलायची जल में प्रवाहित करें।
11. सवा रत्ती स्वर्ण का दान करें (बुधवार के दिन)
12. ग्यारह एकादशी एवं 11 बुधवार को व्रत रखें।
13. ग्यारह बुधवार तक मुट्ठीभर मूंग भिखारियों को दान करें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

14. ब्राह्मणों को प्रति बुधवार दुग्ध का दान करें।
15. बुध अथवा पाण्डुरंग स्त्रोत का पठन करें।
16. निगणपतिजी के दर्शन करें।
17. बुध की होरा में निर्जल रहें।
18. धनु या मीन लग्न में बुध छठे, आठवें या बारहवें हो तो बुध के अशुभ प्रभाव से बचने के लिये, विवाह समय में दो बराबर वजन के पन्ने एवं मूंग के दाने ले। विवाह समय में संकल्पपूर्वक एक हिस्सा बहते पानी में छोड़ दे तथा दूसरा हिस्सा अपने पास रखें। जब तक वह हिस्सा जातक के पास रहेगा। उसका बुध के अशुभ प्रभाव से बचाव होता रहेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगी।
19. बुधवार का व्रत 5 या 11 या 43 बार करना।
20. दुर्गा पाठ करना, कन्याओं का (दान-दक्षिण देकर) आर्शीवाद लेना या दुर्गा तीर्थों की यात्रा करना।
21. मूंग साबूत, हरी चीजें दान देना या जल प्रवाह करना।
22. रेड़ियों, घड़ियां, टेलिविजन, गाने बजाने के यंत्र ठीक रखना।
23. तांबे के पैसे में सुराख करके चलते पानी में बहाना।
24. पन्ना धारण करना, पन्ने के अभाव में कली (धातु) धारण करें।
25. बकरी, तोते की सेवा करना।
26. हरा रंग निषेध (तुलसी, मणी प्लांट) 96 घण्टानाक छेदन।
27. लड़की-बहन-बुआ, साली की सेवा करना और आर्शीवाद लेना।
28. तड़ागी या बेल्ट बांधना।
29. कौड़ियों को जला कर चलते पानी में बहाना।
30. हीजड़ों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि देना।
31. भभूती-ताबीज, साधुओं की तस्वीर, धार्मिक ग्रंथ बंद करके न रखना।
32. बुध उच्च हो तो बुध की चीजों का दान न देना ।
33. बुध नीच हो तो बुध की चीजों का दान न लेना। उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।
34. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु चावल, शहद, सफेद सरसों, गोबर, गोरोचन एवं नेवारी मल्वल मिलाकर 7 बुधवार तक स्नान करें।
35. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु हरड़े, गोमय, अक्षत, गोरोचन, स्वर्ण आंवला और मधु मिलाकर 7 बुधवार तक स्नान करें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

36. यदि संतान अवरोधक ग्रह बुध है तो समझिये कि बिल्ली को मारने के कारण या मछलियों तथा अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने के कारण, कम उम्र के बालक-बालिकाओं (झडौलियों) के शाप से, भगवान् विष्णु के अनदार के कारण संतान नहीं हो रही है। ऐसे में जातक को बुध के वेदोक्त मंत्र के चार हजार जप करने चाहिये। बुध संबंध वस्तुओं का दान करते हुए, बुधवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।

37. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक का महाविष्णु या अतिविष्णु यज्ञ कर कास्यपात्र दुध में देना चाहिये।

38. बुध का अशुभत्व नष्ट करने के लिए छेद किया हुआ ताम्बे का पैसा या प्लेट बहते पानी में डाल दे अथवा कौड़ियों को जलाकर उसकी राख को दरिया में बहा दें।

39. जब बुध या केतु लग्न या सुखस्थान को छोड़कर कहीं भी बैठे हो तो अशुभ होते हैं। ऐसे जातक को विवाह के 34 वर्षों तक आर्थिक संघर्ष के मध्य में से गुजरना पड़ता है, विवाह देरी से होता है। बचाव के लिए जातक नाक मे छेद करावे तथा फिटकारी से दांत साफ करे, छोटी कन्याओं को पीले हलवे का भोजन करावे, मंदिर में केसर चढ़ावे।

40. यदि बुध तीसरे स्थान में बैठकर अशुभ फल दे रहा है, पराक्रम में कमी, मान भंग की आशा हो, तो मंगल की रात्रि को साबित मूंग की दाल लाकर भिगो दें। बुध की प्रातः उसे पक्षियों को चुगा दें। 43 दिन तक नियमित प्रयोग करने से व्यक्ति का प्रभुत्व-पराक्रम बढ़ता है या साबूत मूंग का दान भी जातक कर सकता है।

41. बुध तीसरे हो तथा उसके शत्रु ग्रह केतु या शुक्र 6, 7वें स्थान में हो तो पिता की सम्पत्ति खतरे में पड़ जाती है, मासी व मौसे का स्वास्थ्य चिंता का विषय हो जाता है। ऐसी स्थिति में जातक नित्य फिटकरी से दांत साफ करे, पक्षी को चुगा दे तथा भेड़ का दान करे। जब अनिष्टकारी बुध सप्तम स्थान में हो तो उसकी निशानी यह होगी कि अपनी बहिन तथा बाप की बहिन को कष्ट होगा। ऐसे समय में साबूत मूंग का दान करना चाहिए।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुधवार व्रत कथा

बुध मनुष्य की विद्या, वाक्पटुता व बुद्धि को प्रभावित करता है। बुध को ग्रहों का राजकुमार कहा जाता है। बुध बुद्धि व स्वास्थ लाभ प्रदान करने वाला है। बुध ग्रह की शांति व सुख-समृद्धि के लिए बुधवार का पूजन विशेष लाभकारी है। मनोकामनाओं की पूर्ति व शांति हेतु स्त्री-पुरुषों को बुधवार का व्रत रखना चाहिए।

बुध का तांत्रिक मंत्र–ॐ बुं बुधाय नमः।

विधि विधान–बुधवार का उपवास विशाखा नक्षत्र वाले बुधवार से आरंभ करना चाहिए। इस व्रत में सफेद वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। यह व्रत सात, सत्रह अथवा सत्ताइस बुधवारों को करना चाहिए। दिन में एक ही समय भोजन करना चाहिए। सर्वप्रथम बुधवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, स्वच्छ स्थान पर पूजन की सामग्री रखें तथा बुध के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस बार करें। तत्पश्चात कथा पढ़ें। कथा के मध्य में न तो उठें, ना ही बीच में बोलें। कथा सुनकर आरती करके प्रसाद ग्रहण करना चाहिए।

व्रत कथा–एक बार एक व्यक्ति जिसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, वह अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात उसने सास-ससुर से जाने के लिए आज्ञा मांगी। किंतु सास-ससुर ने कहा आज बुधवार का दिन है। आज के दिन गमन नहीं करते। उसने किसी की बात नहीं सुनी और अपनी पत्नी को विदा करवाकर अपने नगर के लिए चल पड़ा मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी। वह व्यक्ति गाड़ी से उतरकर पात्र लेकर जल की खोज में चल पड़ा। कुछ देर पश्चात वह वापस आया तो उसने देखा कि उसके जैसी शक्ल-सूरत, वेशभूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के पास बैठा है। यह देखक उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया। वह क्रोध में बोला ''तू कौन है और मेरी पत्नी के निकट क्यों बैठा है?'' दूसरे व्यक्ति ने कहा–''यह मेरी पत्नी है। मैं अभी अपनी ससुराल से इसे विदा कराकर ला रहा हूं।'' दोनों में परस्पर झगड़ा होने लगा। तभी उधर से राज्य के सैनिक जा रहे थे, उन्होंने सारा हाल सुनकर स्त्री से पूछा–''तुम्हारा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पति इन दोनों में से कौन है?'' उसकी पत्नी चुप थी क्योंकि दोनों व्यक्ति बिलकुल एक जैसे थे और उसमें से असली को पहचान पाना मुश्किल था। असली व्यक्ति ने ईश्वर से प्रार्थना की–''हे प्रभु! यह कैसी माया है कि पराया व्यक्ति मेरी पत्नी को अपना बना रहा है।'' तभी आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख, बुधवार के दिन तूने गमन किया, तूने किसी की बात नहीं मानी, अतः बुध देव की माया से तुझे इस कष्ट का सामना करना पड़ा है।

उसने भगवान् बुध देव से क्षमा याचना की। मनुष्य के रूप में आए भगवान बुध देव अं तर्ध्यान हो गए। वह व्यक्ति खुशी-खुशी अपनी पत्नी को लेकर अपने घर आया। इसके पश्चात् पति-पत्नी दोनों नियमपूर्वक बुधवार का उपवास करने लगे। इस प्रकार जो कोई भी बुधवार का उपवास रखता है तथा श्रद्धापूर्वक व्रत कथा को सुनता है उसे बुधवार के दिन गमन करने का दोष नहीं लगता है तथा उसे सर्वप्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

बुधदेव की आरती

जय श्री बुध देवा,
स्वामी जय श्री बुध देवा।
छोटे बड़े सभी नर-नारी,
करें तेरी सेवा।। स्वामी जय०।।
सुख करता दुःख हरता,
जय जय आनन्द दाता।
जो प्रेम भाव से पूजे,
वह सब कुछ है पाता ।।स्वामी जय०।।
सिंह आपका वाहन है,
है ज्योति सबसे न्यारी।
शरणागत प्रतिपालक,
हो भक्तन के हितकारी ।।स्वामी जय०।।
तुम हो दीनदयाल दयानिधि,
भय बंधन हारी।
वेद पुराण बखानत,
तुम हो भय पातक हारी ।।स्वामी जय०।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सद गृहस्थ हृदय में,
बुधराजा तेरा ध्यान करें।
जग के सब नर-नारी,
व्रत पूजा पाठ करें।।स्वामी जय०।।
विश्व चराचर पालक,
कृपासिन्धु शुभ करता।
सफल मनोरथ पूर्ण करता,
भव बन्धन हरता।।स्वामी जय०।।
श्री बुधदेव की आरती,
जो प्रेम सहि गावे।
सब संकट मिट जाएं,
अतुलित वैभव पावे।।स्वामी जय०।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र

ध्यानम्–

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशनिदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिदर्शाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

बुध की उत्पत्ति अत्रि गोत्र में मानी जाती है। बुध चेतना, इच्छा, सदाचार, मानव जीवन में तरक्की और चेतना शक्ति की मुख्य रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, आकांक्षा, आत्मविश्वास आदि के ये संतुलनकर्ता हैं। ये पुरातत्ववेत्ता, आविष्कर्ता, राजा, मंत्री आदि का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। हृदय, रक्त का संचालन, आंख, कान, हड्डी आदि पर भी बुध अपना अधिक-से-अधिक प्रभाव डालते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आह्वान्–

बुधोबुद्धिप्रदाता च सौम्यदृष्टिर्महायशः
यजमान-हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम्॥1॥
अहो चन्द्र सुतः श्रीमान् मागधायसमुद्भवः।
अत्रिगोत्रः चतुर्बाहुः खड्गखेटक धारकः॥2॥
गदावरदसिंहस्य सुवर्णाभश्समाविश।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत्॥3॥
ॐ इदं विष्णुविचक्रमेवेधानिदधेपदम।
समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ॥15/15॥
इशाने बुध स्थापयामि–

वैदिक मंत्र

विनियोग–ॐ उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषिः बृहती छन्दः बुधो देवता। त्वमिष्ठापूर्तेसम् इति बीजं बुधप्रीतये जपे विनियोगः। 'ॐ परमेष्ठीऋषये नमः शिरसि' 1 'ॐ बृहतीछन्दसे नमः मुखे 2'

न्यास–'ॐ बुधायै नमः हृदये' 'ॐ त्वमिष्टापूर्तेसम्' इति बीजाया नमः गुह्ये 4 'ॐ बुधप्रतीये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे' 5 इति ऋष्यादिन्यासः। 'ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृहि' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः 1 'ॐ त्वमिष्ठापूर्तेसम्' तर्जनीभ्यां नमः 2 'ॐ सृजेयामयञ्च' मध्यमाभ्यां नमः 3 'ॐ अस्मिन्त्सध स्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्' अनामिकाभ्यां नमः 4 ॐ विश्वेदेवा' कनिष्ठिाभ्यां नमः 5 'ॐ यजमानश्चसीदत-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः।

हृदयादिन्यास–ॐ त्वमिष्टा पूर्तेसम् इति शिरसे स्वाहा 2 'ॐ सृजेथामयञ्च' इति शिखायै वषट् 3 'ॐ अस्तिन्त्वसधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्' इति कवचाय हुम् 4 'ॐ विश्वेदेवा' नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यजमानश्च सीदत इति अस्राय फट् 6 इति हृदयादिन्यासः।

'ॐ उदबुध्यस्व' इति शिरसि। 'ॐ अग्नेप्रति' इति ललाटे 2 'ॐ जागृहित्वम्'। इति मुखे 3 'ॐ इष्टापूर्तेसम् इति हृदये 4 'ॐ सजेथामयञ्च' इति कय्याम् 6 'ॐ अध्युत्तरस्मिन्' इत्यूर्वोः 7 'ॐ विश्वेदेवा' नाभौ 5 'ॐ अस्मिन्त्सध्स्थ' इति जानुनोः 8 'ॐ यजमानश्च' ति पादयोः 9 'ॐ सिदत' इति सर्वाङ्गे 10 एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–'ॐ पीताम्बरः पीतवायुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।

चर्मासिधृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो 'बुधयच' 1 इति ध्यात्वाजयं कुर्यात्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपयोग वैदिक मंत्र–ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्ते स ठ. सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्च सीदताः

यह वैदिक मंत्र है। यद्यपि यह उच्चारण की दृष्टि से कठिन होने के कारण सर्व-साध्य नहीं है, व्यावहारिक दृष्टि से सरल, उच्चारण में सहज और सर्वसाध्य मंत्र निम्न हैं।

तंत्रोक्त बुध मंत्र–ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

पुराणोक्त बुध मंत्र–

ह्रीं प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

यदि दैनिक पूजा में स्नानोपरांत कोई व्यक्ति इस मंत्र की प्रतिदिन 5-7 माला जपता रहे तो कुछ समय उपरांत वह किसी स्थिति में सुखद परिवर्तन का अनुभव करेगा। यह पौराणिक और अत्यंत सरल मंत्र है। इसके अतिरिक्त वैदिक और तांत्रिक मंत्र भी प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार है–

इन तीनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नौ हजार जप अवश्य करना चाहिए। जप के प्रभाव से ग्रह पीड़ा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, जपकर्त्ता 108 दाने की माला से ही जाप करें।

बुध गायत्री मंत्र–

ॐ सौम्य रूपाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।

इस बुध गायत्री मंत्र का जप उनके लिए अत्यधिक आवश्यक है, जिन पर बुध की कठोर दृष्टि है। यदि वे इस मंत्र का जाप नियमित रूप से एवं पवित्रता से करें तो उसके लिए अत्यंत ही लाभकारी होगा। कम-से-कम एक माला प्रतिदिन जपनी चाहिए।

बुध यंत्र–बुध यंत्र को काष्ठ पीठिका पर आच्छादित श्वेत या हरित वस्त्र खण्ड पर स्थापित करें। गंगाजल अथवा शुद्ध जल छिड़क कर इसे स्नान कराएं। तत्पश्चात चंदन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करके किसी मीठी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करें। यह समस्त प्रक्रिया पूर्व की ओर मुख करके की जानी चाहिए।

यंत्र की पूजा कर चुकने के पश्चात् यथा-सामर्थ्य 1, 5 या 7 माला बुध मंत्र जपना चाहिए। उपवास भी आवश्यक होता है। इस प्रकार 7, 11 या 12 बुधवारों तक लगातार बुध-यंत्र की नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक उपासना करने की अवश्य ही लाभ होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

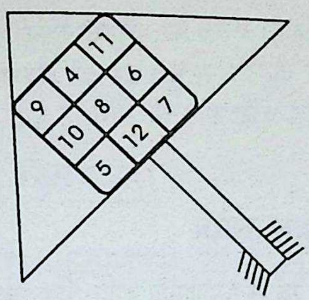

9	4	11
10	8	6
5	12	7

उपरोक्त बताई गई रीति के अनुसार ही यंत्र पूजन कर ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए।

बुधमंत्र-जपसंख्या 400, रत्न-पन्ना, समिधा-अपामार्ग, दान-मूंग, नीलवस्त्र, कास्य, कस्तूरी, घी, पंचरत्न, हाथी, दासी।

बुध कवच

विनियोग–अस्य श्रीबुधकवच स्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः बुधो देवता-बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधस्त पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपन॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा।
नेत्र ज्ञानमयः पातु श्रुति पातु निशाप्रियः॥
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रीं भुजौ पुस्तक भूषणः॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभि पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः॥
जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातुःपातु सौम्योऽखिलं वपुः॥
एतद्धि कवचं दिव्य सर्वपाप प्रणाशनम्।
सर्वरोग प्रशमनं सर्वदुख निवारणम्॥
आयुरारोग्यशुभदं पुत्रपौत्र प्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद् वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उक्त बुध कवच ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित है। कवच का पाठ करनेवाला प्राणी यदि नियमित रूप से एकाग्र होकर पूजन करे तो उस पर बुध ग्रह की अवश्य ही कृपा बनी रहेगी तथा दीर्घ आयु, निरोगी, वंश वृद्धि होने के साथ ही दुखों का सर्वनाश होना स्वाभाविक है।

बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्र

विनियोग–अस्य श्रीबुधपंचविंशतिनाम स्त्रेत्रस्य प्रजापति कृषिः त्रिष्टप्छन्दः बुधो देवता, बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठों बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियंगुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥
ग्रहोपमो रोहिणयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धन॥
चंद्रात्मजोविष्णुरूप ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दार पुत्र धान्य पशुप्रदः।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिगुणदो गुणिवत्सलः।
पंचविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥
स्मृत्व बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥

□□□

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुनलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

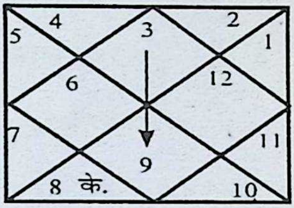

1. **माणिक्य**–मिथुनलग्न की कुण्डली में सूर्य तृतीय भाव की स्वामी होता है। अत: इस कुण्डली के जातक को यह रत्न भी धारण करना लाभदायक नहीं होगा।
2. **मोती**–मिथुनलग्न में चंद्र धन भाव का स्वामी है। चंद्र की महादशा में इस लग्न का जातक मोती पहनना चाहे तो पहन सकता है। परन्तु यदि इसके बिना काम चल सके तो अच्छा होगा। क्योंकि चंद्र मारकेश भी है परंतु कुण्डली में यदि चंद्र द्वितीय होकर एकादश, दशम या नवम भाव में स्थित हो या द्वितीय ही में स्वराशि में हो तो चंद्र की महादशा में मोती धारण करने से लाभ होगा।
3. **मूंगा**–मिथुनलग्न इसमें मंगल षष्ठम और एकादश या षष्टम में ही स्थित हो तो मंगल की महादशा में मूंगा धारण किया जा सकता है। मिथुन लग्न के जातक यदि मूंगे से दूर रहें तो अच्छा ही है। क्योंकि लग्नेश बुध और मंगल परस्पर मित्र नहीं है।
4. **पन्ना**–मिथुनलग्न के लिए बुध लग्न और चतुर्थ का स्वामी है। इस लग्न के जातक को पन्ना सदा रक्षा-कवच के रूप में धारण करना चाहिए। इसके धारण से धन शिक्षा, यश, मान-प्रतिष्ठा आदि में वृद्धि होती है। ध्यान रखें, पन्ना आपका जीवनरत्न है।
5. **पुखराज**–मिथुनलग्न के बृहस्पति और दशम भावों का स्वामी होने के कारण केन्द्राधिपति दोष से दूषित है। तब भी यदि बृहस्पति लग्न द्वितीय, एकादश, या किसी त्रिकोण में स्थित हो तो बृहस्पति की महादशा में पीला पुखराज

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धारण करने से संतान, सुख-समृद्धि में वृद्धि तथा धन की प्राप्ति होती है। यह मारकेश भी है। आर्थिक या सांसारिक सुख देकर वह मारक भी बन सकता है।

6. **हीरा**–मिथुनलग्न के लिए शुक्र द्वादश और पंचम का स्वामी होता है। पंचम त्रिकोण में उसकी मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। अतः इस लग्न के लिए शुक्र शुभ माना गया है। इसके अतिरिक्त शुक्र और लग्नेश बुध में परस्पर मित्रता है। इस कारण से शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से उन्नति, संतान-सुख, मान, यश, प्रतिष्ठा हो तो और भी शुभ फलकारी बन जाएगा।
7. **नीलम**–मिथुनलग्न का शनि अष्टम् और नवम् का स्वामी होता है। नवम् त्रिकोण का स्वामी होने से इस लग्न के लिए शुभ ही माना गया है। यदि शनि की महादशा में यह रत्न धारण किया जाये तो लाभदायक होगा। यदि नीलम को पन्ने के साथ धारण किया जाये तो अति उत्तम होगा।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–हीरा सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा पांच रत्ती, नीलम सवा चार रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**–केवल पन्ना सवा छः रत्ती।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पन्ना, हीरा दोनों सवा चार-चार रत्ती।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टांत कुण्डलियां

संत दलाईलामा

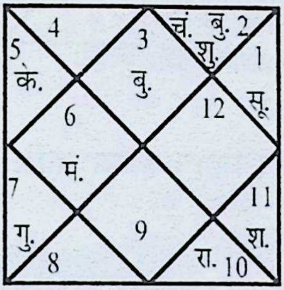

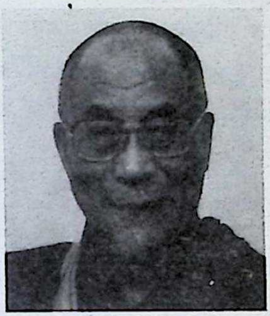

विश्व राजनीति में शान्ति दूत के रूप में विख्यात दलाईलामा तिब्बत के महान धर्म गुरु हैं। चीनी सरकार से पीड़ित श्री दलाईलामा भारत में विशेष सम्माननीय संत के रूप में पूजे जाते हैं। व्यय भाव में तीन ग्रहों होने के कारण ये सदैव भ्रमणशील रहे। लग्न मे बुध 'भद्रयोग' बना रहा है। एक मात्र राजयोग के कारण वे संत होने के साथ-साथ राजपुरुष भी हैं।

डा. नारायणदत्त श्रीमाली

जन्म स्थान-ढ़ीढस (जोधपुर), जन्म समय-10.20, जन्म तिथि- 20.4.1935। इस कुण्डली में **'बुधादित्य योग'**, **'गजकेसरी योग'** होने से जातक ने बुद्धि वैचित्र्य एवं प्रकाशन से करोड़ों रुपये कमाये। अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे ये भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दुनिया को बताया कि ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से भी करोड़ों रुपये कमाये

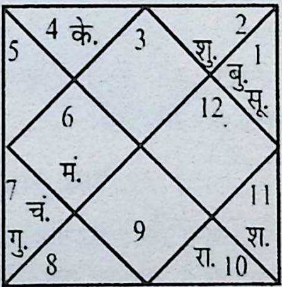

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा सकते हैं। शनि भाग्य स्थान में मूलत्रिकोण राशि में होने से ये 'भाग्यशूर' थे। भाग्य पक्ष और पत्नी पक्ष इनकी उन्नति में बराबर के सहयोगी थे।

डॉ. गिरधारी लाल गोस्वामी

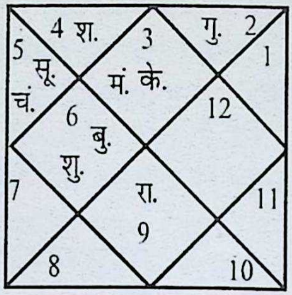

जन्म स्थान-चिलियोट (पाक.), जन्म समय-प्रात 3.00, जन्म तिथि-19.8.1935। यह भी भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य की कुण्डली है। जिनके नाम से दिल्ली में एक राजमार्ग भी है। नेहरु परिवार से इनके घरेलू संबंध थे। इस कुण्डली में तृतीयेश सूर्य स्वगृही एवं चतुर्थेश बुध उच्च का 'भद्रयोग' एवं 'नीचभंगराजयोग' बना कर बैठा है, फलतः पराक्रम एवं सुख दोनों ही घर शक्तिशाली थे। इनके तीन पुत्र हैं और तीनों यशस्वी हैं।

काका हाथरसी (महान हास्य कवि)

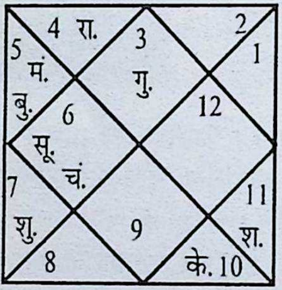

जन्म स्थान-हाथरस, जन्म समय-12.00, जन्म तिथि-18.9.1906। काका हाथरसी का जन्म एक गरीब परविार में हुआ। उनकी युवावस्था संघर्षशील थी। सप्तमेश बृहस्पति के अपने स्थान को देखने के कारण विवाह के बाद काका का भाग्योदय हुआ। तृतीयेश सूर्य बुध के घर में, एवं चतुर्थेश बुध सूर्य के घर के परस्पर 'परिवर्तन योग' के कारण काका की लेखनी यशस्वी बनी और उसी से उन्हें भौतिक सुखों की प्राप्ति हुई।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन

जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म तिथि-8.2.1897, जन्म समय-प्रात 15.00। कुण्डली में उच्चस्थ शुक्र केन्द्र में होने से 'मालव्य नामक' राजयोग बना। लग्नेश

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

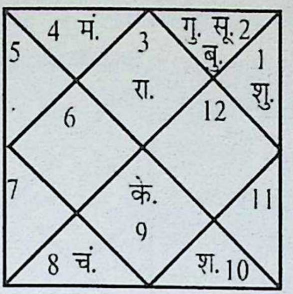

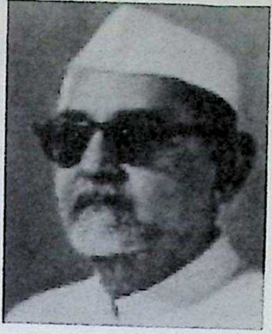

आठवें होने से जन्म साधारण परिवार में होकर बड़े संघर्ष के साथ जातक आगे बढ़ता है। मंगल यहां विपरीत राजयोग बनाता है। जातक शुक्र की दशा में भारत के राष्ट्रपति पद पर पहुंच गये।

जयपुर महाराजा जयसिंह जी

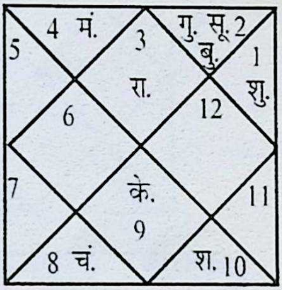

जयपुर महाराजा श्री जयसिंह ज्योतिषशास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे। उन्होनें जयपुर, दिल्ली, बनारस व उज्जैन में विभिन्न वेधशालाओं का निर्माण कराया। इस कुण्डली में उच्च का राहु लग्नस्थ होने से ही विशेष राजयोग मुखरित हुआ। वे राहु की दशा में ही महाराजा बने।

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन

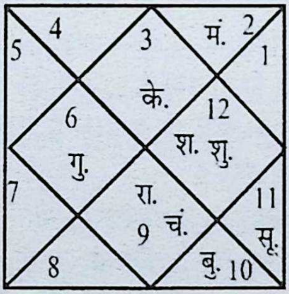

यहां चारों केन्द्र भरे हुए होने के कारण 'आसमुद्रात' नामक राजयोग बना। उच्च का शुक्र केन्द्र में होने से 'मालव्य' नामक राजयोग बना। तृतीयेश सूर्य भाग्य में होने से जातक का पराक्रम, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा सात समुद्र पार फैली।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रधानमंत्री गोल्डा मेयरे

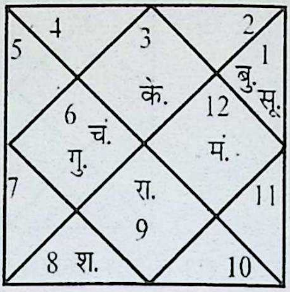

जन्म स्थान-इजराइल, जन्म तिथि-3.5.1898, जन्म समय-प्रात 9.30। 'गजकेसरी योग' एवं 'बुधादित्य योग' के कारण यह महिला आगे बढ़ी। यहां शनि विपरीत राजयोग बनाकर बैठा है। शनि भाग्येश है फलत: शनि की दशा में ही गोल्डा मेयरे इजराइल की प्रधानमंत्री बनी। सूर्य उच्च का होने से इनका पराक्रम विलक्षण था।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री जुल्फिकार भुट्टो (पाक.)

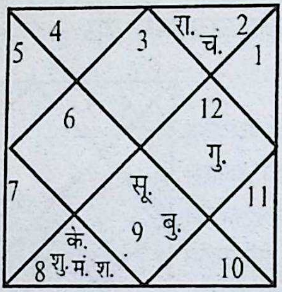

जन्म स्थान-लरकाना (पाक.), जन्म समय- प्रात 5.30, जन्म तिथि-5.1. 1928। इनकी पहली शादी 13 वर्ष की आयु में तथा दूसरी 24 वर्ष की आयु में नसरत भुट्टो से हुई। इनकी बेटी बेनजीर भुट्टो भी पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बनी। 1 जनवरी 1963 भुट्टो पहली बार विदेश मंत्री बने। 1970 में श्री भुट्टो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने। 3 सितम्बर 1977 को इन्हें गिरफ्तार किया तथा 3.4.1979 को रावलपिंडी में इन्हें फांसी पर लटका दिया। अज्ञातदर्शन के मार्च 79 के अंक में भुट्टो को फांसी देने की भविष्यवाणी की गई थी जो सच हुई।

बुध लग्नेश होकर लग्न को देखता हुआ 'लग्नाधिपति योग' बना रहा है। स्वगृही गुरु केन्द्रस्थ होकर राजयोग बना रहा है। जिसके कारण ये एक बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पद पर पहुंच गए। चंद्रमा उच्च का एवं मंगल स्वगृही है जो मंगल को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। भुट्टो की मृत्यु फांसी से होगी इसकी भविष्यवाणी हमने बहुत पहले अज्ञातदर्शन में कर दी थी। हैंड प्रिंट व जन्मकुंडली के आधार पर घोषित की गई मृत्यु की तारीख में सिर्फ चार दिन का अंतर निकला।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुट्टो की कुंडली में छठे स्थान में द्वादश भाव पर्यन्त 'महापद्म नामक कालसर्प योग' बना जिसके कारण बिलकुल झूठे आरोप में फंसे एवं मृत्युदंड को प्राप्त हुए। जीवन भर कार्य में बाधा एवं निरंतर संघर्ष एवं परस्पर धोखे के कारण इनका जीवन कष्टमय ही रहा।

पूर्व प्रधानमंत्री (भारत) चौधरी देवीलाल

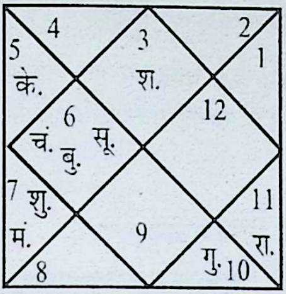

जन्म-25.9.1914, नक्षत्र-चित्रा। चौधरी देवीलाल किसान राजनेता के रूप में पूरे भारत में मशहूर हैं। उनके पुत्र हरियाणा के मुख्यमंत्री है। पंचम भाव में स्वगृही शुक्र एवं मंगल तेजस्वी पुत्रों को जन्म देता है। केन्द्र में 'भद्रयोग' तथा 'बुधादित्य योग' ने उन्हें भारत का प्रधानमंत्री बना दिया।

ग्वालियर राजमाता श्रीमति विजयराजे सिंधिया

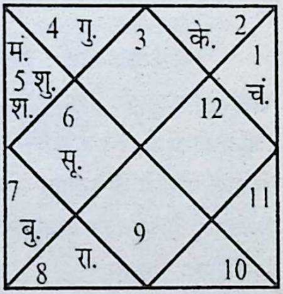

जन्म स्थान-सागर, जन्म तिथि-12.10.1919, जन्म समय-11.00। श्रीमति विजयराजे सिंधिया की कुंडली के तृतीय स्थान में मंगल व शनि की युति से पराक्रम में विग्रह रहा। सम्पत्ति का विवाद सदैव उलझा ही रहा। सप्तमेश गुरु उच्च का होने से श्रीमति विजयराजे सिंधिया का विवाह शाही खानदान में महाराजा जिवाजी राव सिंधिया से हुआ। वे भाजपा की उपाध्यक्ष पद पर रहीं। उन्होंने बृहस्पति के कारण अनेक बार लोकसभा चुनाव जीते। उनके पुत्र व पुत्रियों दोनों ही राजनीति में सक्रिय हैं।

राजनेता श्री अर्जुन सिंह (कांग्रेस)

जन्म स्थान-सतना, जन्म समय-22.00, जन्म तिथि-5.11.1930, श्री अर्जुन सिंह कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में से एक हैं। वे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री, पंजाब के गवर्नर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

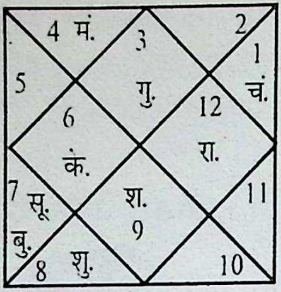

एवं राजीव गांधी के प्रमुख सलाहाकार थे। चारों केन्द्र भरे हुए होने से 'आसमुद्रात् योग' एवं बुधादित्य योग' के कारण उन्होंने भारत की राजनीति में अपना प्रमुख स्थान बनाया।

श्री हेनरी किंसिजर

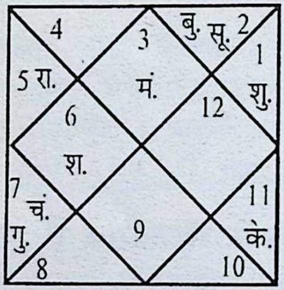

जन्म स्थान-फर्थ (जर्मनी), जन्म समय-प्रात 5.30, जन्म तिथि-27.5.1923। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के राज्य शासन सचिव श्री हेनरी किंसिजर उन. भाग्यशाली व्यक्तियों में हैं। जिन्हें नोबल शान्ति पुरस्कार मिला। पंचम स्थान में 'गजकेसरी योग' से उन्हें दलाली के व्यापार में भारी लाभ हुआ। धनेश चंद्रमा पंचम होने से ये महाधनी व्यक्तियों में एक है। बुधादित्य योग व्यय भाव में होने से इन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण अनेक बार किया।

नाथूराम विनायक गोडसे

जन्म समय-प्रात 8.30, जन्म तिथि-19.5.1910। लग्नस्थ मंगल व्यक्ति को क्रोधी, दुस्साहसी व खूनी बनता है। द्वादश राहु जेल भेजता है। **'गजकेसरी योग'** के कारण गोडसे बुद्धिजीवी पत्रकार, साहित्यकार थे। बृहस्पति दशा उन्हें 1945 में लगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

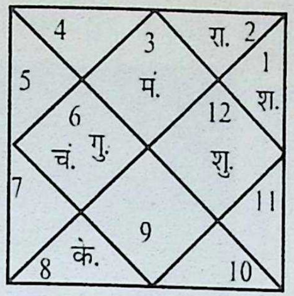

बृहस्पति केन्द्राधिपत्य दोष से पीड़ित था। शनि नीच का था। उनके द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या 30 जनवरी 1948 को हुई। जब उन्हें बृहस्पति की दशा में शनि का अंतर चल रहा था। वहीं से दुर्दिनों की शरुआत हुई और इन्हें जेल व मृत्युदण्ड की सजा हुई।

श्री बी.के. मलिक

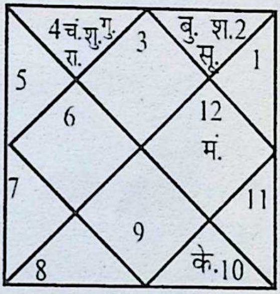

जन्म स्थान–अमृतसर, जन्म समय–7.39, जन्म तिथि–8.6.1943। दिल्ली स्पेशल सुरक्षा बल के डायरेक्टर जनरल पद पर कार्यरत हैं। उनकी कुण्डली में कालसर्प योग पूर्ण है। राजयोग कर्त्ता–दसमस्थ मंगल गजकेसरी है। मंगल दिक्बली है वक्री है। दशमेश बृहस्पति उच्च का है। परन्तु व्यय भाव में तीन ग्रहों की युति में उनको अपनी योग्यता के अनुसार उच्च पद न मिल पाया।

श्री जयकरण बालानी (डी.आई.जी.)

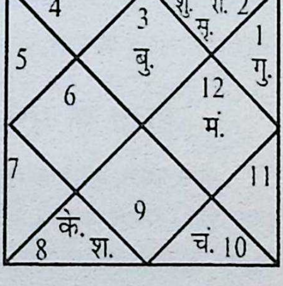

जन्म स्थान–नबाब शाह (सिंध), जन्म समय–8.45, जन्म तिथि–1.6.1928। जोधपुर शहर में प्रतिष्ठित सिंधी परिवार में जन्में डी.आई.जी. जयकरण बालानी का नाम प्रसिद्ध समाजसेवी व्यक्तियों में अग्रगण्य हैं। वे अत्यधिक विनम्र स्वभाव के रहे। लग्न में स्वगृही बुध ने 'भद्रयोग' बनाया। जिससे उनका कार्यकाल यशस्वी रहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बंगारू लक्ष्मण (राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा)

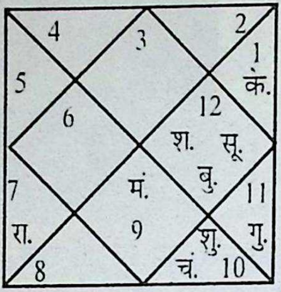

जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म समय-15.00, जन्मतिथि-17.3.1939। केन्द्र में 'बुधादित्य योग' भाग्य में गुरु के कारण बंगारू लक्ष्मण भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसे पद पर आरूढ़ हुए। परन्तु पूर्ण कालसर्प योग के कारण मुंह में आया, कौर वापस उलट गया। वे रिश्वत काण्ड में फंसे एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हाथ धो बैठे।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर

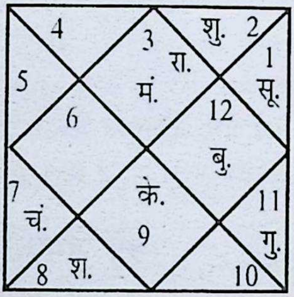

जन्म स्थान-बलिया (उत्तर प्रदेश), जन्म समय-प्रात 11.00, जन्म तिथि-17.4.1927। लग्नेश बुध केंद्र में, गुरु त्रिकोण में स्वगृहाभिलाषी है। पंचम स्थान में चंद्रमा, देवगुरु बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि लग्न पर है जो स्वगृहाभिलाषी है। जिससे 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि हुई। इसी प्रकार पराक्रमेश सूर्य उच्च का लाभ स्थान में उभयचारी योग के साथ है। जिन्होंने इन्हें प्रधानमंत्री पद पर पहुंचाया। 'यह कुंडली भारत के अल्पकालिक प्रधानमंत्री की है।' ऐसी अचूक भाविष्यवाणी इनके प्रधानमंत्री बनने के एक वर्ष पूर्व हमारे कार्यालय द्वारा की जा चुकी थी।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई

जन्म स्थान-बलसाड़ (गुजरात) जन्म समय- 13.20, जन्म तिथि-29.2.1896। दूसरे, छठे, आठवें बारहवें स्थान में ग्रह हो, तो 'सिंहासन' नाम का राजयोग होता है। यह कुंडली बड़ी विचित्र है, जिसमें चारों केन्द्र खाली हैं। गुरु उच्च का, शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

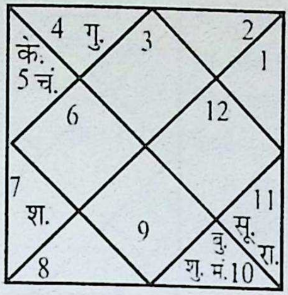

उच्च का, मंगल उच्च का, इन तीन उच्च के ग्रहों ने इन्हें उपप्रधानमंत्री एवं भारत के प्रधानमंत्री तक के पद तक पहुंचा दिया। अष्टम स्थान में मंगल ने इन्हें शांतजीवी बना दिया। अष्टमेश शनि और पंचमेश शुक्र ने परस्पर स्थान परिवर्तन किया जिससे आयु सौ वर्ष से ऊपर की चली गई। चिरंजीवी आयु की दृष्टि से प्रस्तुत कुंडली ज्योतिष प्रेमियों के लिए संग्रहणीय है तथा 'दीर्घायु' का अनुपम उदाहरण है।

जोधपुर महाराजा श्री गजसिंह जी साहब

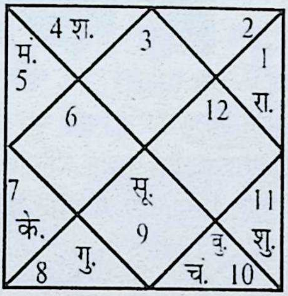

जन्म समय-(इष्ट) 24.57, जन्म तिथि- 13.1.1948। जोधपुर महाराजा गजसिंह का नाम नवकोटि मारवाट के धनी के रूप में आदर के साथ लिया जाता है। पराक्रमेश सुख केन्द्र में होने से पराक्रम अक्षुण्ण रहेगा। शुक्र उच्चाभिलाषी है। इस कुण्डली में धनेश चन्द्र ने लाभेश भाग्येश शनि के साथ 'राशि परिवर्तन' किया है। यह महाधनशाली एवं कीर्तिवन्त योग है। इनका राजतिलक 12 मई 1952 को हुआ।

श्री एस.बी. चव्हाण

जन्म समय-5.30, जन्म तिथि-14.7.1920। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एस.बी. चव्हाण पी.वी. नरसिम्हा राव के कार्यकाल में भारत के गृहमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर रह चुके हैं। लग्न में सूर्य एवं उच्च के गुरु ने इन्हें राजपद तो दिया पर पूर्ण कालसर्प योग के कारण इन्हें स्थाई कीर्ति जितनी मिलनी चाहिए, नहीं मिल पाई। यहां चन्द्र एवं बुध ने परस्पर भाव परिवर्तन किया। इससे भी राजयोग शक्तिशाली बना। पंचम में राहु होने के कारण संतान शक्तिशाली राजयोग वाली नहीं हो पाई।

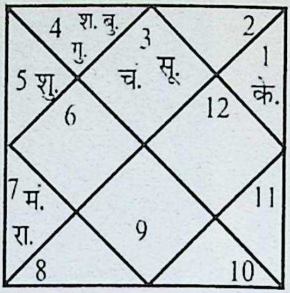

पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदम्बरम्

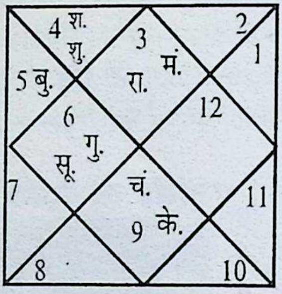

जन्म स्थान-कराईकुण्डी (तमिलनाडू), जन्म समय-11.47, जन्म तिथि-16.9. 1945। यहां मिथुन के राहु ने राजयोग प्रदान किया है। सूर्य एवं बुध ने परस्पर घर परिवर्तन किया है। इससे लग्न, सुख एवं पराक्रम तीनों स्थान शक्तिशाली हो गये। पी. चिदम्बरम परम बुद्धिशाली रहे तथा वित्त विभाग में संबंधित मंत्रालय में भी यशस्वी कार्यकाल में जुड़े रहे।

श्री प्रमोद महाजन युवा नेता (भाजपा)

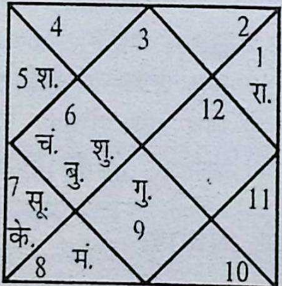

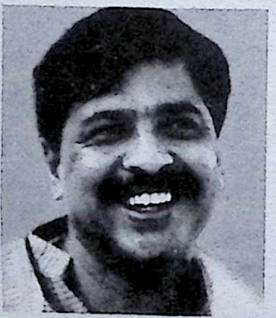

जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म समय-प्रात 21.00, जन्म तिथि-30.10.1948। केन्द्रस्थ उच्च के बुध से 'भद्रयोग' बना। शुक्र के कारण 'नीचभंग राजयोग' बना।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फलतः भाजपा की राजनीति में युवा नेता प्रमोद महाजन का एक विशिष्ट स्थान है। गुरु स्वगृही केन्द्र में 'हंसयोग' बना रहा है। इससे वे भारत के पूर्व रक्षा मंत्री जैसे पद को प्राप्त कर चुके हैं। मंगल छठे विपरीत राजयोग बना रहा है। अतः आगे भी राजनीति में इनका भविष्य उज्जवल है।

श्रीमति प्रियंका गांधी

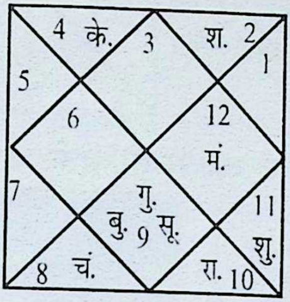

जन्म स्थान-दिल्ली, जन्म समय-प्रात 17.05, जन्म तिथि-12.1.1972। भारतीय राजनीति एवं नेहरु परिवार के वारिस के रूप में कांग्रेसजन प्रियंका की ओर बड़ी आशाभरी दृष्टि से देख रहे हैं। दशम स्थान में दिक्बली मंगल, सप्तम में बृहस्पति राजयोग की सृष्टि कर रहा है। बुधादित्य योग एवं हंसयोग इनको उच्च पद अवश्य दिलायेगा।

मुख्यमंत्री जयललिता

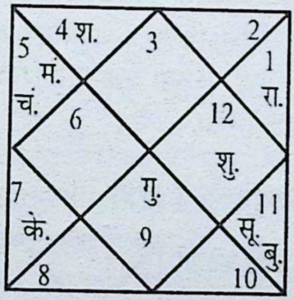

जन्म स्थान-चैन्नई, जन्म समय-2.34, जन्म तिथि-24.2.1948। कु. जयललिता की कुण्डली में गुरु केन्द्र में होने से हंसयोग बना। शुक्र उच्च का केन्द्र में होने से 'मालव्य योग' बना। ये दोनों राजयोग महान शक्तिशाली हैं। जिससे जातक शक्तिशाली मुख्यमंत्री पद पर वन्दित है। चन्द्र+मंगल लक्ष्मीयोग पराक्रम बढ़ा रहा है। बुधादित्य योग भाग्य स्थान में राजपक्ष में शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सहायक है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दलित उपप्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम

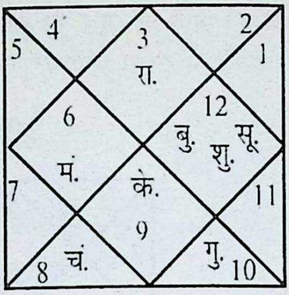

बाबू जगजीवन राम का नाम दलित राज नेताओं में अग्रणी रहा। केन्द्र में उच्च के शुक्र ने 'मालव्य योग' बनाया। बुधादित्य योग नीचभंग राजयोग ने उन्हें भारत के रक्षामंत्री से उप प्रधानमंत्री तक की कुर्सी तक पहुंचाया। आसमुद्रात् योग में उनकी कीर्ति भी अक्षुण्ण बनी रही।

श्री बिल गेटस्, दुनिया का सबसे धनी व्यक्ति

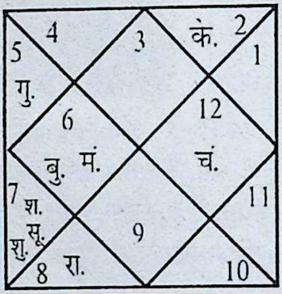

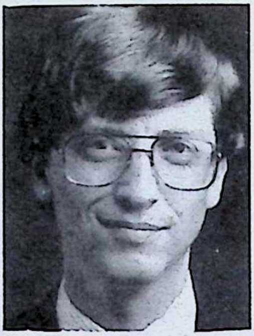

जन्म स्थान-सिएटल (अमेरिका), जन्म समय-20.58, जन्म तिथि-28.10. 1955। विश्व के सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में बिल गेट्स का विशिष्ट स्थान है। कम्प्यूटर की दुनिया के माध्यम से उन्होंने देश-विदेश में अपूर्व ख्याति अर्जित की। केन्द्र में उच्च के बुध से 'भद्रयोग' ने उन्हें यशस्वी राजा बना दिया तो पंचम में 'किम्बहुना योग' से वे अरब-खरबपति बन गये।

श्री उमर अब्दुल्ला (मंत्री)

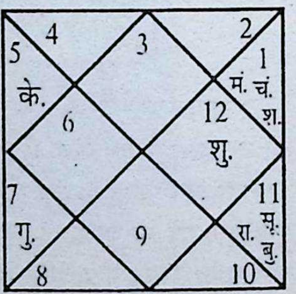

शेख श्री उमर अब्दुल्ला का नाम जम्मू-कश्मीर की राजनीति में प्रमुख स्थान रखता है। केन्द्रस्थ उच्च के शुक्र ने 'मालव्य' योग बनाया, जिससे वे राज्य के मंत्री बने। केन्द्र की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। लाभ स्थान में 'नीचभंग राजयोग' एवं भाग्य स्थान में 'बुधादित्य योग' होने से आगे भी राजनीति में उन्हें सफलता प्रदान करता रहेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युवराज दीपेन्द्र

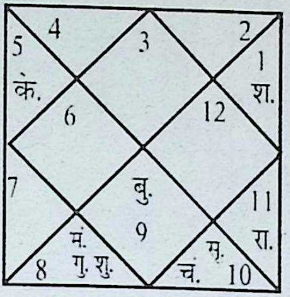

जन्म स्थान-नेपाल, जन्म समय-प्रात 18.00 सायं, जन्म तिथि-27.1.1971। नेपाल नरेश एक ऐसे कुख्यात व्यक्ति के रूप में याद किये जायेंगे, जिन्हें न तो राजगद्दी मिली न प्रेमिका। नीच का शनि मलिन बुद्धि देता है तथा छठे, आठवें स्थान में शुभ ग्रहों की उपस्थिति ने सारे राजयोग नष्ट कर दिये। 28 वर्ष की आयु में वे स्वयं मारे गये एवं अपने परिवार को भी मार डाला। उनकी मृत्यु 4.6.2001 प्रात: 3.45 को काठमण्डू में हुई।

चार्ल्स शोभराज

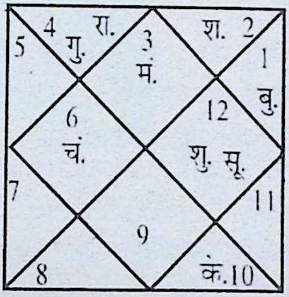

जन्म समय-प्रात 11.30, जन्म तिथि-6.4.1944। एक शातिर अपराधी की यह कुण्डली है। लग्न में मंगल इसे क्रोधी व दुस्साहसी बनाता है। शुक्र उच्च का केन्द्र में 'मालव्य योग' बना रहा है। जिससे राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं विलासी जीवन जिया। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री एवं आंशिक कालसर्प योग के कारण इसका अन्त दु:खद रहा।

आंइसटीन वैज्ञानिक

जन्म स्थान-उल्म (जर्मनी), जन्म समय-प्रात 11.30, जन्म तिथि-14.3.1879। महान वैज्ञानिक एलबर्ट आइस्टीन की कुण्डली में नीचभंग राजयोग दशम स्थान में है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

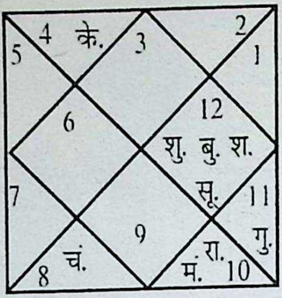

जिसके कारण उन्हें अद्वितीय कीर्ति मिली। मंगल विपरीत राजयोग करके उच्च का है। चंद्रमा नीच का है। परंतु बृहस्पति राहु के नक्षत्र में होने से 'चाण्डाल योग' बना। आंइसटीन की मृत्यु बृहस्पति की दशा में ही हुई तथा क्रूर रूप से हुई।

श्रीमति हिलेरी क्लिंटन

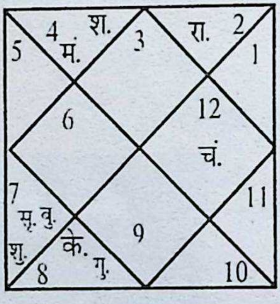

जन्म स्थान-शिकागो (अमेरिका), जन्म समय-रात्रि 8.00 बजे, जन्म तिथि-26.10.1947। अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की पत्नी श्रीमति हिलेरी क्लिंटन, कानूनी शिक्षा व समाज शास्त्र की प्रोफेसर रही। पंचम स्थान में नीचभंग राजयोग की स्थिति यह बता रही है। विवाह के पांच वर्ष बाद एक प्यारी सी बच्ची चेल्सी की मां बनी। सन् 1998 में इनके पति के ऊपर मोनिका लेविंस्की काण्ड का गंभीर आरोप लगा। श्रीमति हिलेरी ने इसका जमकर मुकाबला किया। इन्हीं दिनों में अपने गृह प्रांत की सीनेटर बनी। मौजूदा दौर में 2006-2007 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में भी श्रीमति हिलेरी प्रमुख़ दावेदार के रूप में खड़ी होंगी।

श्री रामकृष्ण डालमिया

जन्म स्थान-दिल्ली, जन्म समय-11.50, जन्म तिथि-7.4.1893। यह कुंडली भारत के प्रसिद्ध पूंजीपति सेठ श्री रामकृष्ण डालमिया की है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीच स्थितो जन्मनि यो ग्रह स्यात्तद्राशिनाथोऽथ तदुच्चनाथः।
भवेत् त्रिकोणे यदि केंद्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवती॥

—लग्नचंद्रिका श्लोक 86/पृ. 17

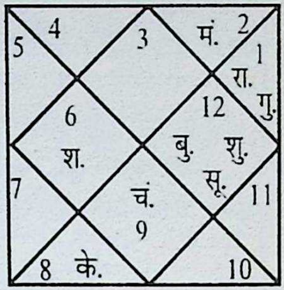

जो ग्रह नीच राशि का हो उस ग्रह के राशि का स्वामी तथा उस राशि का उच्च नाथ केंद्र या त्रिकोण में हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। यहां बुध नीच का गुरु की राशि में है, गुरु कर्क में उच्च का है। यहां उच्चनाथ चंद्रमा केंद्र में बैठकर लग्न को देख रहा है तथा लग्नेश बुध ''नीचभंग राजयोग'' बनाकर उच्च का शुक्र के साथ केंद्र में है। पराक्रमेश सूर्य दिक्‌बली होकर उच्चाभिलाषी है। उच्चाभिलाषी शनि भी केंद्रस्थ होकर उत्तरोत्तर श्रेष्ठ राजयोग की सृष्टि कर रहा है।

श्री दुर्गाप्रसाद साबू

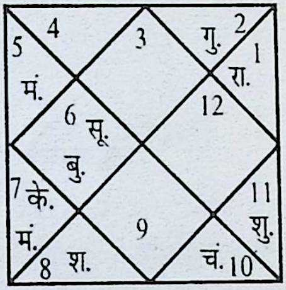

जन्म स्थान-नाटा सिटी, जन्म समय-इष्ट 39/9, जन्मतिथि-11.10.1929। यहां बुध उच्च का केन्द्र में होने से 'भद्रयोग' बना। बुधादित्य योग बना। धनेश चंद्रमा अपने घर (धनस्थान) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। लधु सीमेंट प्लांट बनाने वाले भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री दुर्गाप्रसाद साबू विनम्र स्वभाव के तथा धनी होने के साथ-साथ समाजसेवी भी है।

श्री जुगलकिशोर बिड़ला

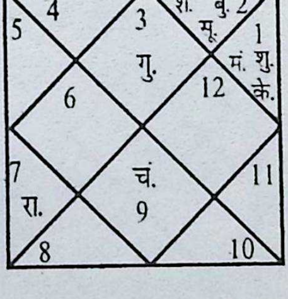

श्री जुगलकिशोर बिड़ला का नाम धनपति घरानों में विशेष है। पर कुण्डली विचित्र है। लग्न में बृहस्पति, कुलदीपकयोग, केसरीयोग बना रहा है। सामने चंद्रमा होने से गजकेसरीयोग बना। बुधादित्ययोग द्वादश स्थान होने श्री बिडला महान् दानी थे तथा पूरे विश्व का भ्रमण किया। शनि द्वादश में विपरीत राजयोग बना रहा है। इसीसे वे करोड़पति-अरबपति बने।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री पद्म मेहता

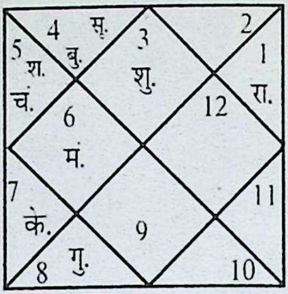

जन्म स्थान-जोधपुर, जन्म समय-2.25, जन्मतिथि-6.8.1948। श्री पद्ममेहता सम्पादक एवं स्वामी दैनिक जलतेरीय एवं माणक तथा माणक टी. बी. न्यूज के प्रणेता है। बुधादित्य योग धनस्थान में शुभ है। मंगल दिक्बली है। परंतु आंशिक कालसर्पयोग के कारण जीवन संघर्षमय रहेगा।

स्वतंत्र राजस्थान की कुण्डली

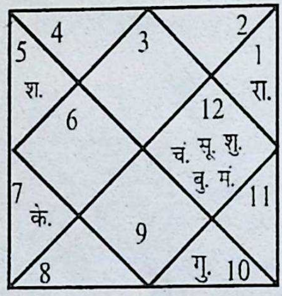

जन्म समय-प्रात 12.00, जन्मतिथि-30.3.1949। शुक्र केन्द्र में 'मालव्ययोग', 'नीचभंगराजयोग', 'बुधादित्ययोग' मंगल दिक्बली, पंचग्रह युति केन्द्र में होने से राजस्थान प्रान्त में जो भी बाहर का आकर बसेगा, मालोमाल हो जायागा। राजस्थान सैदव उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा तथा अन्य राज्यों के अपेक्षाकृत बहुत श्रेष्ठ, सभ्य एवं विकासशील राज्य होगा।

शहीद खुदीराम बोस (मृत्युदण्ड भोगी)

केन्द्र के पापग्रह, गुरु पापपीड़ित है। लग्न छठे 'लग्नभंग योग' पराक्रमभंगयोग संततिहीन योग शुभ ग्रह छठे होने से जातक को देशभक्ति हेतु फांसी की सजा मिली। यहां बृहस्पति ने 'हंसयोग' नाकर जातक को अमर अनन्त कीर्ति प्रदान कर दी।

❑❑❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डायमंड पाकेट बुक्स में

डॉ. भोजराज द्विवेदी

की ज्योतिष, तंत्र, मंत्र, यंत्र व वास्तु की श्रेष्ठ पुस्तकें

हिन्दू मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार

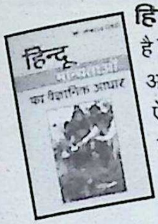

हिन्दू धर्म में प्रचलित विभिन्न प्रकार की मान्यताओं का क्या कोई वैज्ञानिक आधार है? ऐसे ही गूढ़ प्रश्नों को उठाते हुए प्रसिद्ध ज्योतिषी डॉ. भोजराज द्विवेदी ने अपनी नवीनतम पुस्तक 'हिन्दू मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार' पुस्तक में 368 ऐसे ही प्रश्नों के तर्कपूर्ण उत्तर दिए हैं। जैसे- पाप क्या होता है? भक्ति किसे कहते हैं? आठों प्रहरों के नाम क्या हैं? गणेश जी अग्रपूज्य क्यों हैं? इसी तरह के और भी बहुत से प्रश्न हैं जो हमारे मन में अनायास ही उठते हैं। इन सभी सवालों के जवाब पुस्तक में बड़े ही रोचक ढंग से दिए गए हैं।

पृष्ठ : 192 — *मूल्य : 60.00*

फेंग सुई

चीनी वास्तुशास्त्र : भारतीय संस्कृति व सभ्यता के साथ-साथ चीन का भी महत्वपूर्ण इतिहास है। चीनी सभ्यता भी प्राचीन काल से ही अनेक विद्याओं में अग्रणी रही है। इन्हीं में से एक है फेंग सुई (चीनी वास्तुशास्त्र) पुस्तक फेंग सुई के माध्यम से जीवन के लगभग सभी पहलुओं पर प्रकाश डालती है। फेंग सुई का इतिहास चीनी राशियों और उनका महत्त्व अनेक गूढ़ रहस्य व उनका तात्पर्य, व्यावसायिक व सामाजिक समस्याओं का फेंग सुई द्वारा समाधान, फेंग सुई की तकनीकी शब्दावली पुस्तक के ऐसे गुण हैं जो इसे हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों में कदाचित सर्वोपरि रखते हैं और निश्चित ही संग्रह योग्य बनाते हैं।

पृष्ठ : 228 — *मूल्य : 150.00*

अंकों का अद्‌भुत संसार

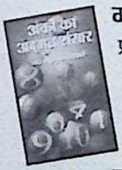

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही उसके जीवन में अंकों का विशेष महत्त्व रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने मिस्र की सभ्यता में अंकों के महत्त्व का गूढ़ अध्ययन कर उनका मानव जीवन पर प्रभाव सरल भाषा में कूट चित्रों सहित वर्णित किया है जो कि आज भी प्रयोगात्मक रूप से कारगर सिद्ध होते हैं। पुस्तक में तात्कालिक मान्यताओं व प्रभावों को वर्तमान में पाश्चात्य विचारों के साथ दिया गया है।

पृष्ठ : 224 — *मूल्य : 100.00*

वास्तु जिज्ञासाएं और समाधान

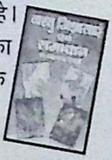

आज वास्तु शास्त्र अधिकाधिक लोकप्रिय और लाभदायक सिद्ध होता जा रहा है। पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए उनकी लगभग सभी वास्तु जिज्ञासाओं का पुस्तक में सरल समाधान देखने को मिलता है। पुस्तक का मुख्य आकर्षण यह है कि समाधान बिना किसी तोड़-फोड़ के सहज उपायों के साथ दिए गए हैं।

पृष्ठ : 184 — *मूल्य : 100.00*

पिरामिड एवं मंदिर वास्तु

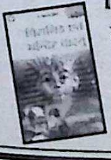

पिरामिड प्राचीन काल से मनुष्य की जिज्ञासाओं और उनमें छिपे रहस्यों का केन्द्र रहे हैं। समय-समय पर पिरामिडों के बारे में कुछ न कुछ कहा जाता रहा है। परन्तु तथ्यात्मक रूप से कोई भी ऐसा शोध कार्य अथवा लेख प्राप्त नहीं होता है जिससे कि इनकी उत्पत्ति, आहार, प्रभाव आदि की ठोस जानकारी प्राप्त होती हो।

पृष्ठ : 208 — *मूल्य : 150.00*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुभूत यंत्र-मंत्र-तंत्र और टोटके

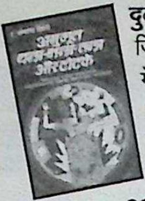

दुर्लभ व अप्रकाशित प्राचीन पांडुलिपि के ब्लाकों से युक्त यह प्रस्तुत पुस्तक प्रत्येक यंत्र-तंत्र जिज्ञासुओं के लिए संग्रहणीय है। भारतीय प्राच्यविद्याओं का गौरव बढ़ाने वाली प्रस्तुत पुस्तक में वैदिक प्रयोग, तांत्रिक प्रयोग, शाबर प्रयोग एवं अनेक रहस्यमय व चमत्कारिक यंत्रों के प्रयोग भी दिए हैं जिन्हें पाठक पहली बार देख पाएंगे। अनुभूति के व्यावहारिक संकलन के कारण पुस्तक की जितनी चर्चा देश में है, इससे कहीं अधिक मांग विदेश में है। निश्चय ही यह आपके पुस्तकालय की शोभा बढ़ाने वाली विशिष्ट पुस्तक है।

पृष्ठ : 264 *मूल्य : 120.00*

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र

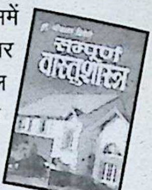

'संपूर्ण वास्तुशास्त्र' प्राचीन वास्तुकला को लेकर लिखी गई पहली पुस्तक है, जिसमें 'भवन स्थापत्य कला' पर विस्तृत चिंतन किया गया है। नए मकान का प्रवेश द्वार किधर हो? द्वारवेध किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं? भवन में जल स्थान (Water-tank) कहां, किधर होना चाहिए? (Kitchen) में अग्नि स्थान (Fire-spot) कहां हो? शयन कक्ष (Bed-room) किस दिशा में होना चाहिए ताकि शयनकर्ता को भरपूर नींद आ सके? निवास करने योग्य भूखंड की आकृति कैसी होनी चाहिए? भू-परीक्षण के क्या-क्या शास्त्रीय विधान हैं? सही वास्तु के मूहूर्त कैसे देखे जाते हैं? इन सभी पहलुओं पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान लेखक भोजराज द्विवेदी ने व्यावहारिक चित्रों के साथ पुस्तक को बहुत ही सुंदर ढंग से संवारा-संजोया है।

पृष्ठ : 208 *मूल्य : 100.00*

रेमेडियल वास्तु

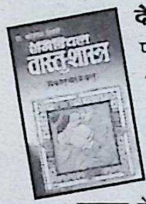

देश के प्रख्यात लेखक डॉ. भोजराज द्विवेदी ने प्राचीन वास्तु कला व इस विषय पर विश्व के नवीनतम शोधों को आधार बनाकर यह पुस्तक लिखी है। इसमें भवन स्थापत्य कला पर विस्तृत चिंतन के अतिरिक्त समस्त वास्तु दोष निवारण पर अधिकतम प्रकाश डाला गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भवन निर्माणकर्ता की जन्मकुंडली एवं राशि के अनुसार कब भवन की नींव, वास्तु प्रतिष्ठा एवं गृह प्रवेश करना चाहिए, इसका विवरण प्रारंभिक तौर पर दिया गया है।

पुस्तक में पहली बार बिना तोड़-फोड़ के वास्तुदोष शमन पर अनेक ग्रंथों से लिए अनुभूत व चमत्कारी उपाय दिए गए हैं। प्रबुद्ध पाठकों के लिए भवन दोष-निवारण हेतु विभिन्न प्रश्नोत्तरों द्वारा व्यावहारिक भी निदान दिया गया है।

पृष्ठ : 192 *मूल्य : 150.00*

पर्यावरण वास्तु

डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखी गई यह पुस्तक वास्तु एवं पर्यावरण विषय पर संभवतः विश्व की पहली पुस्तक है जिसमें प्राचीन शास्त्र को अत्याधुनिक शैली में समझाया गया है। पर्यावरण के संदर्भ में वृक्ष वास्तु की अवधकारणा यशस्वी लेखक का एक नवीन प्रयास है। जल स्थापत्य के बारे में सचित्र व्याख्या इस पुस्तक की खास विशेषता है।

पृष्ठ : 200 *मूल्य : 120.00*

सस्वर रूद्राभिषेक प्रयोग एक मीमांसा

भगवान शंकर की पूजा सनातन धर्म के प्रारंभ काल से ही होती चली आ रही है। इस पुस्तक में लेखकद्वय- डॉ. भोजराज द्विवेदी एवं पं. लेखराज द्विवेदी ने विशद विवेचन द्वारा भगवान शंकर की पूजा-रहस्यों का उद्घाटन किया है। शंकर संबंधी, मानव मस्तिष्क में उठने वाले प्रायः सभी प्रश्नों का समाधान, शास्त्रीय आधार पर देने का प्रयत्न किया गया है।

पृष्ठ : 169 **मूल्य :** 50.00

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूकम्प के ज्योतिषीय विश्लेषण का सारगर्भित अध्ययन

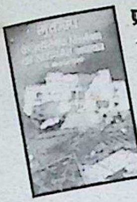

प्रस्तुत पुस्तक बहुत बारीकी से उन ज्योतिषीय विश्लेषणों का अध्ययन करती है, जिनसे ऐसी प्राकृतिक आपदाओं का न केवल अनुमान लगाया जा सकता है अपितु बचाव में सतर्क भी हुआ जा सकता है। दलाई लामा की भविष्यवाणी, वराहमिहिर द्वारा भूकंप के संदर्भ, विश्व के अनेक भूकंप त्रासदियों की कुंडलियां तथा सारगर्भित अध्ययन पुस्तक के मुख्य गुणों में से हैं।

पृष्ठ : 104 — *मूल्य : 40.00*

कॉमर्शियल वास्तु

'कॉमर्शियल वास्तु' वास्तुकला को लेकर लिखी गई पहली पुस्तक है जिसमें व्यावसायिक भूखंड, होटल, दुकान, फैक्ट्री, आंतरिक साज-सज्जा, भवन स्थापत्य कला पर विस्तृत चिंतन किया गया है। नई फैक्ट्री का प्रवेश द्वार किधर हो? फैक्ट्री में जल-स्थल कहां, किधर होना चाहिए? फैक्ट्री में अग्नि-स्पॉट कहां हो? व्यावसायिक भूखंड की आकृति कैसी होनी चाहिए? भू-परीक्षण के क्या-क्या शास्त्रीय विधान हैं? सही वास्तु के मुहूर्त कैसे देखे जाते हैं? वास्तु प्रतिष्ठा में क्या-क्या सामग्री चाहिए? इन सभी पहलुओं को पुस्तक में बहुत ही सुंदर, सरल भाषा में संवारा-संजोया गया है।

इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता यह है कि विना तोड़-फोड़ के वास्तु निराकरण हेतु सोलह प्रकार के सोलह गणपतियों का विधान भी दिया गया है।

पृष्ठ : 192 — *मूल्य : 120.00*

तंत्र शक्ति और साधना

`तंत्र' एक चमत्कारी, प्रत्यक्ष सिद्ध एवं रहस्यमय विद्या है, जिसने इसे जितना समझा, उसने उतना ही अलौकिक शक्ति के इस सानिध्य को पहचाना और प्राप्त किया। इस संसार में कई ऐसे लोग भी हैं जो तंत्र व टोटकों की हंसी उड़ाते हैं। पर वे भूल जाते हैं कि विश्वास तो सदैव अंधा ही होता है और वही सफलता देता है।

इस पुस्तक में तंत्र की विस्तृत परिभाषा, उसके भेद के पश्चात् तंत्रशास्त्र में पंचमकारों के सही रहस्य को समझाया गया है। प्राचीन ग्रंथों के सटीक उद्धरण से पुस्तक की प्रमाणिकता कई गुणा बढ़ गई है। पाठकों के लिए यह पुस्तक संग्रहणीय तथा उपयोगी है।

पृष्ठ : 206 — *मूल्य : 60.00*

ज्योतिष और विवाह योग

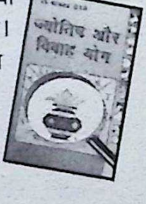

विवाह मानवीय जीवन की सवसे आवश्यक एवं विचित्र विडंबना है। जीवन या मरण, चिर-आनंद या चिरस्थाई दु:ख सभी कुछ विवाह की परिधि में आबद्ध है। विवाह वंशवृक्ष की वाटिका में प्रवेश करने का प्रथम सोपान है। मांगलिक दोष क्या है? प्रेम-विवाह, अंतर्जातीय विवाह, परंपरागत विवाह, कितने विवाह होंगे? दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा? इस प्रकार के 250 योगायोगों का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। भविष्य के गर्त में छिपी हुई इन सब रहस्यमय बातों का पता इस पुस्तक के अध्ययन से चल जाएगा।

पृष्ठ : 174 — *मूल्य : 40.00*

पांव तले भविष्य

क्या हाथ की रेखाओं की तरह पादतल या पांव की रेखाओं के माध्यम से मानव का भूत-भविष्य जाना जा सकता है? पादतल व पाद रेखाओं को लेकर अलग से कोई रचना, साहित्य या ग्रंथ अब तक प्रकाश में नहीं आया। प्रस्तुत पुस्तक `पांव तले भविष्य' के माध्यम से सभी प्राचीन मान्यताओं का नवीनीकरण किया गया है। ज्ञान का लोप न हो, इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए जनहितार्थ में इस पुस्तक को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है।

पृष्ठ : 188 — *मूल्य : 100.00*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष और राज योग

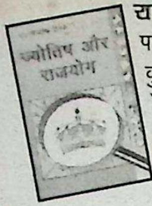

राजनेता, विधायक, सांसद, मन्त्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर व्यक्ति किन-किन योगों के कारण पहुंचाता है- इसके विवेचन भी उदाहरण कुण्डलियों सहित इस पुस्तक में पहली बार पाठकगण देख पाएंगे।

`जन्मान्तरकृत पापं व्याधिरूपेण बाधते।' पूर्व जन्म में किया गया पाप ही इस जन्म में कुष्ठ, क्षय, प्रमेय, अतिसार एवं भगंदर जैसे रोगों के रूप में प्रकट होता है। इस पुस्तक में ऐसे अनेक रोगों के कारण और निवारण पर चर्चा की गई है।

पृष्ठ : 159

ज्योतिष और रोग विचार

आज का आधुनिकतम विज्ञान व्यक्ति के बीमार होने के बाद ही उसकी बीमारी का पता लगा पाता है। स्वस्थ व्यक्ति में छिपी हुई प्रच्छन्न बीमारी कब प्रकट होगी? क्यों होगी? किन परिस्थितियों में, किन कारणों से व्यक्ति की मृत्यु होगी? इसके पूर्वानुमान का परिमापन न तो आयुर्वेद के पास है, न ही एलोपैथी के पास है। संसार के किसी भी चिकित्सा विज्ञान के पास इसका कोई जवाब नहीं है क्योंकि उन सभी का ज्ञान एवं चिंतन एकाकी है। मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण पर आधारित है। यह ज्योतिष किसी भी प्रकार के रोग के उत्पत्ति के तीन कारण मानता है- 1. संचित 2. प्रारब्ध 3. क्रियमाण।

पृष्ठ : *मूल्य : 40.00*

ज्योतिष और आयुष्य योग

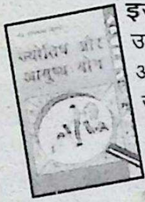

इस पुस्तक के पढ़ने मात्र से आप संसार भर के प्राणियों के जीवन के बारे में, उनकी आयु के बारे में यथा-परमायु, चिरायु, दीर्घायु, उत्तम आयु, मध्यम आयु, अल्पायु, बालारिष्ट, सद्यःमृत्यु योग इत्यादि अनेक रहस्यपूर्ण तथ्यों को न केवल जान पाएंगे अपितु उसकी निवृत्ति हेतु शास्त्रीय उपायों के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इतना ही नहीं, अलग-अलग लग्नों के मारकेश निर्णय, मृत्यु के कारण पर प्रामाणिक जानकारी भी प्रैक्टिकल उदाहरणों सहित पुस्तक में प्रस्तुत की गई है।

पृष्ठ : 139 *मूल्य : 40.00*

अपनी जन्मपत्रिका आप बनाएं

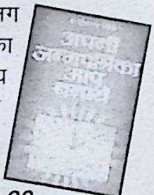

इस पुस्तक में षोडशवर्गी जन्मपत्रिका के निर्माण की सम्पूर्ण विधि अलग-अलग अध्यायों के माध्यम से समझाई गई है। पंचांग की सहायता से जन्म-पत्रिका बनाने की विधि, एफेमेरिज की सहायता से जन्मपत्री बनाने की विधि, सूर्योदय व सूर्यास्त से जन्म-पत्रिका बनाने की विधि, दिनमान से जन्म-पत्री बनाने की विधि, साम्पत्ति काल से जन्मपत्री बनाने की विधि, कच्ची गणित द्वारा स्पष्ट करके उदाहरण कुण्डलियों सहित समझाई गई है।

पृष्ठ : 223 *मूल्य : 30.00*

सम्पूर्ण श्री महालक्ष्मी पूजन एवं दीपोत्सव श्राद्ध

दीपावली क्यों मनानी चाहिए इसके शास्त्रीय पक्ष एवं आध्यात्मिक पक्ष पर पहली बार चिन्तन इस पुस्तक के विद्वान लेखक ने प्रबुद्ध पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है। श्री महालक्ष्मी, श्री महाकाली एवं श्री महासरस्वती पूजन की सांगापाङ्गविधि सहित सम्पूर्णतया पूजन के बारे में कोई शास्त्रीय पुस्तक बाजार में उपलब्ध है।

पृष्ठ : 80 *मूल्य : 25.00*

डायमंड पाकेट बुक्स

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020
पुस्तकें V.P.P. से मंगवाएं, तीन पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री। डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/-
फोन : 011-8611861-865 फैक्स : 011-8611866.
E-mail : mverma@nde.vsnl.net.in Website : www.diamondpocketbooks.com

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये चार पुस्तकें बदल देंगी आपका जीवन सदा के लिए

जीरो आयल
साउथ इंडियन कुक बुक

डॉ. विमल छाजेड़, एम.डी.

अब आप रोक सकते हैं
मधुमेह, तनाव और मोटापे
को बिना तेल घी के
स्वादिष्ट खाना बनाकर

- जीरो ऑयल साउथ इंडियन
- कुक बुक.................... 95.00
  जीरो ऑयल कुक बुक...95.00
- जीरो ऑयल 151 नाश्ते
  (नमकीन).................... 95.00
- जीरो ऑयल मिठाइयां..... 95.00

Available in English also
Rs 150/-

मा प्रेम उषा
भविष्यफल 2004 टैरो कार्ड पर आधारित

कैसा होगा आपका भविष्य 2004 मे बता रहीं हैं
विश्व प्रसिद्ध टैरो कार्ड विशेषज्ञ
मा प्रेम उषा/मा प्रेम ऋतंभरा

12 राशियां अलग–अलग।
अपनी राशि मंगवाने के लिए
25/– का डाक टिकट भेजकर
घर बैठे प्राप्त करें

Available in English also
Rs 35/-

कामयाबी कैसे
स्वाति-शैलेश लोढ़ा

हजारों पाठक इसे पढ़कर
लाभ उठा चुके हैं।
अब आपकी बारी है।

ओशो - कृष्ण वाणी

- ❑ कृष्ण : जिज्ञासा, खोज, उपलब्धि........60.00
- ❑ कृष्ण साधना रहित सिद्धि...............60.00
- ❑ कृष्ण और हंसता हुआ धर्म.............60.00
- ❑ कृष्ण गुरु भी सखा भी 60.00
- ❑ साक्षी कृष्ण और रासलीला 60.00

Available in English Rs.195/- & Bengali Rs 150/- each

Rs.150/-

पुस्तकें VPP से मंगवाने पर डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/– तीन पुस्तक एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री

फ्यूजन बुक्स

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020
फोन: 011-51611861-865, 26386289, फैक्स: 011-51611866, 26386124
ई-मेल: manish@diamondpublication.com

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परंतु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति गंध रहित पुष्प के समान है। कई बार विद्वान व्यक्ति, व्यावसायिक पंडित जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिखकर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंक विद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-मंत्र-तंत्र विज्ञान, कर्म कांड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में इनकी 3,000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

डायमंड बुक्स

ISBN : 81-288-0561-4
9788128805615
Rs. 95.00
A.H.W. Sameer Series

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu Nepal